यज्ञ

अंक-10 वर्ष-2017

उत्कृष्टता के १० अंक

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान
(मानित विश्वविद्यालय)
नई दिल्ली

झलकियाँ

2016-17

eiitf
IIFT
eiitf
IIFT

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान
53rd FOUNDATION DAY

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान
50th CONVOCATION

हिंदी

SANJIV MEHTA
MANAGING DIRECTOR & CEO

निदेशक की कलम से

प्रिय साथियों,

भारत के बिजनेस स्कूलों में अग्रणी भारतीय विदेश व्यापार संस्थान की वार्षिक हिंदी गृह–पत्रिका "यज्ञ" के अंक–10 के माध्यम से आप सभी समर्पित पाठकों व हिंदी प्रेमियों को संबोधित करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। यह पत्रिका हमारे प्रतिष्ठित संस्थान की राजभाषा हिंदी और अन्य गतिविधियों का दर्पण है। इसके नए अंक के प्रकाशन की अब सभी को प्रतीक्षा रहती है।

"यज्ञ" पत्रिका का प्रकाशन संस्थान को सौंपे गए दायित्वों में से एक है। पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य न केवल अपने शासकीय दायित्व का निर्वाह करना है वरन् इसके माध्यम से संस्थान के छात्रों, संकाय सदस्यों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों की लेखन प्रतिभा को सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना है। हमारा यह प्रयास रहेगा कि "यज्ञ" पत्रिका का प्रकाशन निरंतर होता रहे और हमारे संस्थान के भावी लेखकों का हमें इसी प्रकार सहयोग प्राप्त होता रहे।

मैं गृह–पत्रिका "यज्ञ" के इस संकलन के सफल प्रकाशन से जुड़े संस्थान के हिंदी कक्ष एवं संपादन टीम को बधाई देता हूँ। साथ ही पत्रिका में लेखन एवं अन्य सामग्रियों के माध्यम से योगदान करने वाले संस्थान के सभी सदस्यों को भी बधाई देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में भी संस्थान में ऐसे प्रयास जारी रहेंगे।

मेरी सभी पाठकों को चैत्र नवरात्रे–2017 एवं भारतीय नववर्ष विक्रमी संवत् 2074 की हार्दिक शुभकामनाएँ।

शुभकामनाएँ।

अजय भल्ला

(अजय कुमार भल्ला)

संदेश

यह मेरे लिए अत्यंत हर्ष का विषय है कि भारतीय विदेश व्यापार संस्थान अपनी गृह–पत्रिका "यज्ञ" वर्ष 2017 के अंक–10 का प्रकाशन करने जा रहा है। संस्थान में पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा कार्यों के कार्यान्वयन में एक साक्ष्य स्वरूप दस्तावेज है। संस्थान के सभी स्तर के सदस्यों व छात्रों द्वारा पत्रिका में प्रस्तुत लेख, आलेख, कहानियां, कविताएं एवं संस्मरण आदि एक श्रेष्ठ संकलन का प्रतीक हैं।

शैक्षणिक गतिविधियों के उत्कृष्ट निष्पादन के साथ–साथ, संघ सरकार की राजभाषा नीतियों का सतत् अनुपालन, अन्य शैक्षणिक संस्थाओं के लिए एक प्रेरणा स्रोत है। संस्थान ने राजभाषा कार्यों के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए समय–समय पर माननीय राष्ट्रपति, भारत सरकार द्वारा प्रदान किए गए राजभाषा पुरस्कारों की पात्रता को सर्वदा सिद्ध किया है। मुझे आशा है कि संस्थान भविष्य में इस स्तर को और ऊंचाइयों तक ले जाएगा।

हार्दिक शुभकामनाएं।

(अशोक कुमार)
संयुक्त सचिव
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

संदेश

यह मेरे लिए अत्यंत प्रसन्नता का अवसर है कि भारतीय विदेश व्यापार संस्थान की हिंदी गृह–पत्रिका "यज्ञ" का 10वाँ अंक प्रकाशित किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के संबंध में किए जा रहे विभिन्न प्रयासों के लिए संस्थान के सभी सदस्य प्रशंसा और बधाई के पात्र हैं।

भारत के संविधान में हिंदी भाषा को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है। तदनुसार, केंद्र सरकार द्वारा अपने मंत्रालयों और अन्य कार्यालयों के लिए हिंदी के प्रयोग के संबंध में अधिनियम एवं नियम बनाए गए हैं। संवैधानिक दायित्व के साथ–साथ, हिंदी हमारी भाषाई और सांस्कृतिक एकता की भी परिचायक है। अतः हमारा संवैधानिक और नैतिक कर्तव्य है कि हम हिंदी का प्रयोग स्वयं करें और दूसरों को भी हिंदी के प्रयोग एवं प्रचार–प्रसार के लिए प्रोत्साहित करें।

मैं संस्थान की गृह–पत्रिका "यज्ञ" के सतत् सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल एवं इसके लेखकों को बधाई देता हूँ। साथ ही आशा करता हूँ कि यह पत्रिका अपनी रोचकता, ज्ञानवर्धक सामग्री और सजावट की विशेषताओं के फलस्वरूप सदैव पाठकों को इसी प्रकार आकर्षित करती रहेगी ।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

प्रमोद गुप्ता

(डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता)
कुलसचिव

संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि हमारे भारतीय विदेश व्यापार संस्थान के सदस्य हिंदी भाषा में प्रकाशित गृह–पत्रिका "यज्ञ" के माध्यम से विभिन्न क्रिया–कलापों का आयोजन कर अपने समाज और संस्कृति के विकास के लिए प्रयासरत हैं। पत्रिका के माध्यम से हम संस्थान की वार्षिक गतिविधियों का लेखा–जोखा प्राप्त कर उससे जुड़ाव अनुभव करते हैं।

उदारीकरण, भूमंडलीकरण और उपभोक्तावाद के इस वर्तमान युग में उद्योग और व्यापार को बढ़ावा देने के लिए चारों तरफ प्रतिस्पर्धा का वातावरण बना हुआ है। ऐसे वातावरण में जो भाषा विश्व स्तर पर अपनी उपयोगिता और व्यापकता को सिद्ध करने में समर्थ होगी, वही अपना स्थान सुनिश्चित करेगी। हिंदी भारतीय जन–जीवन एवं संस्कृति के साथ–साथ व्यापार–वाणिज्य के माध्यम की भी भाषा है। भाषा वैज्ञानिकों की मानें तो भविष्य में अंतरराष्ट्रीय महत्व की भाषाओं में हिंदी विश्व भाषा का स्थान ग्रहण कर सकती है। अतः हमारा कर्तव्य है कि हिंदी को स्वीकार कर उसका दैनिक जीवन में उपयोग करें।

गृह–पत्रिका "यज्ञ" सुन्दर साज–सज्जा, उपयोगी लेखों और संस्थान की गतिविधियों की जानकारी के साथ लगातार प्रकाशित हो रही है। इसके लिए संस्थान के सदस्यों का महत्वपूर्ण योगदान तथा हिंदी कक्ष का अथक प्रयास है जिसके लिए मैं आप सभी को बधाई देता हूँ।

हार्दिक शुभकामनाएँ।

(डॉ. के. रंगराजन)
अध्यक्ष,
कोलकाता परिसर

संपादकीय

प्रिय साथियों,

सादर अभिवादन !
यह हमारे लिए अत्यन्त प्रसन्नता एवं गर्व की बात है कि भारतीय विदेश व्यापार संस्थान अग्रणी बिजनेस स्कूलों में अपना स्थान निरंतर बनाए रखने के साथ ही अपने दायित्वों के अनुरुप केंद्र सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में भी अग्रसर है। इस कड़ी में हमारी गृह–पत्रिका "यज्ञ" का अंक–10 वर्ष 2017 का हिंदी प्रकाशन एक संक्षिप्त परिचय है। इस पूरे प्रकल्प के पीछे संस्थान के प्रतिभाशाली एवं लेखन में रूचि रखने वाले सदस्य ही हमारा संसाधन हैं।

संस्थान ने अपने 53 वर्षों के दौरान शैक्षणिक संस्थाओं की दौड़ में अपनी उत्कृष्टता को बनाए रखने के लिए अपनी गतिविधियों के अंतर्गत अनेक नए आयामों का सृजन किया है तथा राष्ट्र के निर्माण में अपने योगदान को निर्बाध रूप से जारी रखा है जिसकी झलक संस्थान की गतिविधियों व उपलब्धियों के रूप में देखी जा सकती है।

किसी भी शैक्षणिक संस्थान के अल्युमनाई एवं विद्यार्थी भी उस संस्थान को उच्च शिखर पर ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आईआईएफटी की मीडिया समिति ने विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर लगातार सहायता प्रदान करने के अलावा, आगामी बैच के लिए विभिन्न महानगरों में सिटी चैप्टर मीट का आयोजन किया। इसी के साथ ही संस्थान के छात्रों द्वारा व्यापार संबंधी विषयों पर संगोष्ठियों का आयोजन तथा भाईचारे व सामाजिक जागृति को ध्यान में रखते हुए बिग फाइट, यूडब्लूएल, मैराथन, क्वॉ वैडिस ट्रेजर हंट आदि के अंतर्गत बहुत से कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। ग्रांड अल्युमनाई रीयूनियन 2016 का आयोजन 19 नवम्बर को किया गया जिसमें 700 अतिथियों ने भाग लिया। आईआईएफटी के विद्यार्थियों ने 26 नवम्बर 2016 को रक्तदान शिविर के आयोजन के द्वारा समाज के प्रति अपने दायित्वों का परिचय देने का प्रयास किया गया।

संस्थान नें भारत सरकार द्वारा समय–समय पर राष्ट्रीय कार्यक्रमों के लिए दिए गए दिशा–निर्देशों का अनुपालन करते हुए आतंकवाद–विरोधी दिवस, योग दिवस, सद्भावना दिवस, स्वच्छता दिवस आदि को विशेष महत्व दिया है तथा इन्हें सार्थक व सफल बनाने के लिए सभी प्रयास किए गए हैं।

''यज्ञ'' पत्रिका में संस्थान के सभी संवर्गों के सदस्यों ने मौलिक लेख, कहानी, कविता, विचार तथा अनुभव आदि को कलमबद्ध कर अपने योगदान की आहुति देकर समन्वयता एवं लेखन में रूचि का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है। संस्थान के सदस्यों ने अपने विचार तथा संबंधित क्षेत्र विशेष की सूचना जैसे – स्थितप्रज्ञ कैसे बनें, विषय मनुष्य की श्रेष्ठता का गुण है जो जीवन को सार्थक बनाता है, वाह रे इंसान तेरी माया, कोई समझ नहीं पाया, लेख में कलियुगी मनुष्यों की भिन्न–भिन्न प्रकृतियों को दर्शाने का अच्छा प्रयास किया गया है। हमारा लाइफस्टाइल – हरी, करी और वरी, संस्मरण, लेखन की एक ऐसी विधा है जो बीते हुए कल के छाया चित्र में प्रवेश कराता है और हमें सोचने के लिए विवश कर देता है। अहंकार, कविता के माध्यम से लेखक ने अहंकार के वशीभूत मनुष्य से चोट खाकर अपने दर्द को कम करने का प्रयास किया है, माँ का बच्चों के नाम पत्र, आलेख में माँ के रूप में एक गुरू की भूमिका का निर्वहन किया गया है। इसी प्रकार विमुद्रीकरण, अनुवादक का महत्व और सोशल मीडिया एवं हिंदी साहित्य के माध्यम से सरकारों द्वारा लिए गए निर्णयों के प्रभाव और उससे जुड़े व्यक्तियों की भूमिका से अवगत कराया गया है।

जीवन के अनुभव, उसके व्यावहारिक पक्ष तथा जीने की कला को सामने रखते हुए लेख जैसे सार्वजनिक परिवहन में मुस्कान एवं वार्तालाप, लौट पीछे की तरफ ए इन्सान और जीवन दर्शन तथा आध्यात्म संबंधी लेख जैसे मूर्ति पूजा सही या गलत, जीवन क्या है, सकारात्मकता बनाम नकारात्मकता तथा असमानता को दूर भगाएं आदि जहाँ जीवन के भिन्न–भिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हैं वहीं पितृ दिवस संबंधी लेख आधुनिक भारतीय समाज के नए आयोजनों के बारे में अवगत कराते हैं।

'जानें, क्या है घरेलू हिंसा अधिनियम' के माध्यम से हमें गृहिणियों के प्रति हो रही घरेलू हिंसा को रोकने के लिए बनाए गए कानून की जानकारी मिलती है। एक ओर जहाँ कविता, दोहे और शेरो–शायरी पढ़कर मन आनंदित होता है वहीं दूसरी ओर उनसे एक सबक और ज्ञान भी प्राप्त होता है। संस्थान सदस्यों ने इन्हीं विधाओं के माध्यम से अपना संदेश पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास किया है, जिनमें अहंकार, खुशहाल गृहस्थी के नियम, जिन्दगी आदि शामिल हैं। हाल में हुए विमुद्रीकरण का महत्व और इसका हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा, इसे 'विमुद्रीकरण' शीर्षक कविता के माध्यम से व्यक्त किया गया है।

इसके अतिरिक्त, संस्थान में राजभाषा के कार्यकलापों का संक्षिप्त विवरण दिया गया है जो राष्ट्र के प्रति हमारी वचनबद्धता का द्योतक है। राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के प्रति वार्षिकांक की प्रतिबद्धता के अनुरूप राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा समय–समय पर जारी राजभाषा संबंधी विवरण इस अंक में शामिल किया जा रहा है। हमारी लगातार कोशिश रही है कि हम अपने काम में निरंतर सुधार करते रहें और हमारी नजरें हमारे लक्ष्य पर टिकी रहें। राजभाषा के प्रयोग का कार्य एक संगठित प्रयत्न है। संस्थान ने राजभाषा के प्रोत्साहन के लिए जो काम किए हैं उसके साक्षी हैं, वाणिज्य मंत्रालय से राजभाषा के उल्लेखनीय कार्यों के लिए मिली शील्ड व भारत के महामहिम राष्ट्रपति से लगातार हमें मिले सम्मान और पुरस्कार।

सभी से विनम्र अनुरोध है कि गृह–पत्रिका "यज्ञ" के अंक–10 के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया–सुझावों से हमें मौखिक/लिखित रूप में निःसंकोच अवगत कराएं ताकि हम उनके आधार पर अगले अंक को और अधिक उपयोगी और पठनीय बना सकें।

धन्यवाद।

राजेन्द्र

(राजेन्द्र प्रसाद)
हिंदी अधिकारी

यज्ञ

अंक–10 वर्ष–2017

संरक्षक
श्री अजय कुमार भल्ला (आई.ए.एस.)
निदेशक

संपादकीय मंडल
डॉ. रामसिंह
देशराज
प्रदीप कुमार खन्ना
राजेन्द्र प्रसाद

सहयोग
समस्त आई.आई.एफ.टी परिवार

प्रकाशक

हिंदी कक्ष
भारतीय विदेश व्यापार संस्थान
बी–21, कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया
नई दिल्ली–110016

पत्रिका में प्रकाशित लेखों और रचनाओं में अभिव्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं। हिंदी कक्ष का उनसे सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

विषय-सूची

अंक-10 वर्ष - 2017

क्रमांक	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1.	निदेशक की कलम से	निदेशक, आईआईएफटी	01
2.	संदेश	संयुक्त सचिव, वाणिज्य मंत्रालय	02
3.	संदेश	कुलसचिव	03
4.	संदेश	अध्यक्ष, कोलकाता परिसर	04
5.	संपादकीय	हिंदी अधिकारी	05
6.	संस्थान की गतिविधियां		09
7.	संस्थान की उपलब्धियां		17
8.	राष्ट्रीय कार्यक्रम		24
9.	छात्र गतिविधियां		27
10.	छात्र उपलब्धियां		30
11.	निर्यात बंधु सफलता के	डॉ. विजया कट्टी	34
12.	स्थित प्रज्ञ कैसे बनें	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा	36
13.	वाह रे इंसान तेरी माया	देशराज	37
14.	हमारा लाइफस्टाइल	प्रदीप कुमार खन्ना	39
15.	संस्मरण	एस. बालासुब्रमणियन	40
16.	अहंकार	भुवन चन्द्र	41
17.	सार्वजनिक परिवहन में	हरि माया गुरूंग	42
18.	ऊर्जा व्यवहार और	विवेक कुमार दीक्षित	43
19.	छवि तुम्हारी	अतुल कुमार	45
20.	राजभाषा हिंदी के प्रचार	आर. एस. पटवाल	46
21.	सफल जीवन के लिए	राकेश कुमार ओझा	48
22.	सकारात्मक बनाम नकारात्मक	रामसिंह मीना	49
23.	खुशहाल गृहस्थी के नियम	राकेश जोशी	50
24.	विमुद्रीकरण	श्वेता झा	50
25.	डिजिटल इंडिया	अतुल कुमार	52
26.	लिम्फ इडीमा	नेहा विनायक	54
27.	पितृ दिवस	सतपाल सिंह	56
28.	जानें, क्या है घरेलू हिंसा	सुशील रानी	57

क्रमांक	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
29.	मूर्ति पूजा सही या गलत?	बरूण भट्टाचार्जी	59
30.	माँ का बच्चों के नाम पत्र	अमिता आनंद	60
31.	जीवन क्या है?	सपना आहूजा	61
32.	जिन्दगी	शकुन्तला अरोड़ा	62
33.	सोशल मीडिया एवं	राजेन्द्र प्रसाद	63
34.	अलहड़ बचपन	मोनिका सैनी	64
35.	असमानता को दूर भगाएं	सत्ते सिंह	65
36.	गलती का अहसास	कंवर सिंह	66
37.	शायरी	कंवर सिंह	66
38.	लौट पीछे की तरफ ए इंसान	राज रानी	67
39.	संस्थान में राजभाषा हिंदी		68
40.	संस्थान में हिंदी सप्ताह		72
41.	सेवानिवृत्ति पर संस्थान		76
42.	श्रद्धांजलि		77
43.	राजभाषा नियम		78
44.	वि.रा.भा.का. समिति सदस्य		80

संस्थान की गतिविधियां

भारत के विदेश व्यापार को बढ़ाने के लिए पं. जवाहरलाल नेहरू की परिकल्पना को मूर्तरूप देने के उद्देश्य से एक संस्थान के रूप में 2 मई 1963 को भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी) की स्थापना की गई थी, जिसके मुख्य कार्यकलाप में विदेश व्यापार संबंधी अनुसंधान और प्रशिक्षण पर बल देना शामिल था। प्रारंभ से ही संस्थान में बड़े परिवर्तन हुए और पिछले वर्षों के दौरान इसकी शैक्षणिक गतिविधियों के क्षेत्र एवं आयाम का विस्तार हुआ है जिसके अंतर्गत अब अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय का पूरा क्षेत्र शामिल है। आज 54वें वर्ष में संस्थान को इसके ज्ञान और संसाधन तथा देश और विदेश में एक मजबूत अल्युमनाई नेटवर्क के लिए जाना जाता है।

आईआईएफटी जैसा कोई संगठन अपने अंदर से विकास करता है, परंतु केवल अपने परिवेश से दृढ़ समर्थन प्राप्त करने के उपरांत। आस–पास की गतिविधियों द्वारा दी गई अधिकाधिक कठिन चुनौतियों का सामना करने के लिए और अधिक प्रयास किए गए हैं। विदेश व्यापार क्षेत्रक की विकासशील विशेषता सदैव सतत् रूप से नए अवसर और चुनौतियाँ प्रस्तुत करती है जिन्हें संस्थान अपने ही ढंग से अपने कार्यकलापों के क्षेत्र का पुनः सीमांकन करके दूर करने का प्रयास करता है।

अंतरराष्ट्रीय व्यापार में शिक्षा, अनुसंधान और सहयोग को प्रोत्साहित और उसमें वृद्धि करने के लिए आईआईएफटी में इस समय निम्नलिखित विभाग और केंद्र हैं:–

संस्थान के विभिन्न विभाग व केंद्रः

अंतरराष्ट्रीय परियोजना विभाग (आईपीडी) – यह अल्पकालिक और दीर्घकालिक दोनों प्रकार के प्रशिक्षण और अनुसंधान कार्यक्रम आयोजित करके अफ्रीका में अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय के विभिन्न पहलुओं में क्षमताओं का विकास करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

वर्ष 2016–2017 के दौरान, 02 मई 2016 को अंतरराष्ट्रीय परियोजना विभाग द्वारा आईएफएम तंजानिया के साथ चलाए जा रहे एमबीए (आईबी) के 15वें बैच का उद्घाटन किया गया। इस कार्यक्रम में 29 अभ्यर्थियों ने अपना पंजीकरण कराया। 28 सितम्बर 2016 को एमबीए (आईबी) 2014–16 कार्यक्रम बैच का दीक्षांत समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर संस्थान की ओर से चेयरपर्सन (आईपीडी) डॉ. सतिन्द्र भाटिया की उपस्थिति में तंजानिया में भारत के उच्चायुक्त माननीय श्री संदीप आर्या द्वारा 18 छात्रों को एमबीए (आईबी) डिग्री प्रदान की गई।

आईएफएम दीक्षांत समारोह में संस्थान की चेयरपर्सन (आईपीडी) डॉ. सतिन्द्र भाटिया व तंजानिया में भारत के उच्चायुक्त माननीय श्री संदीप आर्या (28 सितम्बर 2016)।

प्रबंधन विकास कार्यक्रम विभाग (एमडीपी) – यह विभाग अंतरराष्ट्रीय व्यापार, अंतरराष्ट्रीय विपणन, वित्त, निर्यात–आयात प्रबंधन, नीतिगत प्रबंधन, मानव संसाधन, आईटी और सॉफ्टवेयर प्रबंधन, कॉरपोरेट सामाजिक दायित्व (सीएसआर), ई–शासन, विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईजेड), डॉलर–रुपए का मूल्यांकन आदि के क्षेत्र में सरकारी/पीएसयू, कॉरपोरेटों और निजी क्षेत्र के अधिकारियों/कार्यपालकों के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है।

जहां तक केंद्रीय सेवाओं के अधिकारियों के लिए कार्यक्रमों का संबंध है एमडीपी विभाग, आईएएस तथा अन्य अखिल भारतीय सेवा अधिकारियों, जैसे कि भारतीय वन सेवा और भारतीय पुलिस सेवा के लिए बहुत से सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है। आईआईएफटी, भारतीय व्यापार सेवा परिवीक्षार्थियों के लिए 9 मास का आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए एक नोडल संस्थान है। इसके अतिरिक्त, संस्थान भारतीय राजस्व सेवा, भारतीय विदेश सेवा, भारतीय आर्थिक सेवा, भारतीय सांख्यिकीय सेवा आदि के अधिकारी–प्रशिक्षार्थियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है। एमडीपी विभाग कार्यरत कार्यपालकों के लिए बहुत से ऑनलाइन डिप्लोमा और प्रमाण–पत्र कार्यक्रम भी संचालित करता है।

विभाग कार्यरत कार्यपालकों के लिए हाईब्रिड पद्धति के माध्यम से निम्नलिखित डिप्लोमा व प्रमाण–पत्र कार्यक्रम भी आयोजित करता है:–

- अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय में कार्यपालक स्नातकोत्तर डिप्लोमा (वीसेट)।
- अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय रणनीति में कार्यपालक स्नातकोत्तर डिप्लोमा।
- व्यवसाय प्रबंधन में स्नातकोत्तर प्रमाण–पत्र कार्यक्रम।
- निर्यात एवं आयात प्रबंधन में प्रमाण–पत्र कार्यक्रम।

संस्थान में 6–24 मार्च 2017 के दौरान डीजीएफटी अधिकारियों के लिए अंतरराष्ट्रीय व्यापार एवं प्रबंधन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

डीजीएफटी अधिकारियों के साथ संस्थान के निदेशक श्री अजय कुमार भल्ला व चेयरपर्सन (एमडीपी) डॉ. विजया कट्टी ।

निर्यात बंधु कार्यक्रम – एमडीपी विभाग भारत सरकार की निर्यात बंधु योजना के अंतर्गत देश भर के निर्यातकों व उद्यमियों के लिए 'निर्यात–आयात पर ऑनलाइन प्रमाण–पत्र कार्यक्रमों' की एक श्रृंखला भी संचालित करता है। संस्थान की चेयरपर्सन (एमडीपी) डॉ. विजया कट्टी, संकाय सदस्यों व कंप्यूटर सेंटर से सहायक प्रणाली प्रबंधक श्री एस. बालासुब्रमणियन के अथक प्रयासों से इस कार्यक्रम के अंतर्गत अभी तक 15 बैचों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

तत्कालीन डीजीएफटी डॉ. अनूप वधावन, निर्यात–आयात पर ऑनलाइन कार्यक्रम के सहभागियों को प्रमाण–पत्र प्रदान करते हुए।

अंतरराष्ट्रीय सहयोग और क्षमता विकास (आईसीसीडी) – विभाग देशज और अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों/संस्थानों के साथ शैक्षिक गठबंधन कायम करके संस्थान में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे कि संयुक्त प्रशिक्षण और अनुसंधान कार्यक्रम आयोजित किए जा सकें। छात्र और संकाय आदान–प्रदान इन संस्थानों के साथ शैक्षिक सहयोग का एक अभिन्न अंग है।

आईसीसीडी विभाग ने विद्यमान संस्थानों के साथ अपने कार्यकलापों को मजबूत बनाना और प्रमुख संस्थानों के साथ नई व्यवस्था कायम रखना जारी रखा है। संस्थान, विख्यात देशज और अंतरराष्ट्रीय संस्थानों की सदस्यता प्राप्त करके शैक्षिक सहयोग को और मजबूत बनाता है।

आईसीसीडी विभाग ने, अंतरराष्ट्रीय छात्रों और कार्यपालकों के लिए "भारत के साथ व्यापार करना" पर प्रथागत कार्यक्रम आयोजित किए तथा उन विदेशी प्रतिनिधि मंडलों, शिक्षाविदों और विभिन्न देशों से नीति निर्माताओं के लिए अन्योन्यक्रिया सूचना–सत्र आयोजित किए जिन्होंने संस्थान का दौरा किया। विभाग राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों और सम्मेलनों में संकाय की भागीदारी को भी सुविधाजनक बनाता है।

हाल ही में 27 अक्तूबर 2016 को संस्थान के आईआईसीडी विभाग ने फ्लोरिडा अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, मियामी, फ्लोरिडा, अमेरिका के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इस समझौते का उद्देश्य अध्ययन अनुभव व समुद्रपार की परंपराओं को समझने के लिए छात्र, संकाय और अनुसंधानकर्ताओं के बीच आदान–प्रदान तथा सहयोग करना है।

फ्लोरिडा अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय से डॉ. आईलीन पिकोक व संस्थान के तत्कालीन निदेशक डॉ. सुरजित मित्रा समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करते हुए।

स्नातक अध्ययन विभाग (जीएसडी) – आईआईएफटी के जीएसडी विभाग द्वारा चलाए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में दो वर्षीय पूर्णकालिक एमबीए (अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय) कार्यक्रम एक मुख्य डिग्री कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम को अत्यधिक समर्थन प्राप्त हुआ है जिसके परिणामस्वरूप वर्ष 2016 में इस कार्यक्रम की 350 सीटों के लिए 51,500 से अधिक आवेदकों ने आवेदन किया। कार्यक्रम में प्रवेश के लिए संस्थान द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर परीक्षा आयोजित की जाती है।

इसके अतिरिक्त, 2 वर्ष 6 माह का एमबीए सप्ताहान्त डिग्री कार्यक्रम भी चलाया जाता है जिसे विशुद्ध रूप से कार्यपालकों को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया है। साथ ही जीएसडी विभाग को निम्न तीन कार्यपालक स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम व प्रमाण–पत्र कार्यक्रम आदि के लिए प्रवेश प्रक्रियाएं आयोजित करने का काम सौंपा गया है।

गत वर्षों से ये सभी कार्यक्रम जीएसडी विभाग की अध्यक्षा डॉ. सुनीथा राजू व श्री गौरव गुलाटी, उप–कुलसचिव की देख–रेख में सुचारू रूप से संचालित किए जा रहे हैं।

- अंतरराष्ट्रीय बिजनेस में कार्यपालक स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम।
- अंतरराष्ट्रीय विपणन में कार्यपालक स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम।
- वित्त में कार्यपालक स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम।
- पूंजी एवं वित्तीय बाजार में प्रमाण–पत्र कार्यक्रम।
- विश्व व्यापार लॉजिस्टिक्स एवं परिचालन में प्रमाण–पत्र कार्यक्रम।

एमबीए (आईबी) 2016–18 बैच के उद्घाटन का दृश्य

अनुसंधान विभाग – संस्थान के विकास में इसके अनुसंधान विभाग का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि यह ज्ञान के सृजन और प्रशिक्षण के बीच एक मजबूत इंटरफेस प्रदान करता है। इसने अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय परिदृश्य का विश्लेषण करने और उपयुक्त कॉरपोरेट कार्यनीतियां विकसित करने के लिए पर्याप्त परामर्श क्षमता विकसित की है। संस्थान, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दोनों प्रकार की परियोजनाओं के लिए सफलतापूर्वक बोली लगाता है। वर्ष 2016 के दौरान विभाग द्वारा निम्न अनुसंधान परियोजनाएं आयोजित की गईः–

- उत्पाद निर्यातकों के लिए कॉइर के अभाव में कॉइर निर्यात निरंतरता पर अध्ययन।
- महाराष्ट्र के लिए निर्यात रणनीति का विकास पर अध्ययन।
- रसायन एवं पेट्रोरसायन के क्षेत्र पर एफटीए का प्रभाव पर अध्ययन।
- भारत पर डब्ल्यूपी29 का व्यापार प्रभाव पर अध्ययन।
- मध्य प्रदेश के लिए निर्यात संवर्धन रणनीति का विकास पर अध्ययन।

पीएचडी कार्यक्रम – अनुसंधान विभाग द्वारा गत वर्षों से पीएचडी कार्यक्रम प्रारंभ किया गया था जो वर्ष–दर–वर्ष अत्यंत लोकप्रिय होता जा रहा है। इसी क्रम में, 28 जुलाई 2016 को पीएचडी कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया तथा लिखित परीक्षा एवं समूह चर्चा सहित साक्षात्कार के आधार पर कुल 15 अभ्यर्थियों को प्रवेश दिया गया। वर्ष 2016 में संस्थान के दीक्षांत समारोह के अवसर पर पीएचडी कार्यक्रम के 9 छात्रों को डिग्री प्रदान की गई।

पीएचडी कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह के अवसर पर संस्थान के प्रोफेसर एवं अनुसंधान विभाग के अध्यक्ष डॉ. राकेश मोहन जोशी ।

डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र – संस्थान में इस केंद्र की स्थापना वर्ष 1999 में की गई थी जिसका उद्देश्य डब्ल्यूटीओ बातचीत–सम्बद्ध ज्ञान और प्रलेखन के एक स्थाई संग्रहस्थल के अतिरिक्त सामान्यतः व्यापार में और विशेष रूप से डब्ल्यूटीओ में एक अनुसंधान यूनिट के रूप में कार्य करना है। इससे भारत सरकार द्वारा नियमित रूप से अनुसंधान आयोजित करने और स्वतंत्र विश्लेषणात्मक इनपुट उपलब्ध कराने के लिए कहा जाता है जिससे कि उसे डब्ल्यूटीओ व अन्य फोरमों पर, जैसे कि ''मुक्त और प्राथमिकतापूर्ण व्यापार करार (एफटीए/पीटीए)'' और विस्तृत आर्थिक सहयोग करार (सीईसीए) में व्यापार बातचीत में अपनी स्थिति अपनाने में मदद मिल सके।

इसके अतिरिक्त, केंद्र, बहुत से समारोह आयोजित करके अपने आउटरीच और क्षमता निर्माण कार्यक्रमों के माध्यम से उद्योग और सरकारी इकाइयों और साथ ही अन्य साझीदारों के साथ सक्रिय रूप से विचार–विमर्श करता रहता है, जिससे कि यह साझीदारों और नीति निर्माताओं के बीच मतैक्य निर्माण हेतु एक प्लेटफार्म के रूप में कार्य कर सके।

वर्ष 2016–17 के दौरान डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला में मुख्य रूप से निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गएः–

डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र ने डब्ल्यूटीओ के साथ 3–5 अक्तूबर 2016 के दौरान एशियन जांच प्राधिकारियों के लिए तीन–दिवसीय रीजनल एंटी–डंपिंग कार्यशाला का आयोजन किया। इस दौरान डब्ल्यूटीओ के नियमों के अनुरूप, निष्पक्ष और कुशल तरीके से एंटी डंपिंग जांच करने में एशियाई विकासशील डब्ल्यूटीओ के सदस्यों की तकनीकी सहायता करने के लिए प्रयास किया गया। इस कार्यक्रम में 18 देशों से 37 वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला का उद्घाटन श्री जोहान ह्यूमन, निदेशक, नियम डिवीजन, डब्ल्यूटीओ, डॉ. सुरजित मित्रा, तत्कालीन निदेशक, आईआईएफटी और श्री ए.के. भल्ला, अपर सचिव, डीजीएफटी की उपस्थिति में वाणिज्य सचिव, सुश्री रीता तेवतिया द्वारा किया गया।

''चुनिंदा डब्ल्यूटीओ मुद्दों: कृषि, सेवाएं, ट्रिप्स एवं आरटीए'' पर विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम (6 से 15 फरवरी 2017)।

वाणिज्य सचिव सुश्री रीता तेवतिया रीजनल एंटी–डंपिंग कार्यशाला (3–5 अक्तूबर 2016) के सहभागियों के साथ।

विदेश मंत्रालय के भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग (आईटीईसी) के साथ डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र (सीडब्ल्यूएस) ने संस्थान परिसर दिल्ली में 6 से 15 फरवरी 2017 के दौरान चुनिंदा डब्ल्यूटीओ मुद्दों: कृषि, सेवाएं, ट्रिप्स एवं आरटीए पर विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 19 देशों के 29 सरकारी अधिकारियों ने भाग लिया।

संस्थान परिसर दिल्ली में विदेश मंत्रालय के भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग (आईटीईसी) के साथ डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र (सीडब्ल्यूएस) ने 9–18 जनवरी 2017 के दौरान डब्ल्यूटीओ तथा अंतरराष्ट्रीय व्यापार में उभरते मुद्दों पर विशिष्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में भारतीय व्यापार सेवा (आईटीएस) के चार भारतीय अधिकारियों सहित 18 देशों के 25 सरकारी अधिकारियों ने भाग लिया।

केंद्र ने अनेक साझीदार परामर्श बैठकें आयोजित कीं जिनसे एक ओर बातचीत कर्ताओं और व्यापार नीति अधिकारियों और दूसरी ओर साझीदारों के बीच द्विपक्षीय संवाद आयोजित करने का अवसर प्राप्त हुआ। ये बैठकें मुख्यतः क्षेत्रीय विस्तृत भागीदारी करार वार्ता के लिए मूल प्रावधानों के नियमों के संबंध में आयोजित की गईं थीं।

डब्ल्यूटीओ तथा अंतरराष्ट्रीय व्यापार में उभरते मुद्दों पर विशिष्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम (9 से 18 जनवरी 2017)।

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग (एमएसएमई) केंद्र – संस्थान के इस केंद्र का उद्देश्य ऐसे कार्यकलाप आयोजित करना है जिससे एमएसएमई क्षेत्र को सतत् रूप से सहायता प्रदान की जा सके। इन कार्यकलापों को मुख्य रूप से प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने तथा व्यापक सूचना हब के माध्यम से व्यवसाय आसूचना सेवाओं की व्यवस्था करने में वर्गीकृत किया जा सकता है।

परिणामस्वरूप, यह देश के अंदर व विदेश दोनों स्थानों पर अन्य संबंधित और संबद्ध संस्थानों और संगठनों के साथ इंटरफेस करने के लिए एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है। प्रशिक्षण कार्यक्रम, अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय के विभिन्न क्षेत्रों में आयोजित किए जा रहे हैं जैसे कि अंतरराष्ट्रीय विपणन, व्यापार परिचालन और लॉजिस्टिक्स, अंतरराष्ट्रीय वित्त, डब्ल्यूटीओ संबद्ध मुद्दे, प्रलेखन और व्यापार सुविधाकरण उपाय, प्रवेश स्तर कार्यनीतियाँ आदि। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर केंद्र ने साउथ–ईस्ट एशिया, यूरोप और अफ्रीका में स्थित प्रसिद्ध संस्थानों के साथ सहयोग किया है।

एमएसएमई केंद्र द्वारा देश में निर्यात की संभावनाओं को तलाशते हुए सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग से संबंधित इकाइयों की सहायता के लिए गत वर्ष से शिमला, हिमाचल प्रदेश में क्षेत्रीय एमएसएमई केंद्र चलाया जा रहा है, जिसका उद्देश्य उद्यमियों को विदेशी बाजार के साथ जोड़ना है। एमएसएमई केंद्र शिमला द्वारा हिमाचल प्रदेश के 5 जिलों के बीच में अनेक निर्यात जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसमें लगभग 300 एमएसएमई यूनिटों ने भाग लिया। ये सभी कार्यक्रम हिंदी व अंग्रेजी मिली–जुली भाषा में आयोजित किए जाते हैं।

एमएसएमई केंद्र, शिमला (हिमाचल प्रदेश)

अंतरराष्ट्रीय प्रौद्योगिकी व्यापार केंद्र (सीआईटीटी) – संस्थान में इस केंद्र की परिकल्पना अंतरराष्ट्रीय प्रौद्योगिकी व्यापार में, विशेष रूप से वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के व्यापार में सक्रिय संगठनों की भूमिकाओं का संश्लेषण करने की है। विश्व व्यापार की वर्तमान पद्धति के द्वारा विशिष्ट प्रौद्योगिकी–गहन वस्तुओं और सेवाओं के निर्यात में निरंतर विस्तार हो रहा है। यह विकास आवश्यक वस्तुओं और प्रौद्योगिकी उत्पादों द्वारा व्यापार के अनुपात में

गिरावट के विपरीत है। भारत अपनी बड़ी विविध औद्योगिक संरचना, अच्छी तरह से सुसज्जित प्रयोगशालाओं, वैज्ञानिक और तकनीकी जनशक्ति तथा उभरते हुए खुले नीतिगत वातावरण के साथ विश्व व्यापार संगठन के अंतर्गत प्रौद्योगिकी संबंधी वस्तुओं और सेवाओं की बढ़ती वैश्विक मांग का लाभ उठाने के लिए तैयार है। केंद्र इस संबंध में एक परिष्कृत रूप तैयार करने के उद्देश्य से समय–समय पर विशेषज्ञों से लेख आमंत्रित करते हुए **टेक एंड ट्रेड** ई–पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है। इसी श्रृंखला में केंद्र द्वारा निम्न वर्किंग पेपर का प्रकाशन किया गया है:–

- इनोवेशन एंड मेक इन इंडिया पॉलिसी: कुछ विचार – मेक इन इंडिया : एक साइबर परिप्रेक्ष्य (पार्ट–1)।
- आर्थिक सुधार की पृष्ठभूमि में भारतीय निर्यातकों की प्रतिस्पर्धा : एक संक्षिप्त विश्लेषण ।

ओईसीडी के दौरान भारत के प्रतिनिधि डॉ. प्रवीण अरोड़ा, वैज्ञानिक 'जी', विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों के साथ।

ओईसीडी ब्लू स्काई–3 का आयोजन 19 सितम्बर 2016 से 21 सितम्बर 2016 तक बेल्जियम के गेन्ट में किया गया था। ओईसीडी ब्लू स्काई फोरम नीति निर्माताओं/शोधकर्ताओं, डेटा प्रयोक्ताओं/प्रदाताओं और समान सोच वाले व्यक्तियों को विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार (एसटीआई) के आंकड़े और संकेतकों को एक खुले संवाद के माध्यम से दीर्घकालिक एजेंडा की समीक्षा और विकसित करने के लिए शामिल करने पर केंद्रित है। एसटीआई डेटा विश्लेषकों और नीति समुदाय का एक सम्मेलन हर दसवें वर्ष में एक बार आयोजित किया जाता है ताकि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सुस्पष्ट अंतरालों पर खुली और निर्बाध चर्चा की जा सके और समुदायों की पहल संबंधी डेटा का विश्वभर में उपयोग किया जा सके। मंच में 48 देशों के प्रतिनिधियों ने उपस्थिति दर्ज की।

ओईसीडी के दौरान सीआईटीटी के श्री शशांक के. प्रसाद, रिसर्च एसोसिएट प्रोजेक्ट की प्रस्तुति देते हुए।

डीएसटी की वर्तमान परियोजना ''इमरजिंग एंड कन्टेम्परेरी आरएंडडी एंड इनोवेशन इंडीकेटर्स इन नेशनल एसएंडटी सिस्टम एंड पॉलिसी इम्प्लीकेशन्स – ए कॉम्प्रैहंसिव स्टडी'' के परिणामों के आधार पर भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी), नई दिल्ली के अंतरराष्ट्रीय प्रौद्योगिकी व्यापार केंद्र (सीआईटीटी) में अध्ययन किया जा रहा है। परियोजना के प्रिंसीपल और सह–प्रिंसीपल अन्वेषक के साथ–साथ पोस्टर के सह–लेखक के रूप में क्रमशः कु. सोनू वर्मा और डॉ. ओ.पी. वल्ली के साथ प्रस्तुतिकरण के लिए एक पोस्टर स्वीकार किया गया था। डॉ. प्रवीण अरोड़ा, वैज्ञानिक 'जी', क्रॉर्ड (एनएसटीएमआईएस), विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), नई दिल्ली और श्री शशांक के. प्रसाद, रिसर्च एसोसिएट के साथ भारत के प्रतिनिधिमंडल का गठन किया गया। हमारे पोस्टर को फोरम के 10 अनुशंसित पोस्टरों में लिया गया तथा कॉन्फ्रेंस वेबसाइट पर अपलोड किया गया।

कंप्यूटर केंद्र – संस्थान के दिल्ली परिसर में बुनियादी सुविधाओं के अंतर्गत छात्रों व संकाय सदस्यों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अत्याधुनिक उपकरणों से सुसज्जित एक कंप्यूटर सेंटर है। प्रशिक्षण कार्यक्रमों व शोध गतिविधियों के लिए अधिकांशतः सूचना एवं प्रौद्योगिकी संबंधी सुविधाओं की आवश्यकता होती है। कंप्यूटर लैब छात्रों के लिए 24 घंटे खुली होती है, जिसमें पर्याप्त संख्या में कंप्यूटर उपलब्ध हैं। इस सुविधा के अंतर्गत संकाय सदस्यों द्वारा ऑन–लाइन मूल्यांकन करने का प्रावधान भी किया गया है। इसके अतिरिक्त, विंडो ओएस व कलर मोनिटर के साथ 350 से अधिक डेस्कटॉप कंप्यूटर (कोर 2 डूओ व आई5) लगाए गए हैं। इन सभी कंप्यूटरों में नोवेल ग्रुपवाइज, माइक्रोसॉफ्ट लाइनिक कॉम्यूनिकेशन, ओरेक्ल, वीबी, माइक्रोसॉफ्ट प्रोजेक्ट, जावा, एसपीएसएस, ई–व्यूज, एसएएस आदि एपलिकेशन सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं। संस्थान के कंप्यूटर नेटवर्क में सीएमआईई से भारत व्यापार व प्रोवेस डेटाबेस भी उपलब्ध हैं।

समय के साथ आईआईएफटी का ऑनलाइन शिक्षा की शुरूआत में ऑनलाइन कार्यक्रमों के आयोजन हेतु ब्रॉडबैंड सुविधाओं का उपयोग करते हुए ऑनलाइन सत्र चलाना संभव हुआ है। इसी क्रम में निर्यात बंधु योजना के तहत निर्यात तथा आयात प्रबंधन में ऑन–लाइन प्रमाण–पत्र कार्यक्रम तथा संकाय सदस्यों व पीएचडी छात्रों के लिए वर्चुअल प्राइवेट तथा एंटी–प्लेगिरिस्म चैक उपकरण का प्रारंभ किया गया।

दिल्ली परिसर का कंप्यूटर केंद्र

दिल्ली परिसर का विदेश व्यापार पुस्तकालय

विदेश व्यापार पुस्तकालय – संस्थान के दिल्ली परिसर का विदेश व्यापार पुस्तकालय अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य पर सूचना संसाधन के रूप में एक सुव्यवस्थित संग्रह है जो पाठकों की आवश्यकतानुसार मुद्रित या इलैक्ट्रॉनिक रूप में उपलब्ध है। इसके विशेष प्रकाशनों, रिपोर्टों, डेटाबेस, ई–जर्नल्स, प्रिंट जर्नल्स, लेखों आदि की संख्या बढ़ाने और अद्यतन करने हेतु नियमित रूप से प्रयास चलते रहते हैं। वर्तमान में विभिन्न विषयों जैसे – सांख्यिकीय सिद्धांत, बैंकिंग, उद्योग, प्रबंधन, विपणन, उपभोक्तावाद, भूराजनैतिक आर्थिक प्रणाली, सेवाएं, कंप्यूटर, सूचना प्रौद्योगिकी, व्यापार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, यातायात तथा व्यवसाय संचार आदि पर विदेश व्यापार पुस्तकालय के प्रभावशाली 1,02,900 संग्रह में 75,964 पुस्तकें/ सीडी–खण्ड, 17531 सजिल्द आवधिक प्रकाशन तथा 255 आवधिक प्रकाशन हैं। पुस्तकालय में उपर्युक्त विषयों पर 40,500 लेख उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त, संग्रह में अनुसंधान रिपोर्ट, कंपनी रिपोर्ट, सांख्यिकीय वार्षिक प्रकाशन, मामले अध्ययन, सीडी–रोम्स, विडियो कैसेट्स भी शामिल हैं।

संस्थान परिसर में ई–संसाधन पर विशेष संग्रह है तथा विश्व व्यापार संगठन संसाधन केंद्र भी एक विशिष्ट केंद्र के रूप में है जहां विशेष रूप से विश्व व्यापार व संबंधित मुद्दों पर महत्वपूर्ण सूचनाएं प्राप्त की जा सकती हैं।

संस्थान की उपलब्धियां

माननीय राष्ट्रपति महोदय श्री प्रणब मुखर्जी से वर्ष 2015–16 का ''राजभाषा कीर्ति पुरस्कार'' द्वितीय प्राप्त करते हुए तत्कालीन आईआईएफटी निदेशक डॉ. सुरजित मित्रा।

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार – संस्थान अपनी अन्य गतिविधियों के साथ–साथ राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में अपने संवैधानिक दायित्व के प्रति वचनबद्ध है। भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही राजभाषा पुरस्कार योजना के अंतर्गत दिनांक 14 सितम्बर 2016 को राष्ट्रपति भवन में आयोजित 'हिंदी दिवस' के अवसर पर संस्थान को 'क' क्षेत्र में राजभाषा के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए माननीय राष्ट्रपति महोदय श्री प्रणब मुखर्जी द्वारा वर्ष 2015–16 का ''राजभाषा कीर्ति पुरस्कार'' द्वितीय प्रदान किया गया।

राजभाषा शील्ड – भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी), वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार के प्रशासनिक और वित्तीय नियंत्रण के अधीन एक स्वायत्तशासी संस्थान है। वाणिज्य मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी के प्रचार–प्रसार को ध्यान में रखते हुए शील्ड/ट्रॉफी योजना चलाई जा रही है। योजना के अंतर्गत गठित मूल्यांकन समिति द्वारा वर्ष 2015–16 के दौरान 'क' क्षेत्र में राजभाषा के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए संस्थान को तृतीय पुरस्कार हेतु चुना गया है। दिनांक 19 अप्रैल 2017 को संस्थान की ओर से यह पुरस्कार डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता, कुलसचिव, आईआईएफटी ने ग्रहण किया।

सुश्री रीता तेवतिया, वाणिज्य सचिव से पुरस्कार प्राप्त करते हुए डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता, कुलसचिव व श्री राजेन्द्र प्रसाद, हिंदी अधिकारी आईआईएफटी।

स्थापना दिवस – हर वर्ष की भांति 02 मई 2016 को संस्थान ने अपना 53वां ''स्थापना दिवस'' मनाया। कार्यक्रम का प्रारंभ संस्थान के वरिष्ठ संकाय सदस्यों व अधिकारियों द्वारा दीप प्रज्जवलित करते हुए किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के तत्कालीन निदेशक डॉ. सुरजित मित्रा द्वारा की गई। कार्यक्रम के प्रारंभ में संस्थान की हिंदी गृह–पत्रिका ''यज्ञ'' के 9वें अंक का विमोचन किया गया।

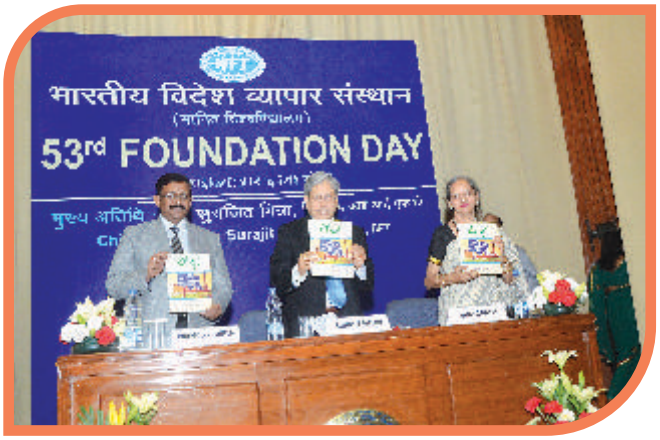

हिंदी गृह–पत्रिका यज्ञ के 9वें अंक का विमोचन करते हुए संस्थान के वरिष्ठ अधिकारी व संकाय सदस्य।

इस अवसर पर डॉ. मित्रा ने आमंत्रित आईआईएफटी के पूर्व संकाय सदस्यों, अधिकारियों/कर्मचारियों का अभिवादन किया तथा संस्थान की उत्तरोत्तर उन्नति में योगदान के लिए संस्थान के सभी सदस्यों, छात्रों व अल्युमनाई के कार्यों की सराहना की। डॉ. मित्रा ने संस्थान की उपलब्धियों का ब्यौरा दिया तथा भविष्य में इसे और ऊँचाइयों पर ले जाने संबंधी योजनाओं की रूप–रेखा प्रस्तुत की।

कार्यक्रम के दौरान तत्कालीन आईआईएफटी निदेशक डॉ. सुरजित मित्रा ने संस्थान के संकाय सदस्यों व अधिकारियों को प्रोत्साहित करते हुए उनके श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए नकद पुरस्कार से सम्मानित किया। पुरस्कार प्राप्तकर्ता सदस्य निम्न प्रकार हैं:–

- डॉ. जयदीप मुखर्जी, सहायक आचार्य
- डॉ. रामसिंह, सहआचार्य
- श्री हरकीरत सिंह, आचार्य स्तर के सलाहकार
- डॉ. शीबा कपिल, सहआचार्या
- श्री एस. बालासुब्रमणियन, सहायक प्रणाली प्रबंधक

डॉ. जयदीप मुखर्जी, सहायक आचार्य

डॉ. रामसिंह, सहआचार्य

02 मई 2016 को संस्थान ने अपना 53वां स्थापना दिवस मनाया।

श्री एस. बालासुब्रमणियन, सहायक प्रणाली प्रबंधक

श्री हरकीरत सिंह, कॉरपोरेट व नियोजन सलाहकार

डॉ. शीबा कपिल, सहआचार्या

हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम – निर्यात के क्षेत्र में देश के विभिन्न स्थानों से अभ्यर्थियों की भारी माँग पर संस्थान के एमडीपी विभाग द्वारा निर्यात बंधु योजना के अंतर्गत हिंदी माध्यम से ऑन–लाइन ''निर्यात–आयात व्यापार में प्रमाण–पत्र'' कार्यक्रम चलाने का निर्णय लिया गया है। यह कार्यक्रम मई 2017 से प्रारंभ किया जा रहा है जिसके पाठ्यक्रम की अवधि 4 सप्ताहांत में 20 सत्रों की होगी तथा कक्षाएं शनिवार को 2.00 बजे से 6.00 बजे (अपराह्न) तक और रविवार को 10.00 बजे (पूर्वाह्न) से 5.00 बजे (अपराह्न) तक चलाई जाएंगी। इस कार्यक्रम को एमडीपी विभाग की चेयरपर्सन डॉ. विजया कट्टी, संकाय सदस्यों, कंप्यूटर सेंटर से सहायक प्रणाली प्रबंधक श्री एस. बालासुब्रमणियन तथा अन्य कर्मचारियों के सहयोग से सफल बनाने का प्रयास किया जा रहा है। इस संबंध में अधिक जानकारी के लिए संस्थान की वेबसाइट www.iift.edu पर देखा जा सकता है। संस्थान द्वारा राजभाषा के प्रचार–प्रसार में यह एक सराहनीय कदम होगा।

आज अंग्रेजी का प्रभुत्व प्राप्त करने के लिए दक्षिण के भाई–बहन जितना श्रम करते हैं, उसका आठवाँ हिस्सा भी हिंदी सीखने में करें तो हिंदुस्तान के बाकी दरवाजे जो उनके लिए बंद हैं, खुल जाएँ और वे हमारे साथ इस तरह एक हो जाएँ जैसे पहले कभी न थे।

– महात्मा गांधी

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान, कोलकाता परिसर

कोलकाता परिसर

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान, कोलकाता की यात्रा वर्ष 2002 में किराए की इमारत से प्रारंभ हुई थी जो आज अपने एक भव्य भवन तक पहुँची है और जिसे देश के पूर्वी भाग के संस्थानों में सबसे बेहतर माना जाता है। यह मदुरदाहा क्षेत्र में रूबी जनरल हास्पिटल के पीछे स्थित है। इसका परिसर 7 एकड़ जमीन में फैला हुआ है, जिसमें एक अकादमिक ब्लॉक और एक प्रशासनिक ब्लॉक है तथा विद्यार्थियों एवं अतिथि संकाय के लिए दो आवासीय ब्लॉक हैं। इसके डिजाइन की जादुई सुंदरता हो या शरद ऋतु में परिसर में पसरी हरियाली और फूलों की सुंदरता, यहाँ आए आगंतुकों को अत्यंत प्रभावित करती है। कोलकाता परिसर, डिजाइन किए गए अपने भवनों व उत्कृष्ट रखरखाव किए गए बगीचों तथा जलस्थलों के कारण बहुत सुंदर दिखाई देता है। परिसर में सभी आधुनिक सुविधाओं अर्थात श्रवण–दृश्य उपकरणों के साथ पूर्णतया वातानुकूलित लेक्चर हॉल, 500 लोगों के बैठने की क्षमता का एक सभागार, एमडीपी केंद्र, कंप्यूटर केंद्र, आंतरिक खेलों, खेल–कूद के मैदान के साथ विद्यार्थियों के लिए उत्कृष्ट आवासीय सुविधाएं शामिल हैं।

दिल्ली परिसर की तर्ज पर कोलकाता परिसर में सभी शिक्षण, प्रशिक्षण व अनुसंधान गतिविधियां आयोजित की जाती हैं, अर्थात दो–वर्षीय एमबीए (आईबी) तथा विशुद्ध रूप से कार्यपालकों को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया 2 वर्ष 6 माह का सप्ताहान्त एमबीए डिग्री कार्यक्रम व अनुसंधान परियोजनाएं आयोजित की जाती हैं। इसके अतिरिक्त, कार्यपालक स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम व प्रमाण–पत्र कार्यक्रम, आदि भी चलाए जाते हैं। कोलकाता परिसर के अध्यक्ष व प्रोफेसर, डॉ. के. रंगराजन की देख–रेख में ये सभी कार्यक्रम सुचारू रूप से संचालित किए जा रहे हैं।

कोलकाता परिसर पर कार्यक्रम का उद्घाटन

कंप्यूटर केंद्र – आईआईएफटी कोलकाता परिसर में छात्रों के लिए सभी उपकरणों से सुसज्जित कंप्यूटर लैब है। परिसर में छात्रों के लिए वाई–फाई सेवाएं उपलब्ध कराई गई हैं। यहाँ क्षेत्रीय लिबसिस, प्रोवेस, इंडिया ट्रेड्स सेवाएं दी गई हैं तथा आईआईएफटी दिल्ली में उपलब्ध आईटी सेवाओं को एनएलडी लाइनों के माध्यम से कोलकाता परिसर में दिया जा रहा है।

कोलकाता परिसर स्थित कंप्यूटर केन्द्र

पुस्तकालय – कोलकाता सेंटर का पुस्तकालय, परंपरागत संसाधनों के साथ–साथ इलेक्ट्रॉनिक तथा वास्तविक जानकारी सहित धीरे–धीरे विकसित हो रहा है। पुस्तकालय में प्रबंधन एवं इससे संबंधित मुद्दों पर लगभग 3500 पुस्तकें/सीडी तथा 70 राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाएं उपलब्ध हैं। लगभग सभी व्यावसायिक दैनिक समाचार–पत्र भी इसके आवधिक अनुभाग में उपलब्ध हैं। यहाँ प्रबंधन, सांख्यिकी, अर्थशास्त्र, गणित, विपणन, अंतरराष्ट्रीय व्यापार, मनोविज्ञान, अनुसंधान परिचालन, कारोबारी संचार, विज्ञापन तथा सामान्य पठनीय आदि दस्तावेजों को संग्रह किया गया है। पुस्तकालय में संसाधन, मुख्य रूप से अंग्रेजी सहित अन्य भाषाओं जैसे – बांग्ला, हिंदी, स्पेनिश, जर्मन, इटेलियन, फ्रेंच में उपलब्ध हैं।

कोलकाता परिसर का पुस्तकालय

संग्रह ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस सूची तथा प्रसारण बार कोडिड प्रणाली की सुविधा के साथ पूरी तरह से स्वचालित है। पुस्तकालय अपने ई–ब्रेरी नामक डेटाबेस से सुसज्जित है, जो अपने उपयोगकर्ताओं को सरकारी अवकाशों को छोड़कर वर्ष भर अपनी सेवाएं प्रदान करता है।

इंक्यूबेशन केंद्र – संस्थान परिसर दिल्ली में नवोंमेष उद्यमियों के लिए व्यापार एवं प्रौद्योगिकी में अद्यतन जानकारी देने के उद्देश्य से ''काईटस'' नाम से इंक्यूबेशन केंद्र की स्थापना की गई है। इसका संचालन आईआईएफटी एमएसएमईकेंद्र की प्रभारी डॉ. तमन्ना चतुर्वेदी की देख–रेख में किया जाता है। यह केंद्र मित्सुबिशी कॉरपोरेशन ऑफ इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड और मेटल वन इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड की कॉरपोरेट सामाजिक दायित्व की पहल के साथ स्थापित किया गया है। इसका उद्देश्य आईआईएफटी के पूर्व–छात्रों के बीच व्यवसाय विचारों को पुष्ट करना तथा "पेन" भारत में एमएसएमई क्लसटरों की निर्यात प्रतिस्पर्द्धा में वृद्धि के उद्देश्य से प्रौद्योगिकी समाधान उपलब्ध कराने की दिशा में कार्य करना है। इसके अतिरिक्त, यह केंद्र बाजार अनुसंधान आयोजित करके उत्पाद तथा बाजार विनिर्धारण के संबंध में सलाह प्रदान करते हुए व्यापार संबंधित मुद्दों का समाधान करके, वित्त, अंतरराष्ट्रीय ब्रॉन्डिंग व उत्पाद विकास करके नए उद्यमी तैयार करता है।

इस केंद्र का उद्घाटन दिनांक 18 जुलाई 2016 को मित्सुबिशी कॉरपोरेशन ऑफ इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड व मेटल वन इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड के सीएमडी की उपस्थिति में मुख्य अतिथि केंद्रीय मंत्री श्री कलराज मिश्र, एमएसएमई द्वारा किया गया था। कार्यक्रम की अध्यक्षता तत्कालीन आईआईएफटी निदेशक डॉ. सुरजित मित्रा द्वारा की गई थी।

''काईटस'' उद्घाटन करते हुए माननीय केंद्रीय एमएसएमई मंत्री श्री कलराज मिश्र (18 जुलाई 2016)

अनुसंधान विभाग – संस्थान का अनुसंधान विभाग समय–समय पर समकालीन विषयों पर महत्वपूर्ण राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करता है, जो बहुराष्ट्रीय निकायों, सरकारी क्षेत्र और प्रसिद्ध शैक्षिक संस्थानों से प्रख्यात संसाधन व्यक्तियों को एक मंच पर लाता है।

आईआईएफटी द्वारा 16–17 दिसम्बर 2016 को कोलकाता परिसर में ''अंतरराष्ट्रीय व्यापार एवं वित्त में अनुभवजन्य मुद्दों'' पर अपना पाँचवां सम्मेलन आयोजित किया गया जिसका उद्घाटन डीजीएफटी के महानिदेशक व संस्थान के निदेशक श्री अजय कुमार भल्ला, भा.प्र.से. द्वारा किया गया।

डीजीएफटी के महानिदेशक व संस्थान के निदेशक श्री अजय कुमार भल्ला, भा.प्र.से. सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए।

इस अवसर पर कोलकाता परिसर के अध्यक्ष डॉ. के. रंगराजन सहित सभी विभागों के चेयरपर्सन उपस्थित थे। इस सम्मेलन में देश–विदेश के विश्वविद्यालयों एवं अनुसंधान संस्थानों से शिक्षाविदों व नीति निर्माताओं से कुल 101 पेपर प्राप्त हुए जिनमें से 71 पेपरों को प्रस्तुति हेतु चयन किया गया तथा प्रोफेसर देबाशीष चक्रवर्ती व प्रोफेसर जयदीप मुखर्जी द्वारा संपादित पुस्तक ''एशिया में व्यापार, निवेश तथा आर्थिक विकास'' का विमोचन किया

एशिया में व्यापार, निवेश तथा आर्थिक विकास पुस्तक का विमोचन।

संस्थान के एमडीपी विभाग द्वारा भारतीय व्यापार सेवा के अधिकारियों (बैच 2015) को प्रशिक्षण दिया गया। दिनांक 6 सितम्बर 2016 को विभाग द्वारा माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी के साथ इन अधिकारियों की एक बैठक का आयोजन किया गया।

माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी के साथ भारतीय व्यापार सेवा के अधिकारी

मैत्री क्रिकेट मैच – संस्थान द्वारा 25 फरवरी 2017 को मैत्री क्रिकेट खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका उद्देश्य संस्थान सदस्यों व छात्रों के बीच एक सौहार्दपूर्ण वातावरण तैयार करना तथा अध्ययन–अध्यापन जैसी संघर्षपूर्ण गतिविधियों में सहजता लाना था। इस खेल प्रतियोगिता में संस्थान के संकाय सदस्यों, अधिकारियों/कर्मचारियों तथा छात्रों ने अपनी भागीदारी दर्ज कराई। प्रतियोगिता के लिए चार टीमें गठित की गईं जिसमें दो टीमें संकाय सदस्यों एवं अधिकारियों/कर्मचारियों की ओर से तथा दो टीमें छात्रों की ओर से तैयार की गईं। प्रतियोगिता में दो लीग मैच खेले गए तथा अंतिम एवं निर्णायक मैच कर्मचारी एकादश व छात्र एकादश के बीच खेला गया और कर्मचारी एकादश विजेता टीम के रूप में सामने आई।

कर्मचारी विजेता टीम

द्वितीय स्थान पाने वाली छात्र टीम

मैन ऑफ द मैच के लिए पुरस्कृत छात्र

मैन ऑफ द मैच पुरस्कार लेते हुए श्री सूरज कंडारी

शत प्रतिशत प्लेसमेंट – हर बार की तरह संस्थान के मुख्य कार्यक्रम एमबीए (आईबी) 2015–17 बैच का प्लेसमेंट शत प्रतिशत रहा तथा आईआईएफटी के तीन छात्रों ने 1.00 करोड़ रूपए प्रतिवर्ष से अधिक का पैकेज हासिल किया है जबकि छह छात्रों को अंतरराष्ट्रीय नियुक्तियों में 75.00 लाख रूपए से अधिक प्रतिवर्ष का प्रस्ताव दिया गया है। इस वर्ष छात्रों की प्लेसमेंट के लिए लगभग 94 कंपनियां आईआईएफटी परिसर में आईं। आईआईएफटी छात्रों को पिछले वर्ष दिया गया औसत वेतन 18.01 लाख रुपए प्रतिवर्ष की तुलना में इस वर्ष 18.41 लाख रुपए प्रतिवर्ष रहा तथा उच्चतम घरेलू वेतन 26 लाख रुपए प्रति वर्ष रहा। आईआईएफटी छात्रों को अंतरराष्ट्रीय स्तर की पेशकश की संख्या इस वर्ष 20 रही जबकि यह गत वर्ष केवल 15 थी। आईआईएफटी के छात्रों को इस वर्ष 74 पूर्व प्लेसमेंट ऑफर (पीपीओ) मिलीं जबकि यह पिछले वर्ष 64 थीं। यह कंपनियों द्वारा प्रस्तावित पीपीओ की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि है।

बैच 2015–17 के लिए, प्लेसमेंट में विविध क्षेत्रों का अच्छा मिश्रण और प्लेसमेंट प्रक्रिया में भाग लेने वाली हर डोमेन की अग्रणी कंपनियों को देखा गया। इस वर्ष आईआईएफटी में कुछ प्रमुख नियोक्ताओं में गोल्डमैन सैक्स, आईटीसी, जेपी मॉर्गन, मैरिको, गोदरेज, अमेजॅन, आईसीआईसीआई बैंक, एचडीएफसी, सिटीबैंक, एचएसबीसी, एक्सिस बैंक, कॉग्निजेंट बिजनेस कंसल्टिंग, एचपी, इंफोसिस कंसल्टिंग मैनेजमेंट, टाटा स्टील, विप्रो, एलएंडटी, एचपीसीएल, आईओसीएल, एसबीआई, गेल, सिटी बैंक इत्यादि शामिल हैं।

इस वर्ष आईआईएफटी में कुछ नए भर्तीकर्ताओं जैसे ग्लैक्सोस्मिथक्लाइन, शैल, टेट्रापैक, ट्रैफीगरा, एली लिली, आरपीजी, जीई, क्रिसिल, आदित्य बिड़ला ग्रुप (एलईएपी प्रोग्राम), डेल, डीएचएफएल प्रमेरिकिका और कई अन्य शामिल हैं। ट्रेड की पेशकश देने वाले प्रमुख भर्तीकर्ता ओलम इंटरनेशनल, टीजीआई,

राष्ट्रीय कार्यक्रम

आतंकवाद–विरोधी दिवस

भारत सरकार द्वारा जारी दिशा–निर्देशों का अनुपालन करते हुए संस्थान में 20 मई 2016 को आतंकवाद–विरोधी दिवस मनाया गया जिसका उद्देश्य आतंकवाद का राष्ट्र हित में भारी नुकसान और आतंकवाद व हिंसा के कारण आम लोगों की पीड़ा को दर्शाते हुए देश के युवाओं को इससे दूर रखना है। इस अवसर पर संस्थान परिसर में एकत्रित संस्थान के सभी सदस्यों को निदेशक, आईआईएफटी द्वारा प्रतिज्ञा दिलाई गई।

योग दिवस के अवसर पर सभागार में एकत्रित संस्थान सदस्य।

योग दिवस

21 जून 2016 को संयुक्त राष्ट्र संघ के लगभग सभी 193 देशों के साथ संस्थान में भी अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। इस अवसर पर अतिथि वक्ता श्री अजय शास्त्री ने सभागार में एकत्रित संस्थान सदस्यों को योग के व्यावहारिक व सिद्धांत पक्ष की जानकारी दी। जीवन में योग के महत्व को समझते हुए संस्थान के कर्मचारियों व छात्रों के लिए एकांतर दिवसों में योग कक्षाएं चलाई जाती हैं।

सद्भावना दिवस

भारत सरकार द्वारा समय–समय पर राष्ट्र हित में कुछ विशेष दिनों को किसी विशेष उपलक्ष्य में प्रतीकात्मक रूप से चिह्नित किया गया है। इसी श्रृंखला में, 19 अगस्त 2016 को पूरे भारत वर्ष में ''सद्भावना दिवस'' के रूप में मनाया गया। संस्थान में भी इस विचार को आगे बढ़ाते हुए इस दिन चेयरपर्सन (एडीपी) डॉ. विजया कट्टी द्वारा संस्थान के प्रांगण में एकत्रित सदस्यों को शपथ दिलाई गई।

स्वच्छता सप्ताह

''स्वच्छ भारत अभियान'' के अंतर्गत संस्थान में 26 सितम्बर 2016 से 02 अक्तूबर 2016 के दौरान 'स्वच्छता सप्ताह' मनाया गया। इस दौरान एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें गैर–सरकारी संस्था ''पोम पोम रिसाइक्लिंग'' के अधिकारी श्री आशुतोष पांडे को वक्तव्य के लिए आमंत्रित किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य कूड़े का उचित रख–रखाव व उसे उपयोगी बनाने संबंधी जानकारी देना था।

स्वच्छता सप्ताह के दौरान डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता, कुलसचिव, आईआईएफटी संस्थान सदस्यों को संबोधित करते हुए।

इसी दौरान संस्थान सदस्यों के बीच 'स्वच्छ भारत अभियान' विषय पर एक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया तथा विजेता प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

"स्वच्छ भारत अभियान" विषय पर निबंध प्रतियोगिता का दृश्य ।

स्वच्छता सप्ताह कार्यक्रमों की कड़ी में स्वच्छता के प्रति जागरूकता का वातावरण तैयार करने के उद्देश्य से संस्थान के सदस्यों ने संस्थान परिसर में तथा इसके आस–पास सफाई अभियान चलाया।

संस्थान परिसर एवं इसके आस–पास सफाई करते संस्थान सदस्य ।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान, भारत सरकार की एक स्वायत्तशासी संस्था है जो समय–समय पर सरकार द्वारा लिए गए निर्णयों के प्रति अनुपालन के लिए कटिबद्ध है। इसी क्रम में, संस्थान में 31 अक्तूबर से 5 नवम्बर 2016 के दौरान "सतर्कता जागरूकता सप्ताह" मनाया गया जिसका उद्देश्य 'ईमानदारी को बढ़ावा देने और भ्रष्टाचार से लड़ाई में जन भागीदारी' था। केंद्रीय सतर्कता आयोग की पहल के अंतर्गत मनाए गए "सतर्कता जागरूकता सप्ताह" के पीछे मुख्य विचार था कि भारत जैसे विशाल देश में हम जन भागीदारी के बिना ईमानदारी को न तो प्रोत्साहित कर सकते हैं और ना ही भ्रष्टाचार से लड़ाई लड़ सकते हैं। ईमानदारी बुनियादी तौर पर वह स्थिति है, जो पूरी तरह से सुसंगत होती है और कोई अलगाव नहीं करती है।

राष्ट्रीय एकता दिवस

31 अक्तूबर 2016 को "राष्ट्रीय एकता दिवस" के रूप में पूरे भारत वर्ष के साथ–साथ संस्थान में भी मनाया गया। इसे भारत के 'लौह पुरूष' कहे जाने वाले सरदार वल्लभ भाई पटेल के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। सरदार वल्लभ भाई पटेल द्वारा देश को एकजुट करने के लिए अनेक प्रयास किए गए थे तथा उनके इन कार्यों को याद करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने के उद्देश्य से इस दिन को "राष्ट्रीय एकता दिवस" के रूप में मनाने का फैसला लिया गया है। इस अवसर पर सरदार वल्लभ भाई पटेल को याद करते हुए तत्कालीन आईआईएफटी निदेशक द्वारा संस्थान के सदस्यों को राष्ट्रीय एकता की शपथ दिलाई गई।

आज ज्ञान–विज्ञान, प्रौद्योगिकी और अन्य क्षेत्रों में तेजी से विकास हो रहा है। इस प्रगति और विकास से जन–साधारण भी लाभान्वित हो, हमें इसे सहज और सरल हिंदी के माध्यम से उन तक पहुँचाना होगा।

– अटल बिहारी वाजपेयी

स्वच्छता पखवाड़ा

संस्थान में 16–28 फरवरी 2017 के दौरान ''स्वच्छता पखवाड़ा'' मनाया गया। इस दौरान संस्थान की चेयरपर्सन (एमडीपी) प्रोफेसर डॉ. विजया कट्टी ने कर्मचारियों/अधिकारियों को संबोधित करते हुए संस्थान व आस–पास के क्षेत्र में सफाई संबंधी बिंदुओं पर प्रकाश डाला तथा इस कार्य को निर्बाध रूप से जारी रखने पर बल दिया। संस्थान के सभी सदस्यों ने स्वच्छता अभियान को अपने दैनिक कार्य के रूप में अपनाने का संकल्प लिया।

सभी अधिकारियों/कर्मचारियों व छात्रों के श्रमदान से संस्थान भवन के आस–पास पूरे क्षेत्र की सफाई की गई जिसमें एक बड़ी संख्या में उत्साहित सदस्यों ने भाग लिया। संस्थान के सभी अनुभागों/विभागों में विशेष सफाई अभियान के साथ–साथ अनप्रयुक्त पेपर/फाइलों को हटाया गया।

''स्वच्छता पखवाड़ा'' के दौरान संस्थान परिसर एवं इसके आस–पास सफाई करते संस्थान सदस्य ।

हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में आसीन हो सकती है।

– मैथिलीशरण गुप्त

''स्वच्छता पखवाड़ा'' के दौरान कोलकाता परिसर एवं इसके आस–पास सफाई करते संस्थान सदस्य ।

कोलकाता परिसर पर ''स्वच्छता पखवाड़ा''

कोलकाता परिसर पर भी 16–28 फरवरी 2017 के दौरान ''स्वच्छता पखवाड़ा'' मनाया गया। इस कार्यक्रम में कोलकाता सेंटर के अध्यक्ष प्रोफेसर डॉ. के रंगराजन सहित सभी संकाय व कर्मचारियों/अधिकारियों ने भाग लिया तथा सभी ने मिलकर परिसर की सफाई की। प्रोफेसर डॉ. के. रंगराजन ने सभी सदस्यों को संबोधित करते हुए संस्थान व आस–पास के क्षेत्र में सफाई संबंधी बिंदुओं पर प्रकाश डाला तथा इस कार्य को निर्बाध रूप से जारी रखने पर बल दिया। संस्थान के सभी सदस्यों ने स्वच्छता अभियान को अपने दैनिक कार्य के रूप में अपनाने का संकल्प लिया।

दिवाली के पवित्र अवसर पर पूजा अर्चना करते कोलकाता परिसर के सदस्य।

30 अक्तूबर 2016 को कोलकाता परिसर पर अध्यक्ष प्रोफेसर डॉ. के. रंगराजन सहित सभी कर्मचारी/अधिकारी, संकाय सदस्य व छात्र दिवाली के पवित्र अवसर पर एकत्रित हुए तथा सभी ने एक साथ मिलकर पूजा अर्चना की।

छात्र गतिविधियां

एस्पिरेंट सिटी मीट

आईआईएफटी की संस्कृति के प्रति जागरूकता बढ़ाने और प्रवेश आदि के बारे में चिंताओं को दूर करने के लिए, मीडिया समिति ने विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर लगातार सहायता प्रदान करने के अलावा, आगामी बैच के लिए सिटी चैप्टर मीट का आयोजन किया। सिटी मीट का आयोजन दिल्ली, मुम्बई, बैंगलोर और कोलकाता में 2016 के मई माह में किया गया था। इन कार्यक्रमों में अभ्यर्थियों की सभी समस्याओं का समाधान किया गया।

ट्रेड विंडः वार्षिक व्यवसाय शिखर सम्मेलन 2016

ट्रेड विंड आईआईएफटी का एक वार्षिक कार्यक्रम है तथा यह तीन दिवसीय कार्यक्रम दिल्ली परिसर में आयोजित किया गया। इस शिखर सम्मेलन में वित्त, विपणन, मानव संसाधन, नेतृत्व और परिचालन के क्षेत्रों से वक्ताओं को आमंत्रित किया गया।

वार्षिक वित्त शिखर सम्मेलन

वार्षिक वित्त शिखर सम्मेलन 11 अगस्त 2016 को ''स्टार्टअप वैल्यूएशन – ए रियलिटी और ए वर्क ऑफ फिक्सन'' विषय के साथ आरम्भ हुआ। इस शिखर सम्मेलन में वक्ता संस्थापक, प्रबंधन भागीदार और प्रमुख उद्यमी फर्मों यथा अल्टुएस वेंचर्स, डेक्सटर कैपिटल, इविकैप वेंचर्स, इनवेन्ट्स कैपिटल, न्यूक्लियस पार्टनर्स और फर्स्ट गल्फ बैंक के अध्यक्षों ने अपनी भागीदारी दर्ज की।

वार्षिक वित्त शिखर सम्मेलन

वार्षिक विपणन शिखर सम्मेलन

वार्षिक विपणन शिखर सम्मेलन में वक्ता के रूप में कॉरपोरेट जगत से जानी–मानी हस्तियों को आमंत्रित किया गया जैसे राजीव जैन, एवीपी, मार्केटिंग डीएस ग्रुप, संकल्प पोटभारे, हैड ऑफ बिजनेस एंड डेवलपमेंट एंड सेल्स, आरबी इंडिया, सुदीप मित्रा, ग्लोबल हैड ऑफ कंज्यूमर इनसाइट्स, मैरिको, कनिका मित्तल, मार्केटिंग डायरेक्टर, रीबोक इंडिया, सुधाकर मिश्रा, सीनियर ग्लोबल प्रॉडक्ट मैनेजर, फिलिप्स हैल्थ सिस्टम्स। वक्ताओं ने अपने उद्बोधन में एक मूल्य प्रस्ताव बनाए जाने पर बल दिया और बताया कि यह बहुत महत्वपूर्ण है। इसके अंतर्गत हम स्वयं को ग्राहक मानें तथा उनके व्यवहार और उनकी विशेषताओं को बनाने वाले घटक क्या हैं उन्हें समझने का प्रयास करें।

वार्षिक विपणन शिखर सम्मेलन

वार्षिक एचआर शिखर सम्मेलन

इस कार्यक्रम के दौरान विषय–वस्तु के रूप में ''विविध संस्कृतियों वाले कार्यस्थल के लिए प्रतिभा अर्जन रणनीतियां'' को लिया गया। प्रतिष्ठित संगठनों यथा एओन हेविट, राकुटेन, रिलाइंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड, वकहार्ड, आरपीजी, लावा इंटरनेशनल से एचआर व्यवसाइयों को आमंत्रित किया गया। इस सत्र के मध्यस्थ श्री सावंत कुमार थे जो एओन हेविट में एक साझीदार और आईआईएफटी के प्रतिष्ठित अल्युमन्स हैं। संदीप चानना, हेड – मानव संसाधन, राकुटेन ने सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश भारत से उत्पन्न संभावनाओं, विविधता की संकल्पना और साथ–साथ काम करने के विषय से परिचित कराया। श्री सुप्रतीक भट्टाचार्य, उपाध्यक्ष, आरपीजी इंटरप्राइजेज ने कॉरपोरेट वातावरण में विविध कार्यबल के लाभों की ओर चर्चा को बढ़ाया।

वार्षिक एचआर शिखर सम्मेलन

वार्षिक नेतृत्व शिखर सम्मेलन

ट्रेड विंड्स का अंतिम दिन नेतृत्व शिखर सम्मेलन के साथ आरंभ हुआ। शिखर सम्मेलन के लिए विषय–वस्तु के रूप में ''वृद्धि एवं प्रतिस्पर्धा के लिए रणनीतिक चपलता'' को लिया गया। इस शिखर सम्मेलन में श्री अरविंद बाली, सीईओ – वीडियोकॉन टेलीकॉम, आईटी बिजनेस एंड हैंडसेट उपस्थित थे। एवरेस्ट ग्रुप के साझीदार श्री राजेश रंजन ने कहा कि आज आईटी उद्योग के आस–पास नौकरियां ज्यादा केंद्रित हैं। गार्टनर के रिसर्च डायरेक्टर श्री विशाल त्रिपाठी ने उन साथियों के बारे में बातचीत की जो स्टार्ट–अप्स में काम करके अपनी नौकरी को छोड़ चुके हैं और मोह भंग होने के बाद अपनी नौकरी में वापिस आ गए हैं। ईएक्सएल सर्विसेज के उपाध्यक्ष ने बताया कि बदलाव के इस युग में किसी संगठन को अपने बुनियादी मूल्यों पर जोर देने की जरूरत है।

वार्षिक नेतृत्व शिखर सम्मेलन

वार्षिक राष्ट्रीय परिचालन शिखर सम्मेलन

वार्षिक व्यवसाय वित्त शिखर सम्मेलन के तीसरे दिन ''सस्टेनेबल सप्लाई चेन्स : चैलेंजेज इनोवेशन एंड इंटीग्रल सालूशन्स'' विषय आधारित राष्ट्रीय परिचालन शिखर सम्मेलन 2016 का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डेमको (डीएएमसीओ) इंडिया, बंगलादेश व श्रीलंका के सीईओ श्री विशाल शर्मा जैसे अनेक प्रख्यात वक्ताओं को चर्चा के लिए आमंत्रित किया गया।

वार्षिक राष्ट्रीय परिचालन शिखर सम्मेलन

टेडएक्स – आईआईएफटी

आईआईएफटी दिल्ली छात्रों की मीडिया कमेटी द्वारा अपने भव्य कार्यक्रम टेडएक्स–आईआईएफटी दिल्ली 2016 का 22 अक्टूबर को आयोजन किया गया। टेडएक्स – आईआईएफटी के द्वितीय संस्करण की विषय–वस्तु ''इगनाइट'' थी। प्रतिष्ठित वक्ताओं में निम्नलिखित शामिल थे:–

1. **मनु कुमार जैन**, इंडिया हैड, जिओमी
2. **संजय सेठ,** को–फाउंडर एंड सीईओ, शॉपक्लयू.कॉम
3. **श्वेता त्रिपाठी**, बालीवुड अभिनेत्री
4. **आनंद सिन्हा**, द मैन बिहाइंड द रॉबिन हुड आर्मी
5. **शाहिल वैद्य** और **चिराग गांदर**, फाउंडर, द मिनिमलिस्ट स्टूडियो
6. **डॉ. अनुरूप रॉय,** फाउंडर, एजीओ ऑन एडुकेशन फॉर अंडरप्रिविलेज्ड –www.whoamiorg.in
7. **श्रीमोई पियु कुंडु**, 'फॉर अवे म्यूजिक', 'सीताज कर्स,' 'यू हॅव गॉट द रॉग गर्ल एंड कट' के लेखक।

टेडएक्स – आईआईएफटी

दुबई व्यापार सम्मेलन

आईआईएफटी ने अपने प्रमुख समारोह ''इंटरनेशनल ट्रेड कनक्लेव 2016'' का आयोजन 24 सितम्बर 2016 को दुबई में किया तथा कार्यक्रम के दौरान विषय–वस्तु के रूप में ''भारत–गल्फ रणनीतिक साझेदारी में व्यापार तथा निवेश – चुनौतियां और भविष्य की योजना'' को लिया गया।

दुबई में आयोजित ''इंटरनेशनल ट्रेड कनक्लेव 2016''

ग्रांड अल्युमनाई रीयूनियन

संस्थान ने ग्रांड अल्युमनाई रीयूनियन 2016 का आयोजन 19 नवम्बर 2016 को किया तथा इसमें 700 अतिथियों ने भाग लिया जो इसकी अत्यंत सफलता का प्रतीक है। इस कार्यक्रम के दौरान आईआईएफटी दिल्ली में बिताए दिनों को स्मरण किया गया।

अल्युमनाई के लिए यह बड़े हर्ष का अवसर था जब ''अल्युमनाई ऑफ द इयर 2016 और अल्युमन्स ऑफ बैच 1981 ट्राफी'' श्री सुरजित कर पुरकायस्थ, महानिदेशक पुलिस, पश्चिम बंगाल को देश के प्रति उनके योगदान के लिए प्रदान की गई।

श्री सुरजित कर पुरकायस्थ, महानिदेशक पुलिस, पश्चिम बंगाल को ट्राफी प्रदान करते तत्कालीन आईआईएफटी निदेशक डॉ. सुरजित मित्रा।

श्री पुरकायस्थ ने दर्शकों को संबोधित किया और बताया कि कैसे आईआईएफटी ने उनके कैरियर में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके बाद रॉकस्ट्रिंग्स द्वारा संगीत का एक सम्मोहक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया साथ ही भव्य रात्रि भोज का आयोजन किया गया।

हिंदी भाषा उस समुद्र जलराशि की तरह है जिसमें अनेक नदियाँ मिली हों।

– वासुदेवशरण अग्रवाल

छात्र उपलब्धियां

किसी भी संस्थान के छात्र उसकी पूंजी एवं धरोहर हैं। यह एक तथ्य है कि छात्र संबंधित संस्थान के दर्पण हैं जिनसे उस संस्थान की छवि, उसके संकाय एवं प्रशासन के बारे में जानकारी मिलती है। यह छात्र की प्रतिभा ही है जिससे उस संस्थान का मान–सम्मान बढ़ता है। छात्र अपनी बौद्धिक कुशलता, लगन एवं मेहनत से न केवल अपना अकादमिक रिकार्ड उच्च शिखर पर ले जाते हैं वरन् अपने खेल कौशल और बुद्धिमता से विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताओं एवं प्रतिस्पर्धाओं में भाग लेकर शील्ड और पदक जीतकर अपने संस्थान का नाम रोशन करते हैं। अपनी प्रतिभा के बल पर छात्र अपने संस्थान की श्रेष्ठ छवि तो बनाते ही हैं साथ ही भविष्य में अपने देश के लिए यश और सम्मान भी अर्जित करते हैं। इसी संदर्भ में, भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी) के छात्रों की वर्ष 2016–17 की उपलब्धियों का विवरण प्रस्तुत है।

04 फरवरी 2017 को मुम्बई में ''सीएफए इंस्टिट्यूट रिसर्च चैलेंज इन इंडिया'' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। आईआईएम बैंगलोर और एनएमआईएमएस मुम्बई के साथ भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी) राष्ट्रीय फाइनल में विजेता के रूप में सामने आया।

''सीएफए इंस्टिट्यूट रिसर्च चैलेंज इन इंडिया'' प्रतियोगिता के पुरस्कृत छात्र।

''सीएफए इंस्टिट्यूट रिसर्च चैलेंज'' एक वैश्विक इक्विटी अनुसंधान प्रतियोगिता है जिसका लक्ष्य विश्वविद्यालय विद्यार्थियों में इक्विटी अनुसंधान में श्रेष्ठ कार्यों को बढ़ावा देना तथा उनका मूल्यांकन करना है और उनके निवेश रिपोर्ट लेखन और प्रस्तुतिकरण कौशल की भी जांच करना है। भारतीय विदेश व्यापार संस्थान के छात्रों की टीम के सदस्य अक्षत काबरा, करिश्मा जैन, प्रणव संघई, प्रसिद्ध भजियावाला और समीर सूद ने शीर्ष सम्मान प्राप्त कर चोटी के कई बी–स्कूलों को पीछे छोड़ा तथा आईआईएफटी ने पुनः अपनी योग्यता का प्रमाण दिया।

आईआईएफटी दिल्ली (बैच 2016–18) की टीम मिनर्वा के सदस्य सम्बित पाणिग्राही, स्वर्णिमा लभ और ऐश्वर्य जैन एसपीजेआईएमआर मुम्बई और एसआईबीएम पुणे के साथ लॉरेल ब्रांडस्टोर्म (ऑफिसियल) 2017 (ब्रांड चैलेंज) में राष्ट्रीय फाइनलिस्ट रहीं।

लॉरेल ब्रांडस्टोर्म (ऑफिसियल) 2017 की फाइनलिस्ट टीम।

''आरबीआई पॉलिसी चैलेन्ज 2016'' एक राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता है जिसमें 260 टीमों ने भाग लिया। भारतीय विदेश व्यापार संस्थान की कु. हर्षिता सोलंकी, श्री रजत मलिक, श्री श्रेयल डिसूजा व श्री गणेश सुकुमार ने उद्घाटन संस्करण में अपनी जीत दर्ज की जिसके लिए आईआईएफटी टीम को एक ट्राफी और 1 लाख रूपये का नकद पुरस्कार प्रदान किया गया।

''आरबीआई पॉलिसी चैलेन्ज 2016'' प्रतियोगिता के विजता छात्र।

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान दिल्ली के श्री गणेश सुकुमार (बैच 2015–17) को ''इकॉनोमिक टाइम्स यंग लीडर्स बी–स्कूल 2016 संस्करण'' का युवा नेता चुना गया।

''इकॉनोमिक टाइम्स यंग लीडर्स बी–स्कूल 2016 संस्करण'' का चयनित युवा नेता छात्र।

ईवाई ग्लोबल डिलीवरी सर्विसेस कैरियर्स द्वारा आयोजित पैन इंडिया बिजनेस क्विज, ''ईवाईक्यू 2016'' प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें भारत के प्रीमियर बी–स्कूलों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में भारतीय विदेश व्यापार संस्थान के एमबीए (आईबी) 2015–17 बैच की टीम क्विंटइसेन्सियल के श्री आशीश मिश्रा और कु. माधुरी बूचा ने नेशनल रनर्स अप स्थान हासिल किया।

''ईवाईक्यू 2016'' प्रतियोगिता के विजेता छात्र।

आईआईएफटी कोलकाता परिसर (बैच 2015–17) के श्री जतिन चौहान और श्री सिमरनदीप सिंह प्रतिष्ठित ''एयरटेल आईक्रिएट चैलेंज'' के विजेता रहे।

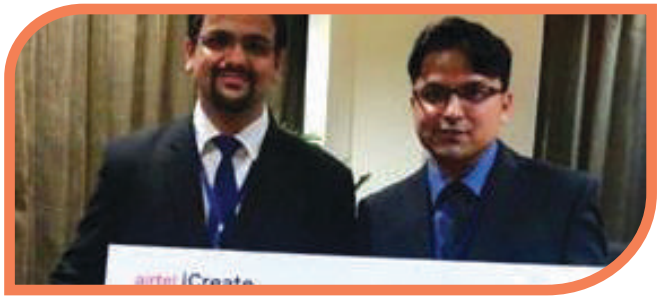

''एयरटेल आईक्रिएट चैलेंज'' प्रतियोगिता के विजेता छात्र।

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी) कोलकाता परिसर (बैच 2015–17) के श्री रोबिन गुप्ता को ''द इकॉनोमिक टाइम्स यंग लीडर बी–स्कूल 2016 संस्करण'' का युवा नेता चुना गया।

''द इकॉनोमिक टाइम्स यंग लीडर बी–स्कूल 2016 संस्करण'' का चयनित युवा नेता छात्र।

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी) कोलकाता परिसर (बैच 2015–17) के राहुल पैन्यूली, सतिनाथ घोष और दिव्या गर्ग ने ''यस बैंक ट्रांसफोरमेशन सिरीज'' में सेकेन्ड रनर्स अप का स्थान प्राप्त किया।

''यस बैंक ट्रांसफोरमेशन सिरीज'' प्रतियोगिता के विजेता छात्र।

तृतीय वार्षिक आईआईएफटी मैराथन

मैराथन प्रथम प्री–क्वॉ वैडिस थी जिसका आयोजन 12 नवम्बर 2016 को किया गया था। मैराथन जेएनयू से आरंभ हुई और आईआईएफटी पर समाप्त हुई। यह एक बहुत सफल आयोजन था जिसमें अनुभवी पेशेवर धावक, कालेज के विद्यार्थी और एनजीओ के बच्चों सहित 400 लोगों ने भाग लिया। यह आयोजन डेकाथलोन, इनरजल आदि द्वारा प्रायोजित किया गया था।

मैराथन में भाग लेते संस्थान के छात्र ।

रक्तदान शिविर

संस्थान के छात्रों द्वारा दिनांक 26 नवम्बर 2016 को रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें नेक काम के लिए आईआईएफटी के विद्यार्थियों ने रक्तदान किया।

ट्रेजर हंट

पैन दिल्ली ट्रेजर हंट का आयोजन 8 जनवरी 2017 को किया गया जिसमें बाइकर ग्रुप और कालेज के विद्यार्थियों ने भाग लिया। इसमें दिल्ली क्षेत्र में स्थापित विभिन्न संकेतों की रेडियो पर घोषणा की गई और छात्र उन्हें हल करते दिखाई दिए।

क्वॉ वैडिस 2017

क्वॉ वैडिस 2017 का आयोजन 20 जनवरी से 22 जनवरी, 2017 तक किया गया। इन तीन दिनों के दौरान बड़ी संख्या में प्रबंधन और सांस्कृतिक कार्यक्रम यथा रैम्प बर्न, कामेडी कैफे आदि का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त, विभिन्न क्षेत्रों जैसे मार्किसियन, इटरनिटीस कॉल, कॉगनोसेनसिया, सम्हावा आदि का भी आयोजन किया गया।

क्वॉ वैडिस 2017

पहली रात रॉक नाइट थी सिफर बैंड ने लाइव परफारमैंस दी जबकि बिस्वाकल्याण रथ ने दूसरी रात को कॉमेडी नाइट का आयोजन किया। अंतिम रात को श्री मोहित चौहान ने बेहतरीन कार्यक्रम प्रस्तुत किया। तीनों दिनों के आयोजन अत्यंत सफल रहे जिसमें 6000 से भी ज्यादा लोगों और सारे भारत के बी–स्कूल के विद्यार्थियों ने भाग लिया।

खेलकूद गतिविधियां

एड्रेनालाइन, आईआईएफटी की खेलकूद समिति ने अल्टीमेट वारियर्स लीग (यूडब्ल्यूएल) – वार्षिक खेलकूद उत्सव का आयोजन किया। आईआईएफटी में 10 दिन लम्बे इस आयोजन में खेलकूद केंद्र बिंदु रहे। मेलांज (सांस्कृतिक समिति) की मदद से एड्रेनालाइन ने 'बिग फाइट' में खेलकूद का आयोजन किया जिसमें संस्थान के एमबीए (आईबी) कार्यक्रम बैचों में से सेक्शनवाईज टीमों में श्रेष्ठता के लिए मुकाबला रहा।

विद्यार्थी, परिसर से बाहर खेलकूद के उपलब्ध अवसरों को भी भुनाने में कामयाब रहे हैं। संस्थान के छात्र एमडीआई गुरूग्राम और डीएमएस आईआईटी दिल्ली में टेबल टेनिस चैम्पियन रहे तथा बिमटेक नोएडा में दूसरा स्थान प्राप्त किया। बिमटेक नोएडा में क्रिकेट चैम्पियन और आईआईएफटी क्रिकेट टूर्नामेंट में दूसरे स्थान पर रहे। आईएमटी गाजियाबाद में पोकर चैम्पियन और एफएमएस दिल्ली में द्वितीय रनर्स–अप रहे। डीएमएस आईआईटी दिल्ली में बास्केटबाल और बैडमिन्टन में रजत पदक जीतने में आईआईएफटी छात्राओं के दस्ते ने उत्कृष्ट खेल प्रदर्शन किया।

बजट प्लस 5.0

आईआईएफटी को एक नई पहल, बजट प्लस के लिए श्री विवेक जोशी – मैनेजर, पीडब्ल्यूसी, प्रोफेसर अजित्वा रे चौधरी–जाधवपुर विश्वविद्यालय, श्री पल्लव गुप्ता–हैड ऑफ कारपोरेट टैक्सेसन, आईटीसी की मेजवानी करने का विशेष अवसर प्राप्त हुआ।

बजट प्लस कार्यक्रम के दौरान आईआईएफटी के प्रोफेसर रनजॉय भट्टाचार्य

आईआईएफटी के प्रोफेसर रनजॉय भट्टाचार्य ने आयोजन की मध्यस्थता की। आयोजन एक समन्वयक विद्यार्थी द्वारा बजट के अवलोकन की प्रारंभिक प्रस्तुति के साथ आरंभ हुआ। तत्पश्चात श्री चौधरी ने भारतीय अर्थव्यवस्था विशेषकर एमएसएमई सेक्टर पर बजट के प्रभाव के बारे में बताया।

अल्युमनाई वार्तालाप

आईआईएफटी कोलकाता में निम्नलिखित वार्तालाप कार्यक्रम आयोजित किए गए:–

- इमामी लिमिटेड में बिक्री रणनीति, अंतरदृष्टि और विश्लेषण के माहिर श्री रिपुन्जॉय बोस अल्युमनाई बैच 2010 ने आईआईएफटी कोलकाता परिसर का दौरा किया और विद्यार्थियों के साथ बातचीत की।

- पीएमआई इंडिया चैम्पियन श्री सुभाजीत घोष, अल्युमनाई बैच 2012 के कोलकाता परिसर में पधारने से आईआईएफटी छात्रों ने गौरवान्वित महसूस किया। उन्होंने विद्यार्थियों के साथ प्रोजेक्ट मैनेजमेंट पर अपने ज्ञान का आदान–प्रदान किया।

- अल्युमनाई बैच 2006–08 के श्री गौरव लूथरा, को–फाउंडर, व्हाट्सअप लाइफ द्वारा विपणन और व्यवसाय विकास अवसरों से संबंधित एक लाइव प्रोजेक्ट प्रारंभ किया गया।

आईआईएम–कोलकाता और आईआईएफटी कोलकाता के बीच अंतर–विश्वविद्यालय खेलकूद।

रिनेसंस ने आईआईएम–कोलकाता और आईआईएफटी–कोलकाता के बीच अंतर–विश्वविद्यालय खेलकूद प्रतियोगिता आयोजित की जिसमें आईआईएफटी–कोलकाता के विद्यार्थी आईआईएम–कोलकाता के परिसर में गए और वहां विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

क्रिकेट मानिया

रेनसंस द्वारा आईआईएफटी कोलकाता में 18–19 अक्टूबर 2016 के दौरान क्रिकेट मानिया, गली क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन किया गया।

वालीब्रॉल

आईआईएफटी कोलकाता परिसर में 4 दिसम्बर 2016 को वालीब्रॉल टूर्नामेंट का आयोजन किया गया, इसमें 8 टीमों का वालीब्रॉल चैम्पियनशिप जीतने के लिए मुकाबला हुआ।

तितनोमाची

आईआईएफटी कोलकाता की वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता तितनोमाची का शुभारंभ 01 फरवरी 2017 को हुआ। इस प्रतियोगिता की विषय–वस्तु 'गेम ऑफ थ्रोन्स' थी जो एक कड़ी लड़ाई का प्रतीक था। यह कड़ा मुकाबला प्रतिष्ठित कप के लिए चार टीमों के बीच हुआ। इस आयोजन के लिए धमाकेदार नीलामी हुई तथा मालिकों के बीच घमासान के पश्चात विभिन्न वार होर्सेस की खरीद–फरोख्त हुई। टूर्नामेंट की चार टीमें थीं – व्हाइट वाकर, स्टार्क्स, लेनिनिस्टर्स और टारगारेन्स।

निर्यात बंधु: सफलता के सोलह सोपान

डॉ. विजया कट्टी
अध्यक्षा, प्रबंधन विकास कार्यक्रम

भारत सरकार ने 2014 में मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया एवं स्किल इंडिया के तहत बहुत से कार्यक्रमों की शुरुआत की। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय तथा सहयोगी संगठनों द्वारा भी अनेक स्कीमों की शुरुआत की गई। इसी कड़ी में दिनांक 26 जून 2014 को संस्थान को डीजीएफटी की ओर से एक पत्र प्राप्त हुआ जिसमें निर्यात बंधु प्रोजेक्ट के अनुपालन हेतु होने वाली बैठक में शामिल होने के लिए निदेशक महोदय को आमंत्रित किया गया था। संस्थान के तत्कालीन निदेशक महोदय के निर्देशानुसार मैंने इस बैठक में भाग लिया।

भारतीय विदेश व्यापार महानिदेशक की अध्यक्षता में हुई बैठक में निर्यात बंधु प्रोजेक्ट के अनुपालन हेतु विभिन्न महत्त्वपूर्ण विषयों पर चर्चा हुई। आईआईएफटी के प्रतिनिधि होने के नाते मैंने संस्थान द्वारा देश भर के छोटे एवं उदीयमान निर्यातकों एवं उद्यमियों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रमों की श्रृंखला प्रारम्भ करने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया। मुझे डीजीएफटी के अधिकारियों द्वारा जल्दी से समेकित प्रस्ताव तैयार करने को कहा गया। वास्तव में भारत सरकार की मंशा अपने इस महत्त्वाकांक्षी प्रोजेक्ट के द्वारा देश भर के मध्यम, लघु एवं सूक्ष्म स्तर के उद्यमियों के पास पहुंच कर निर्यात के प्रति उनकी जागरूकता बढ़ा कर देश के निर्यात का स्तर बढ़ाने की थी। बैठक से वापस आते समय मन में हर्षोल्लास के साथ बेचैनी भी थी। मन में बार–बार आ रहा था कि इतने कम समय में इतने सारे कार्यक्रमों का प्रस्ताव तैयार करना, समय से अनुमोदन करा पाना एवं उसे डीजीएफटी से स्वीकृत करा पाना क्या संभव हो पाएगा? एमडीपी विभाग पहले से ही स्टाफ की कमी इत्यादि समस्याओं से जूझ रहा था। संकाय सदस्यों की व्यस्तता अपनी जगह पर थी।

बहरहाल, मैंने निश्चय कर लिया था कि इस प्रोजेक्ट को सफलतापूर्वक पूरा करके मानूंगी। मैंने यह भी सोच लिया था कि इसके लिए मुझे परंपरागत तरीके से हटकर काम करना होगा। अगले दिन ऑफिस आई। कुछ संकाय सदस्यों को विचार–विमर्श के लिए बुलाया। परंतु समस्या वही आ रही थी। कार्यक्रमों के स्वरूप को लेकर एक राय नहीं बन पा रही थी। फिर मैंने एक टीम का गठन किया जिसमें डा. मृदुला मिश्रा (सहायक प्रोफेसर), श्री एस बाला सुब्रमणियन (सहायक प्रणाली प्रबन्धक), श्री राकेश ओझा (सहायक, एमडीपी विभाग) एवं सुश्री तूलिका (कार्यक्रम एसोशिएट) को शामिल किया। हमने नियमित रूप से बैठकें कीं एवं अंततः 40 घंटे के ऑनलाइन कार्यक्रमों की रूपरेखा बनाई। श्री राकेश ओझा ने सम्पूर्ण श्रृंखला का बजट तैयार किया जिसे निदेशक महोदय के अनुमोदन के पश्चात डीजीएफटी की स्वीकृति हेतु भेजा गया।

हमारी खुशी का ठिकाना नहीं रहा जब डीजीएफटी ने न केवल हमारे प्रस्ताव की सराहना की, बल्कि स्वीकृति के साथ–साथ प्रथम चरण के कार्यक्रमों हेतु फंड भी जारी कर दिया। कई बार ऐसा होता है कि जब आपको कोई बड़ी सफलता मिलती है तो जिम्मेदारी का अहसास बढ़ जाता है। तो अब चुनौती थी हमें खुद को साबित करने की। मैंने अपनी टीम को बुलाया, प्रत्येक को उसकी विशेषज्ञता के अनुसार कार्यों का आवंटन किया एवं साथ ही साथ सबकी जवाबदेही भी तय की।

हमने प्रत्येक बैच हेतु न्यूनतम एवं अधिकतम क्रमशः 30 एवं 60 सीटें रखी थीं, परंतु हमें निर्यात बंधु के लिए बनाए गए पोर्टल पर कुछ ही दिन में 600 से ज्यादा पंजीकरण प्राप्त हुए। हालांकि, तकनीकी आवश्यकताओं के चलते कम प्रतिभागियों का ही चयन संभव हो सका। कार्यक्रम का आधिकारिक शुभारंभ दिनांक 9 सितंबर 2015 को डीजीएफटी के मुख्यालय में भारत सरकार की वाणिज्य सचिव सुश्री रीता तेवतिया द्वारा किया गया। संस्थान के द्वारा पहला कार्यक्रम कंप्यूटर सेल के सहयोग से दिनांक 5 अक्तूबर 2015 को प्रारम्भ हुआ।

इतने कम समय में इस कार्यक्रम की सफलता एवं लोकप्रियता के कई कारण हैं। उदाहरणार्थ, कार्यक्रम का यूजर फ्रेंडली होना। इस कार्यक्रम को कोई घर बैठे डेस्कटॉप या लैपटाप की सहायता से कर सकता है। कार्यक्रम का समय सोमवार से शुक्रवार, शाम को 6 बजे से 8 बजे का रखा गया है जिससे कामकाजी उद्यमियों को आसानी हो। कार्यक्रम की फीस ₹ 25,000/– है जिसमें प्रतिभागी को केवल

₹ 15,000 ही वहन करने हैं। शेष राशि का भुगतान डीजीएफटी द्वारा किया जाता है। 40 घंटे के इस कार्यक्रम में संस्थान के उत्कृष्ट संकाय सदस्यों के अलावा अतिथि वक्ताओं से निर्यात व्यवसाय के बारे में विस्तृत जानकारी देने के साथ–साथ, प्रतिभागियों को डीजीएफटी के अधिकारियों से संवाद करने का अवसर भी मिलता है जिससे उनकी व्यवसाय संबंधी समस्याओं का निदान हो जाता है। कार्यक्रम की समाप्ति पर प्रतिभागियों को आईआईएफटी एवं डीजीएफटी द्वारा संयुक्त प्रमाण–पत्र दिया जाता है। इसके अलावा टॉप 3 प्रतिभागियों को अवार्ड एवं सर्वोत्तम बिजनेस प्लान हेतु भी अवार्ड दिए जाते हैं।

आज हम निर्यात बंधु प्रोजेक्ट की सफलता के सोलहवें सोपान पर खड़े हैं। अब तक कुल 16 कार्यक्रम हो चुके हैं एवं हमने देश भर के कुल 698 उद्यमियों एवं निर्यातकों को प्रशिक्षित किया है। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में मेरी टीम के हर सदस्य ने अथक मेहनत की। प्रारम्भ में कुछ कठिनाइयां आईं, परंतु अपने अनन्य समर्पण भाव से प्रत्येक व्यक्ति ने अपना सर्वोत्तम प्रयास किया जिससे यह प्रोजेक्ट सफल हो पाया। आने वाले वर्षों में हमने अपने लिए विशाल लक्ष्य तय किए हैं। केवल वर्ष 2017–18 में ही कुल 11 कार्यक्रम आयोजित करने का प्रस्ताव है जिसमें 1 कार्यक्रम हिन्दी माध्यम से किया जाना है। हिंदी माध्यम से यह कार्यक्रम सप्ताहांत में किया जाना है जिससे ज्यादा से ज्यादा प्रतिभागियों को शामिल किया जा सके। आने वाले समय में हिंदी माध्यम से अधिकाधिक कार्यक्रम किए जाने की योजना है, जिससे संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन एवं कार्यान्वयन के साथ–साथ हिंदी भाषी क्षेत्रों के प्रतिभागियों की कठिनाइयां दूर की जा सकें।

अंत में, मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि निर्यात बंधु प्रोजेक्ट के अंतर्गत संस्थान द्वारा संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रमों की यह श्रृंखला डिजिटल भारत, कुशल भारत के सपनों को साकार करते हुए भारत के कोने–कोने में निर्यात के प्रति जागरूकता बढ़ाने के साथ–साथ भारत के निर्यात विकास की यात्रा में मील का पत्थर साबित होगी।

डॉ. अनूप वधावन, तत्कालीन डीजीएफटी निर्यात बंधु योजना के अंतर्गत ऑन–लाइन प्रमाण–पत्र कार्यक्रम "आयात–निर्यात प्रबंधन" का उद्घाटन करते हुए।

स्थित प्रज्ञ कैसे बनें

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
सहआचार्य, कोलकाता केंद्र

श्रीमद् भागवत् गीता के श्लोक 2.54 में अर्जुन भगवान श्री कृष्ण से पूछते हैं कि "हे भगवान, हे केशव, स्थित प्रज्ञ व्यक्ति के क्या लक्षण होते हैं, वे किस प्रकार व्यवहार करते हैं?"

श्लोक संख्या 2.55 से 2.72 में श्री भगवान ने उत्तर में कुछ इस प्रकार कहाः

'जो व्यक्ति अपनी संपूर्ण इच्छाओं का त्याग कर सकता है एवं अपने आप में ही संतुष्टि का अनुभव कर सकता है, उसे स्थित प्रज्ञ कहा जा सकता है।'– (2.55)

जिनके लिए सुख–दुख एक जैसी समस्थिति उत्पन्न करते हों अर्थात जो दुख में विचलित नहीं होते एवं सुख में अनावश्यक रूप से अत्यधिक खुशी का प्रदर्शन नहीं करते तथा जिनके राग, भय एवं क्रोध का खात्मा हो चुका है, उन्हें स्थित प्रज्ञ कहा जा सकता है। – (2.56 एवं 2.57)

जिन प्राणियों को शुभ एवं अशुभ के प्राप्त होने पर सुख या दुख का अनुभव ना हो, उनकी बुद्धि स्थिर मानी जाती है। जिस प्रकार, कछुआ अपने सभी अंगों को समेट कर अपनी देह में अन्दर खींच लेता है, उसी प्रकार एक स्थित प्रज्ञ पुरूष भी अपनी समस्त इन्द्रियों को समेट कर काबू में रखने में कामयाब होता है।

इंद्रियों का तो कार्य ही है क्रियाशील रहना एवं उथल–पुथल मचाना। मन एवं बुद्धि के प्रयोग से जिस मनुष्य ने अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण पा लिया हो, उसे अवश्य ही स्थित प्रज्ञ की संज्ञा दी जा सकती है।

श्लोक 2.66 में कहा गया है कि एक बुद्धिहीन एवं भावना रहित व्यक्ति अनुपयुक्त होता है अर्थात योग्य पात्र नहीं होता है। भावनारहित मनुष्य शांति को प्राप्त नहीं कर सकता है तथा जिस मनुष्य के जीवन में शांति नहीं होती है उसे सुख कैसे प्राप्त हो सकता है। इंद्रियों के विषयों में लिप्तता के कारण जिस व्यक्ति का मन उन इन्द्रियों के संतोष के लिए साथ निकल पड़ता है उसकी बुद्धि का हरण बिलकुल वैसे ही हो जाता है जैसे कि पानी में वायु नाव का हरण कर लेती है।

श्लोक 2.70 में मनुष्य को समुद्र से कुछ सीखने के लिए कहा गया है। जिस प्रकार अथाह जलराशि से परिपूर्ण होने पर एवं संसार के सारे जल स्त्रोतों का समुद्र में विलय होने के पश्चात भी, समुद्र अपनी अचल प्रतिष्ठा के साथ अविचलित रहता है, उसी प्रकार एक स्थित प्रज्ञ पुरूष को भी अपने आसपास एवं अंदर होने वाली इच्छाओं को अपनी बुद्धि, मन एवं चिंतन के द्वारा उसे विचलित होने से बचाना है। ऐसे व्यक्ति ही सही मायनों में शांति प्राप्त कर सकते हैं ना कि कामवासना की इच्छा से भटक जाने वाले व्यक्ति।

हर व्यक्ति स्थित प्रज्ञ बनने का प्रयास अवश्य कर सकता है। अहंकार के त्याग एवं आत्मसंतुष्टि के अनुभव के माध्यम से, शांति एवं शांति के माध्यम से असली सुख की प्राप्ति एक स्थित प्रज्ञ मनुष्य हेतु हमेशा के लिए साकार रूप ले सकती है।

विमुद्रीकरण

आठ नवंबर की घोषणा से, बड़े नोट हुए बंद।
अधिकांश मुद्रा हुई गायब, चलन में रह गई चंद।।

कदम तो उठाया गया, करने को उपचार।
काले धन से ही हुआ हो, जैसे देश में भ्रष्टाचार।।
त्राहि–त्राहि हो गई, मच गया हाहाकार।
बैंकों के सामने जब, लम्बी–लम्बी लगी कतार।।

काला धन जब नहीं मिला, तो दिया उपदेश।
भारत को उन्नत कहलाने के लिए, बनना है कैशलेश।।

"कैशलेश" का हिंदी अर्थ, खोजा जब शब्दकोष में।
पाकर "ठन–ठन गोपाल", मैं भी आ गया रोष में।।

विमुद्रीकरण की नीति ने, मचाया एक नया बबाल।
विपक्ष की नजरों में यह, बनी एक राजनीतिक चाल।।

परेशान देशवासियों, मोदीजी की नीयत पर सवालात ना करना।
मित्रों देश हित में, क्या–क्या नहीं पड़ता सहना।।

वाह रे इंसान तेरी माया, कोई समझ नहीं पाया

देशराज

आज हर आदमी इस बात से परेशान है कि उसे कोई सच्चा हमदर्द नहीं मिलता। पहले अच्छे लोग थे जो इंसानियत के हर काम में आगे रहते थे। हालांकि आज के समय में आपको हमदर्द ज्यादा मिल जाएंगे पर शायद आपको सच्चा हमदर्द कोई भी न मिले क्योंकि सभी ने मुखौटे लगा रखे हैं। यहां हर कोई बनावटी चेहरा लिए घूम रहा है। सबके चेहरों पर मुखौटे हैं। व्यक्ति बाहर से दिखता है, वैसा अंदर है नहीं। जैसा वह अंदर है, बाहर वैसा दिखना नहीं चाहता। चेहरों की मानो मंडी लगी हुई है। चेहरों के इस बाजार में आदमी खोजना मुश्किल है। आजकल बस आकृतियां मिलती हैं, आदमी नहीं मिलते। जो मिलते हैं उन्होंने मुखौटे लगा रखे हैं, इसलिए प्रमाणिकता के साथ कहा नहीं जा सकता कि वे आदमी ही हैं। मुखौटे के पीछे जो चेहरा छिपा है उसे पहचानना मुश्किल है।

अब तक ऐसा कोई यंत्र नहीं बना है जिससे असली चेहरा पहचाना जा सके। बनावटी चेहरों का सर्वत्र साम्राज्य है। इसलिए इस भीड़ में असली चेहरे ढूंढना मुश्किल है। ढूंढें भी तो कैसे? ढूंढने वाले भी अधिकांश ऐसे हैं जिन्होंने खुद ही मुखौटे लगा रखे हैं। हम सबको आदत हो गई है झूठे चेहरे लगाकर जीने की। बनावटी चेहरे लिए जी रहे हैं, घूम रहे हैं और असली चेहरों को ढूंढने की कोशिश भी करते रहते हैं।

कोई सोचता है कि मंदिर, गुरुद्वारे या मस्जिद में जाने वाले तो असली चेहरे के साथ जाते होंगे। धार्मिक सभा–सत्संग में जाते समय तो मुखौटा घर पर उतार कर जाते होंगे क्योंकि कहते हैं भगवान के पास झूठे चेहरों के साथ नहीं जा सकते। हम धार्मिक स्थलों या सत्संग प्रवचन में जाते हैं तो समझ लेते हैं कि हम ईश्वर के पास पहुंच गए हैं। यह नहीं समझ पाते कि जो मुखौटा हमने लगा रखा है वह जब तक उतारेंगे नहीं तब तक हम कहीं नहीं पहुंचेंगे, भगवान की तो बात बहुत दूर की है। मंदिर, प्रवचन, भजन संध्या में उपस्थित होकर कोई भी व्यक्ति दूसरों के मन में इंसान होने का भ्रम तो पैदा कर सकता है परन्तु इंसान तभी हो सकता है जब वह मुखौटा उतार कर फेंक दे। अंदर और बाहर के भेद को मिटा दे ।

एक व्यक्ति बाहर से बड़ा सौम्य दिखाई देता है, चेहरे पर मुस्कान लिए, आदर भाव व्यक्त करते हुए आपसे विनम्रता से पेश आता है परन्तु उसके मन में आपके प्रति क्या भाव हैं, वह पहचानने के लिए आपके पास कोई मशीन नहीं है, ऐसे में आप उसे एक सभ्य, अच्छा और भला इंसान ही कहेंगे। एक व्यक्ति कभी राम मंदिर जाकर चंदन का टीका लगाता है, एक त्यौहार पर भंडारे लगा कर लोगों को खाना खिलाता है, कभी किसी भजन संध्या में जाकर झूम झूमकर नाचता है, कभी किसी प्रवचन में घंटे भर बैठकर प्रवचन सुनता है, किसी से दो मीठे बोल बोलता है। तो यों लगता है मानो इससे बढ़िया आदमी क्या होता होगा परन्तु असल जिंदगी में, अपने ही घर–परिवार में उसका रूप दूसरा होता है। सभी की बेइज्जती करना उसके स्वभाव में है, अहंकार और अक्खड़पन में वह पूरा डूबा है, बड़े–बुजुर्गों का आदर करना उसने सीखा नहीं, हर दम गुरूर में तमतमाया रहता है। यह उसका असली चेहरा है परन्तु इससे दुनिया वाकिफ नहीं होती। जब वह बाहर निकलता है तो मुखौटा लगाकर निकलता है, नकली चेहरा लगाकर निकलता है। उसे पहचान पाना नामुमकिन है। यह स्वभाव की बात हुई। यह स्वभाव का मुखौटा है।

इसी प्रकार उदारता, दानवीरता का मुखौटा लगाए अनेक लोग घूमते हैं। कोई व्यक्ति विद्वान होने का नकली चेहरा लगाए है। कोई समाजसेवी होने का मुखौटा पहने है। कोई धर्मात्मा होने का चेहरा लगाए हुए है। हर कोई असलियत छुपाने में लगा है। पूरी सावधानी बरत रहा है कि किसी को असलियत पता न लग जाए। जिसे बाहरी तौर पर हम धर्मात्मा समझे बैठे होते हैं, कभी उसकी पोल खुलती है तो पता लगता है कि वैसी दुष्टात्मा तो ढूंढे नहीं मिलेगी। कोई समाजसेवी बना फिर रहा है, असल में उसने खुद की सेवा करने का ढंग ढूंढ लिया है, समाजसेवा तो उसके लिए ढोंग है। कोई बाल या समाज कल्याण की, कोई महिला कल्याण की संस्था चला रहा है, बाद में कोई पुलिस केस बनता है तो पता चलता है कि वह कैसे–कैसे कल्याण कर रहा था। हाल ही में पकड़े गए बाबा इसका उदाहरण हैं। कोई अनाथ आश्रम का पैसा खा रहा है, कोई वृद्धाश्रम के नाम पर अपना घर भर रहा है, कोई ऐय्याशियां ही कर रहा है।

परन्तु सब लगे हैं, अपने–अपने ढंग से। सब ने मुखौटे पहन रखे हैं। पहचान छिपी है। बाहर नकली चेहरा है, अंदर का चेहरा बाहर दिखाई नहीं देता ।

ऐसा नहीं है कि सब के सब लोग नकली हैं कुछेक भले लोग असली चेहरे में सामने आते हैं परन्तु अधिकांश लोग नकली चेहरा लगाकर घूम रहे हैं, तो बात उन्हीं की की जाती है। कोई एक व्यक्ति नकली चेहरा लगाकर घूम रहा है तो वह समझता है कि जिस व्यक्ति से वह मिल रहा है, वह तो असली रूप में ही होगा। यह एक भ्रम मात्र है। दरअसल वह भी नकली चेहरा लगाए घूम रहा होता है। जो दिख रहा है वह उसका मुखौटा है। सब एक–दूसरे को धोखा दे रहे हैं। हम अगर किसी को धोखा दे रहे हैं तो हमें भी कोई धोखा दे रहा है। हर व्यक्ति जानता है कि वह अपनी असलियत छुपाकर दूसरे को धोखा दे रहा है। व्यक्ति को लगता है कि जैसा व्यवहार वह बाहर कर रहा है, लोगों के सामने जैसा पेश आ रहा है, दुनिया उसे ही हकीकत समझेगी परन्तु मनुष्य यह भूल जाता है कि असलियत बहुत ज्यादा दिन छिपती नहीं। ढोंग उजागर होता ही है। अगर हम किसी व्यक्ति से नकली व्यवहार करते हैं, यह दर्शाते हैं कि हम उसे आदर–मान दे रहे हैं परन्तु असल में हमारे मन में उसके प्रति कोई आदर नहीं है, दुनिया को दिखाने के लिए हम ढकोसला कर रहे हैं तो एक न एक दिन सच्चाई सामने आएगी। आती ही है।

जिस दिन ऐसा होगा, उस दिन क्या होगा? कुछ नहीं होगा क्योंकि हम अगर असली होते तो ऐसा करते ही नहीं, जब नकली चेहरा लगाए सब किए जा रहे हैं तो किसी भी हालात का डर भी कहां है? बेशर्मी ओढ रखी हो तो डर भी कैसा? दूसरों के साथ व्यवहार की तो छोड़िए, लोग अपनों को भी नहीं बख्सते। अपनों के साथ भी मुखौटा लगाकर पेश आते हैं। असल में ऐसे लोग दूसरों को नहीं, खुद को धोखा दे रहे होते हैं ।

यह सच है कि किसी भी व्यक्ति को लाख समझाओ, वह नहीं समझता। जब तक व्यक्ति के खुद के साथ नहीं बीतती, जब तक वही सब कुछ खुद के साथ नहीं होता, जो दूसरों के साथ वह करता है, तब तक उसकी सेहत पर कोई असर नहीं पड़ता। हम जिंदगी भर दूसरों पर पत्थर फेंकते रहते हैं, दुर्व्यवहार करते रहते हैं, गालियां देते रहते हैं, बेवकूफ बनाते रहते हैं, दिल दुखाते रहते हैं, धोखा देते रहते हैं परन्तु यही सब जब हमारे खुद के साथ होता है तब आंखें खुलती हैं। मुखौटा ओढे हुए, नकली चेहरे लगाए हुए लोगों के साथ ऐसा ही होता है ।

हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।

– डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

हमारा लाइफस्टाइल– हरी, करी और वरी

(वीडियोकॉन के चेयरमैन वेणूगोपाल धूत एक चिंतक तथा आध्यात्मिक व्यक्ति के रूप में जाने जाते हैं। यही वजह है कि उन्हें औद्योगिक जगत् में कॉरपोरेट योगी के रूप में जाना जाता है। जानिए उनकी आध्यात्मिक यात्रा के अनुभव।)

प्रदीप कुमार खन्ना

इंसान को चिंतातुर प्राणी कहा जाता है। बिना चिंता के कोई भी इंसान नहीं होता। इस चिंता का हमारे शरीर पर, मन पर, दिमाग पर क्या असर होता है, यह मानसशास्त्र के अभ्यासकों का सदा ही अनुसंधान का विषय रहा है। कई प्रयोगशालाओं में इस पर प्रयोग किए जा रहे हैं। मन में चिंता हो, मानसिक स्थिति अनिश्चित हो तो शरीर के विभिन्न अंगों पर उसका क्या असर होता है, इस पर अमरीका की एक प्रयोगशाला में अध्ययन किया जा रहा है। एक पिंजरे में एक बंदर रखा है। पिंजरा खास तरीके से बनाया गया है। उसमें दो बटन हैं – एक सफेद और दूसरा काला। काला बटन दबाने पर बंदर को कुछ खाने को मिलता है। यह बात सबसे पहले बंदर को सिखाई गई। दूसरे पड़ाव पर पिंजरे का सफेद बटन दबाने पर बंदर को बिजली का झटका लगा। जल्द ही बंदर सीख गया कि झटके की सजा टालनी हो तो सफेद बटन को दबाना नहीं चाहिए। तीसरे पड़ाव पर काला बटन दबाने पर खाने की बजाय झटका मिलता है और सफेद बटन दबाने पर झटके के बजाय खाने को मिल सकता है। इस बंदर ने यह बात भी अपने पल्ले बांध ली ।

इस प्रयोग की आखरी सीढ़ी पर ऐसी विशेष योजना बनाई गई कि दोनों बटनों में से कोई भी बटन दबाने पर कभी झटका लगेगा तो कभी खाने को मिलेगा। अब बंदर की बुद्धि को इसका अंदाजा लगाना मुश्किल हो गया कि कौन सा बटन दबाने पर झटका लगेगा या खाना मिलेगा। बंदर गया। भ्रमित मनःस्थिति के कारण उसकी गतिविधियाँ धीमी पड़ गईं। आँखों की चमक धुंधली पड़ गई। वह हताश हो गया और अंत में उसकी मौत हो गई। उसका शवविच्छेदन करने पर पता चला कि उसके पेट में अल्सर हो गया था। अब यह सिद्ध हो गया है कि सम्भ्रमित अवस्था के कारण अल्सर हो सकता है। अब आप यह अच्छी तरह समझ गए होंगे कि हमारा मन या बुद्धि सम्भ्रमित हो, विचारों में स्पष्टता न हो, मन में सदा चिंता हो, अचूक निर्णय लेने में हम असमर्थ हों तो हमारी हड़बड़ाहट बढ़ जाती है। ऐसे कई उदाहरण, जरा बारीकी से देखें तो हमारे आस–पास भी हमें दिखाई देते हैं।

प्रकाश एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में मैनेजर के पद पर काम कर रहा है। आजकल एक बड़े ही महत्त्वपूर्ण प्रॉजेक्ट पर उसकी कंपनी में काम चल रहा है। ऐसे संघर्षपूर्ण मौके पर एक दिन उसे फोन आया कि काम करते हुए एक मजदूर दुर्घटनाग्रस्त हो गया है और बाकी के मजदूर नारेबाजी कर रहे हैं, जिससे तंग स्थिति निर्माण हो गई है। पाँच मिनट बाद ही उसे दूसरा फोन आया, जो उसके वरिष्ठ अधिकारी का था। काम की गति बढ़ाकर प्रॉजेक्ट जल्दी से जल्दी पूरा करने का आदेश उसने दिया। अब उसके सामने दोहरी समस्या है। स्थिति में सुधार नहीं हुआ तो हड़ताल हो सकती है और मजदूरों के सामने झुक जाए तो वे मैनेजमेंट को कमजोर मानकर अपनी माँगें बढ़ा देंगे। वास्तव में यह जरूरी है कि प्रकाश तुरंत निर्णय ले, किंतु वह तो अपना सिर पकड़ कर सुन्न हो कर बैठ गया है। उसकी अस्वस्थता बढ़ती जाती है। सीने में दर्द महसूस होने लगता है। कंपनी के डॉक्टर को बुलाया जाता है। सब कुछ नॉर्मल है। डॉक्टर कहते हैं कि प्रकाश को अल्सर है। चिंता तो हमारे जीवन का अविभाज्य तथा आवश्यक हिस्सा है। कहते हैं कि चिंता यानी हमारे मन की काल्पनिक डर की भावना, किंतु चिंता और डर में बहुत अंतर है। डर तो प्रत्यक्ष आपत्ति की प्रतिक्रिया है और चिंता आपत्ति की अपेक्षा है। चिंता क्यों निर्माण होती है? चिंता के कारण क्या वास्तव में गंभीर बीमारी हो सकती है। इन्हीं प्रश्नों के उत्तर हमारी मानसिकता में छिपे हुए हैं। हमारी आज की लाइफस्टाइल हरी, करी और वरी है – अर्थात् सदा शीघ्रता, चटपटा मिर्च मसालोंवाला खाना और चिंता करते रहना।

इसी कारण हम कदम–कदम पर दुविधा की स्थिति और मानसिक संघर्ष का अनुभव करते हैं। कई बार निर्णायक मौके पर दूसरों का मशविरा हमारे लिए बेकार सिद्ध होता है और चिंता की मात्रा बढ़ती जाती है। इसका प्रतिकूल असर हमारी कार्यक्षमता तथा आपसी रिश्तों पर होता है। चिंता कम करने का सबसे अच्छा प्रतिबंधक उपाय यह है कि हम आत्मविश्वास बढ़ाएं और सकारात्मक प्रतिमा बनाए रखें। अपनी कमियों को हमेशा छिपाकर रखना और उनके खुल जाने पर चिढ़ना या सबको अपना विरोधी मानना, तो बीमारी के लक्षण हैं। चिंता को कम करने के लिए जरूरी है कि हम अपना मूल्य–मापन सही तरीके से करें। अपने काम की पद्धति, गति तथा लक्ष्य का शांति से विचार कर काम में अनुशासन लाने की कोशिश आवश्यक है। कई बार संकोच के कारण हम काम अपने पर थोप लेते हैं। इसे टालना जरूरी है। बिना मतलब का तनाव, हड़बड़ी, भाग–दौड़ कम करनी चाहिए। यह तय करना आसान है कि हम खुश रहें या चिंताग्रस्त रहें। इसके लिए हमें अपने पास एक ऐसा सिक्का रखना चाहिए जिसके दोनों तरफ 'खुश' लिखा हुआ हो।

साभारः वेणूगोपाल धूत

संस्मरण

एस. बालासुब्रमणियन

प्रत्येक मनुष्य अतीत और वर्तमान की वास्तविकता से रूबरू होता है जबकि भविष्य एक कल्पना होती है। इन तीनों अवस्थाओं में भी अतीत के घटनाक्रम हमें अधिक उद्वेलित करते हैं। इसी कड़ी में हमारे साथी श्री बनवारी लाल जी के देहावसान के समाचार ने श्री बाला जी को उनके साथ हुई बातचीत के कुछ अंश साझा करने के लिए विवश कर दिया। उनके अपने शब्दों में बातचीत के वो अंश निम्न प्रकार हैं:–

लोग कहते हैं कि न करो कंपनी से पर अपने काम से प्यार करो। पर मैं तो काम से ज्यादा प्यार करता हूँ कर्मचारियों से। क्योंकि कर्मचारी ही मुझे सिखाते हैं काम को कैसे प्यार से करना है।

ये महान व्यक्ति ऐसे एक कर्मचारी थे वो मुझे सिखाये थे कंप्यूटर से कैलकुलेटर ज्यादा तेज है और उससे भी तेज था उनका दिमाग। वह नेहा जैसे टॉपर से भी अधिक अंक प्राप्त करते थे वित्त से संबंधित मामलों में।

पिछले अक्तूबर में एक दिन उससे बात कर रहा था।

मैं – आप बीड़ी मत पीना।
वह – क्यों?
मैं – धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है।
वह – (हँसने लगे) हाँ हाँ। अच्छा। अच्छा। बस साठ या पैंसठ साल बस।
मैं – नहीं नहीं, ये क्या बात हो गयी? आपको बहुत साल जीना है। हाँ, आपके रिटायरमेंट के बाद और पैंसठ साल। ना ना, और आगे अस्सी साल और।
वह – (फिर हँसने लगे) हाँ हाँ। ठीक है बाला साब।
मैं – नहीं। साब मत बोलना।
वह – नहीं। बीड़ी तो फिर भी मैं कोशिश करके छोड़ सकता हूँ, पर ये तो मेरे से नहीं हो सकता है। मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है। हा हा। (फिर हँसने लगे)
मैं – नहीं। ये भी कोशिश करिये जी। वैसे बाला भी चलता है। हे भगवान! फिर एक और बीड़ी। बस करिये प्लीज।
वह – (जोर से हँसने लगे) हा हा। आप तो मेरे बेटे जैसे हैं।
मैं – हाँ! बेटे जैसे। इसलिए तो बोलता हूँ न और न बोलना है करके भी।
वह – क्या?
मैं – इसलिए बोलता हूँ बीड़ी मत पीना और साब मत बोलना।
वह – (फिर हँसने लगे) हा हा । ठीक है । ठीक है । कोशिश करूँगा।
मैं – कौन सा?
वह – दोनों।
मैं – पक्का?
वह – हाँ हाँ। पक्का पक्का, हाँ हाँ। कोशिश करूँगा। हा हा। (फिर हँसने लगे)

अब हमें छोड़ के कहाँ चले गए हो साब जी?
आप नहीं हैं इसलिए कई नये नये लोग टॉपर बन रहे हैं।
और टॉपर बन रहे हैं।
बहुत कम अंक पाने पर भी।

हमें छोड़ के कहाँ चले गए हो साब जी?
हाँ, मुझे ये भी देखना है कि आप कोशिश किए या नहीं।
ठीक है, जल्दी ही आपके पास आके देखूंगा बनवारी लाल जी।

अहंकार

भुवन चन्द्र

हे मानव इस धरती पर,
तू ईश्वर का अंश है।
तू ही ईश्वर क्यों बनता है,
क्यों तुझको इसका भ्रम है।।

अहंकार की ज्वाला से अच्छी,
प्रेम की दिया बाती है।
प्रेम से ऊपर कुछ भी नहीं,
इतिहास भी इसका साक्षी है।।

पद और पैसे के बल पर,
कहाँ दिल जीते जाते हैं।
प्रेम की एक धारा से तो,
मधुबन सींचे जाते हैं।।

तू माटी का पुतला है,
इस बात की तुझको समझ नहीं।
तू उसके चरणों की धूल मात्र है,
इसका तुझको इलम नहीं।
इसलिए मैं यह कहता हूँ कि
तू ही ईश्वर क्यों बनता है।।

रोज उगते सूरज के साथ–साथ,
तू जाता है अपने अंत के निकट।
क्योंकि पलों का हिसाब–किताब,
रखता है वो हर एक पल।।

तू किस गुमान में जीता है,
इसका तुझको पता नहीं।
स्मरण रहे कि इस धरती पर
तू ही ईश्वर क्यों बनता है।।

सार्वजनिक परिवहन में मुस्कान एवं वार्तालाप

हरि माया गुरूंग

हमें अपने दैनिक जीवन में लगभग प्रतिदिन ही सार्वजनिक परिवहन साधनों के माध्यम से अपने कार्यों को निपटाने एवं कार्यालय के लिए जाना–आना पड़ता है। मुझे भी अपने कार्यालय में उपस्थित होने के लिए प्रतिदिन सार्वजनिक परिवहन द्वारा सप्ताह में पाँच दिन जाना–आना पड़ता ही है। बस में सफर करते समय, प्रायः मैं देखती एवं महसूस करती हूँ कि सह–यात्री अत्यधिक हड़बड़ी, परेशानी, चिन्ता, उदासी एवं गुस्से की भाव–भंगिमा को अपने चेहरे पर विराजमान कर घर से निकलते हैं ।

लोग वाहन में बैठते ही सबसे पहले अपने बैग या जेब से मोबाइल फोन बाहर निकालते हैं और व्हाट्स ऐप, एसएमएस देखने में व्यस्त हो जाते हैं। इससे निपटने के पश्चात, अपने दोनों कानों में हैंड्स फ्री की लीड ठूंसकर वीडियो देखने या एफएम, रिकार्डिड संगीत आदि सुनने लगते हैं। वे इसमें इतने तल्लीन हो जाते हैं कि उन्हें यह भी ध्यान नहीं रहता कि उनके साथ यात्रा कर रहे यात्रियों की क्या स्थिति है। वे पूर्णतया उनकी उपेक्षा कर देते हैं।

आजकल की परिस्थितियों एवं विश्व के घटनाक्रम को देखते हुए यह उचित भी है कि हम स्वयं को व्यस्त रखते हुए कुछ नया करें और तरक्की करें जिसके फलस्वरूप हम एवं देश प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। चूँकि जाने–आने में बहुत कम समय लगता है और इतने कम समय में कुछ खास किया नहीं जा सकता तो इस समय को हम अपने सह–यात्रियों के साथ वार्तालाप कर सदुपयोग कर सकते हैं।

यदि उनके साथ हमारी जान–पहचान नहीं है तो हम अपने चेहरे पर एक सुन्दर सी मुस्कान तो ला ही सकते हैं। खूबसूरत सी मुस्कान परिचित एवं अपरिचित दोनों को ही आकर्षित करती है। मुस्कुराने से आप कुछ न कहते हुए भी बहुत–कुछ कह जाते हैं। इससे आपका समय तो सुख–शांति एवं चैन से बीतता ही है, साथ ही अजनबी सह–यात्री का दिन भी मुस्कानमय एवं सुन्दर हो जाता है।

आप जब अपने साथ यात्रा कर रहे लोगों के साथ किसी समस्या पर बातचीत करते हैं तो उसका फायदा आपको निःशुल्क मिलता है। आप न केवल उस समस्या की गहराई तक जाते हैं वरन् यात्रा के दौरान उसका कुछ–न–कुछ समाधान भी निकलकर सामने आता है। इस प्रकार जाने–अनजाने सह–यात्री आपकी मदद करने के साथ–साथ आपकी उदासी को भी दूर कर देता है। कुछ समय के लिए आपका ध्यान समस्या से हट जाता है और आपका चेहरा खिल जाता है। आपके मुखमंडल पर भी मुस्कान विराजमान हो जाती है।

सिर्फ बातचीत करने एवं विचारों द्वारा समस्याओं के आदान–प्रदान से ही हम उन परेशानियों एवं विफलताओं, जिनका प्रभाव हमारे चेहरे पर दृष्टिगोचर होता है, के बोझ से भारहीन हो जाते हैं । हमारा मन हल्का हो जाता है । मैंने यह स्वयं अनुभव किया है कि जब हम अपने सह–यात्रियों से बतियाते हैं तो समय का पता ही नहीं चलता है।

दिल्ली में तो ट्रैफिक जाम की समस्या आम है । यहाँ किसी न किसी क्षेत्र में कोई न कोई निर्माण कार्य, किसी अति विशिष्ट व्यक्ति की आवा–जाही, धरना–प्रदर्शन एवं सभा–समारोह का आयोजन होता ही रहता है जिसके कारण ट्रैफिक जाम की समस्या का सामना प्रतिदिन करना पड़ता है। लेकिन सह–यात्रियों के साथ वार्तालाप करते हुए आप कब अपने गंतव्य तक पहुँच गए, कुछ पता ही नहीं चलता है। कभी–कभी तो मैंने ऐसा भी देखा है कि कुछ दैनिक यात्री वार्तालाप करते समय इतने मशगूल हो जाते हैं कि उन्हें पता ही नहीं चलता है कि उनका स्टॉप कब आ गया। तब उन्हें ड्राइवर से अनुरोध कर बस बीच में रूकवाकर या अगले स्टॉप पर उतरना पड़ता है।

वर्तमान दौर में, हर कोई किसी न किसी समस्या से जूझ रहा है। आजकल का समय संघर्षों का दौर है जिसमें लगभग प्रत्येक व्यक्ति संघर्षशील है। यदि हम सभी एकजुट हो जाएं, एक–दूसरे के साथ सहयोग एवं समर्थन करें तो मेरा विश्वास है कि हमारी सफलता के अवसर स्वतः ही बढ़ जाते हैं। ऐसी स्थिति में, हम अपने लक्ष्य को सरलता से पा सकते हैं।

अपना यह प्रयास हमेशा होना चाहिए कि हमारे चेहरे पर एक मुस्कान थिरकती रहे। इससे न केवल दिल–दिमाग शांत रहता है वरन् आपके सामने बैठे व्यक्ति को भी सुकून मिलता है। इससे आप एक आत्मविश्वास से भर जाते हैं। जब हम किसी व्यक्ति से बात करते हैं तब वह आत्मविश्वास हमारे चेहरे पर स्पष्ट झलकता है।

यूरोपीय देशों के लोगों का व्यवहार मित्रवत् होता है और उनके चेहरे पर मुस्कान खिली रहती है। वे सदैव सहायता के लिए तत्पर रहते हैं। एक–दूसरे के प्रति उनके व्यवहार से, हमें सीखने की जरूरत है। हमारी ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की भारतीय विचारधारा का आशय है कि संपूर्ण पृथ्वी पर रहने वाले मानव जन एक परिवार के सदस्य हैं। यह भारतीय संस्कृति एवं जीवन–मूल्यों का एक–दूसरे को एक परिवार की तरह समझने की विशेषता पर बल देता है।

ऊर्जा व्यवहार और हमारी संस्कृति

विवेक कुमार दीक्षित
एमबीए (आईबी)
2014-17

'भारतीय सौर ऊर्जा निगम द्वारा पुरस्कृत लेखद्ध

सम्पूर्ण विश्व में ऊर्जा ही प्रमुख है। विश्व के अधिकतर भागों में अशांति का मुख्य कारण प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से भौतिक ऊर्जा स्रोतों पर अधिपत्य स्थापित करना है। वह चाहे धर्म, क्षेत्र, जाति, पंथ या अन्य किसी भी नाम की आड़ में हो। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। हम सभी से समाज बना है। यह हम सबका कर्तव्य है कि अपनी जीवन पद्धति में नियंत्रण कर सभी जीवित व निर्जीव चीजों की देखभाल करें। सामान्यतः ऊर्जा उपयोग एक व्यावहारिक प्रक्रिया समझी जाती है, जब कि हम ऊर्जा का प्रयोग नहीं करते, हम केवल एक बड़े ऊर्जा क्षेत्र का एक नन्हा सा भाग भर हैं। हमारा श्वास लेना भी एक स्वचालित ऊर्जा प्रक्रिया है।

ऊर्जा दो प्रकार की होती है–एक है वैचारिक ऊर्जा और दूसरी भौतिक ऊर्जा, प्रथम विचार उत्पन्न होता है और उस के बाद भौतिक रूप में सृजन होता है। विचार की गति इतनी अधिक है कि उस का मापन अकल्पनीय है। जब कि भौतिक दुनिया में सब कुछ गतिमान होते हुए भी विचार की तुलना में स्थूल के समान है। हम अपने विचारों से अपने आस–पास की भौतिकीय दुनिया को सुंदर बनाते हैं। अगर हम अपने विचार बदल सकें तो एक अच्छी दुनिया बनाने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम होगा। सिंह शरीर रूप में विद्यमान ऊर्जा की पराकाष्ठा है। मानव शरीर रूप में वैचारिक ऊर्जा की पराकाष्ठा है। फिर भी हम अपने गलत कर्मो से उस ऊर्जा क्षेत्र में व्यवधान पैदा कर रहे हैं।

छिति जल पावक गगन समीरा।
पंच रचित अति अधम सरीरा।।*

ऊर्जा पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश इन पांच रूपों में सन्निहित है। लेकिन छठा तत्व समय भी है। ऊर्जा का न तो क्षय किया जा सकता है और न उसे बनाया जा सकता है। केवल समयानुसार उपयोग लायक रूप परिवर्तन किया जा सकता है। तेल हो या विद्युत, उसके परिवर्तन एवं संचरण में ही अधिक ऊर्जा व्यय हो जाती है। अधिकतर सभ्यताएं नदियों के समीप ही विकसित हुई थीं। इन सभी में खेती योग्य भू–भाग, पालतू जानवर व नदी जल रूपी संसाधनों की ऊर्जा स्रोतों की अधिपत्य स्थापना थी।

किसी भी स्थान की संस्कृति विकसित होने के लिए देश, काल, भौगोलिक वातावरण और राजनीतिक परिस्थितियों पर निर्भर करती है। ऊर्जा उपयोग के तरीके सभी स्थानों पर एक समान नहीं हो सकते।

ऊर्जा उपयोग का सर्वाधिक विकृत रूप अगर हुआ है तो उस का कारण हम ही हैं। हमारी मानसिकता सर्व जन हिताय से केवल स्व हिताय की ओर चली है। विलासितापूर्ण उत्पादों को बनाने में प्राकृतिक संसाधनों का सर्वाधिक खर्च होता है जो कि सोशल कौस्ट भी है। इस का मुख्य कारण 'मैं' और 'मेरा' की भावना का बलवती होना है। मेरा घर, मेरी कार, मेरी संतति इत्यादि। भारत के परिप्रेक्ष्य में देखें तो इसका कारण पिछले एक हजार वर्ष में हुए अधिकाधिक युद्ध, हमले, राजनीतिक बदलाव इत्यादि हैं। जिन्होंने लोगों के अंदर असुरक्षा की भावना को बल दिया और उन सब चीजों से अपने आपको बचाने की आदत बन गई। धीरे–धीरे, केवल अपने लिए सोचने की भावना हमारी संस्कृति बन गई। फिर भी हम आज से 300 वर्ष पूर्व तक "परहित सरिस धर्म नहिं भाई" का पालन किया करते थे और रही–सही कसर को मैकाले की शिक्षा नीति, औद्योगिकीकरण, तकनीकी विकास और हर वस्तु तथा सेवा के बाजारीकरण ने और पूरा कर दिया।

कुछ प्रश्न अभी भी विचारणीय हैं कि क्यों हमने यात्रा में व्यक्तिगत कार संस्कृति को बढ़ावा दिया? क्यों हमने सार्वजनिक परिवहन प्रणाली को कमजोर हो जाने दिया? क्यों हमने व्यक्तियों को आवश्यकता से अधिक ऐसे संसाधनों का व्यक्तिगत प्रयोग करने की छूट दी जिसने उन की विचारधारा को बदल दिया? अत्यधिक ऊर्जा उपयोग करके हमने पारिस्थिति तंत्र के सामंजस्य को बिगाड़ दिया है। विकास के रूप में हम चौड़ी–चौड़ी सड़कें, उच्च गति की रेलगाड़ी, धुआँ उगलते हुए बड़े–बड़े कारखाने, सड़कों पर भागती छोटी–छोटी कारें देखते हैं। वह सब किस के लिए? हम जैसे अविकसित मानवों के लिए? विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जो कि हम सभी को ज्ञानी बनाती है। ज्ञानी व्यक्ति के क्रिया–कलाप स्वतः ही एक सामान्य व्यक्ति से अलग हो जाते हैं। हमें आवश्यकता है व्यक्तियों का ऐसा विकास करने की जिसकी वजह से उनके जीवन

* *चौपाई स्रोत राम चरित मानस*

में आवश्यकतानुसार ऊर्जा उपयोग संस्कृति विकसित की जा सके। अगर हम इसमें सफल हो गए तो हमें भौगोलिक भौतिकीय तत्वों में रमने की आवश्यकता कम ही रह जाएगी।

- हमें ऊर्जा शिक्षा लेकर एक स्व नियंत्रण निकाय स्थापित करने की आवश्यकता है।
- हमें एक ऐसा सिस्टम विकसित करने की आवश्यकता है कि जिससे कम आवागमन हो।
- हमें एकाकीकरण से हट कर, सामूहिक फल आशातीत कार्य–संस्कृति को बढ़ाने की आवश्यकता है।
- हमें कुल, जाति, धर्म परम्परा के नाम से तटस्थ सामाजिक जीवन मूल्यों के साथ पारिस्थितिक मूल्यों को भी पुनर्स्थापित करने की आवश्यकता है।

दिन–प्रतिदिन बढ़ती जनसंख्या का दबाब, अब हमें ऊर्जा उपयोग के तौर–तरीकों को लेकर सोचने के लिए मजबूर कर रहा है। व्यक्तिगत की जगह सामूहिक तौर पर सब से अच्छा व सरल तरीका है।

क) सर्वप्रथम अच्छी प्रकार से जानकारी और अपनी दिनचर्या में प्रत्येक प्रकार की बचत के तौर–तरीकों का कड़ाई से पालन करना जिस से हम संरक्षित ऊर्जा स्रोतों को नई पीढ़ी को देकर जा सकें।
ख) परिवर्तित ऊर्जा के स्थान पर संसाधनों का प्राकृतिक रूप में प्रयोग।
ग) व्यक्तिगत साज–ओ–सामान युक्त या विलासितापूर्ण जीवन पद्धति को कम कर संयमित जीवनचर्या का निर्वहन।

रेगुलेट्री तरीकों में हम कुछ अन्य बदलाव भी कर सकते हैं।

1. परिवर्तित ऊर्जा स्रोतों (तेल और विद्युत) में व्यक्तिगत विपणन में राशनिंग करना व सामूहिक में छूट देना।
2. ईंधन के आयात लक्ष्य निर्धारित करना व क्रमशः प्रतिवर्ष कम करते जाना।
3. कम कीमत वाले नवीन ऊर्जा स्रोतों पर शोध को बढ़ावा देना।
4. क्षेत्रीय उपलब्ध साधनों के आधार पर अलग–अलग नियमावली तय करना।
5. क्षेत्रीय रोजगार को बढ़ाना।

उदाहरणतः ये एक प्रकार का अज्ञान ही है कि 5–10 किमी तक की छोटी दूरियों में भी खाने, पीने की वस्तुओं या पीने योग्य पानी की बड़ी बोतलों को हम पेट्रोल या डीजल के वाहनों से ढोते हैं (ये ऋणात्मक को–रिलेशन प्रतीत होता है) क्योंकि कम समय में अधिक टर्नओवर या अधिक लाभ के लिए हम ऐसा करते हैं। सड़कों पर बेरोजगार युवक रोजगार की तलाश में वाहनों से निकला धुआँ श्वास में पी–पी कर घूम रहे होते हैं। हम नगरों में अधिकाधिक साइकिल वाहन रिक्शा के प्रयोग कर, रोजगार सृजन कर सकते हैं जिसमें 10–12 किमी तक दूरी तय की जा सकती है और ऊर्जा संसाधन बचेंगे सो अलग।

विलासितापूर्ण जीवन–शैली उच्च व्यक्तिगत व उच्च सोशल कौस्ट है, जब कि सादा जीवन निम्न व्यक्तिगत व निम्न सोशल कौस्ट है। सामूहिक जीवन शैली का एक भारतीय उदाहरण पंजाब की खत्म हो चली सांझा चूल्हा व्यवस्था है। जिसमें एक साथ खाना बनाने के साथ–साथ एक दूसरे से मिल–जुल कर रहने की व्यवस्था भी है। जिसमें एकाकी भावना (जो कि असुरक्षा की भावना को बढ़ाती है) से हट कर सामूहिक जीवन भावना को बढ़ाकर सुरक्षित वातावरण बनाने की है। अगर हम कम आलस्य, कम लालच और समय को ध्यान में रखने की कार्य–संस्कृति को बढ़ाएंगे तो हमें भविष्य में कम ऊर्जा संसाधनों की आवश्यकता होगी। यह लेख हमें प्राकृतिक संसाधनों के दुरुपयोग से इतर सदुपयोग करने और वैकल्पिक ऊर्जा व्यवहार को अपनाने का संकेत भर है। बढ़ते हुए भौतिकवाद से इतर संयमित जीवन शैली को अपनाने की अपील करने का प्रयास है।

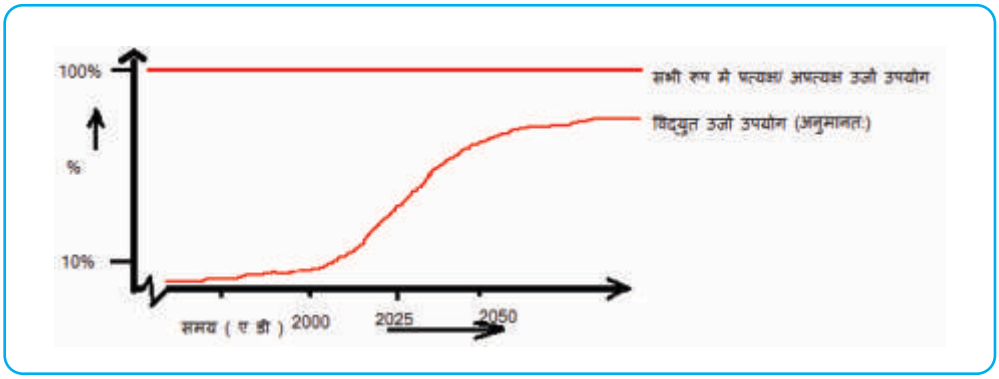

छवि तुम्हारी

अतुल कुमार
कोलकाता केंद्र

रोज स्वप्न के शीशमहल में धुंधली इक छवि आती थी,
अंधकारमय मन में मेरे नित नए दीप जलाती थी।

मेरे नीरस जड़ जीवन में नई चेतना लाती थी,
देख के मुझको पूर्ण सफल वो धीरे से मुसकाती थी।

इक दिन विधि ने चिरसंचित पूर्व नियोजित कार्य किया,
दो अंजाने अजनबियों को एक सूत्र में बांध दिया।

तुम आयीं थीं धीरे–धीरे मेरे रीते जीवन में,
पर मैं तो उलझा रहता था उसी स्वप्न की उलझन में।

मुझ पर जो बाधा आती तुम अपने ऊपर ले लेती,
अपनी सारी खुशियों का भी सारा श्रेय मुझे देती।

तुम तो मेरे पास में ही थीं पर मुझको एहसास न था,
जिसको ढूंढा दूर–दूर तक उसके कितने पास मैं था।

इक दिन मैंने तुमको देखा दीप जलाते आँगन में,
तब मैं समझा छवि तुम्हारी ही तो थी मेरे मन में।

तुम से ही है आशा मेरी तुमसे ही है मेरी प्रीत,
तुम बिन मैं हारा ही समझो तुमसे ही है मेरी जीत।

राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में हिंदी अनुवादक की भूमिका

आर. एस. पटवाल

भारत सरकार द्वारा केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग के संबंध में निर्णय लेने के उपरांत सन् 1975 में गृह मंत्रालय के अधीन राजभाषा विभाग की स्थापना की गई। तदनुसार, राजभाषा विभाग को केंद्र सरकार के कार्यालयों में शासकीय कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सुनिश्चित करने एवं इसके प्रचार–प्रसार की जिम्मेदारी सौंपी गई।

राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए राजभाषा अधिनियम, 1963 लागू किया गया। इसके पश्चात सन् 1976 में राजभाषा नियम बनाया गया। इसके फलस्वरूप, केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों में राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा–3(3) के तहत सभी स्थायी किस्म के कागजात यथा आदेश, कार्यालय आदेश, ज्ञापन, परिपत्र, नियम, टेंडर, टेंडर नोटिस, संविधाएं, अनुबंध पत्र, विज्ञापन, संसद के समक्ष रखे जाने वाले कागजात आदि को द्विभाषी रूप में जारी करना आवश्यक हो गया। इसके साथ–साथ राजभाषा नियम 1976 के तहत हिंदी में प्राप्त पत्रों/हस्ताक्षरित पत्रों का हिंदी में उत्तर देना भी अपेक्षित हो गया।

केंद्र सरकार द्वारा बनाए गए उक्त अधिनियम एवं नियमों के अनुपालन के लिए, भारत सरकार के सरकारी कार्यालयों में राजभाषा अधिकारियों एवं अनुवादकों के पदों का सृजन आवश्यक हो गया। उल्लेखनीय है कि प्रारम्भ में भारत सरकार के केंद्रीय सरकारी कार्यालयों में हिंदी का काम–काज अनुवाद के माध्यम से शुरू किया गया। चूँकि देश के स्वतंत्र होने से पूर्व एवं देश के स्वतंत्र होने के पश्चात भी सारा राज–काज केवल अंग्रेजी या उर्दू/फारसी में हुआ करता/हो रहा था, अतः सरकारी काम–काज को हिंदी में आरंभ करने के लिए यह आवश्यक हो गया कि इसके लिए हिंदी अनुवाद का सहारा लिया जाए।

तद्नुसार, केंद्र सरकार के सभी मंत्रालयों एवं अन्य कार्यालयों में राजभाषा अनुभाग/हिंदी कक्ष की स्थापना की गई। इसमें आरंभ में एक सहायक निदेशक (राजभाषा)/हिंदी अधिकारी के साथ कार्यालय की नफरी के अनुसार वरिष्ठ हिंदी अनुवादक एवं कनिष्ठ हिंदी अनुवादक के पद स्वीकृत कर भर्ती की गई। तत्पश्चात संबंधित मंत्रालयों/कार्यालयों के हिंदी अनुभाग द्वारा ही हिंदी में कार्य आरम्भ किया गया। साथ ही मंत्रालयों/कार्यालयों के अन्य अनुभागों/शाखाओं के अंग्रेजी पत्रादि का हिंदी अनुवाद कर हिंदी में कार्य करने की शुरूआत की गई।

हिंदी अनुवादक हिंदी में कार्य करने को बढ़ावा देने एवं इसके प्रचार–प्रसार में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करता है। वह हिंदी में कार्य करने की प्राथमिक एवं अति महत्वपूर्ण कड़ी है। अनुवाद कार्य कोई सरल कार्य नहीं है। इसके लिए आवश्यक है कि अनुवादक को दोनों भाषाओं (स्रोत भाषा – जिस भाषा में मूल पाठ है और लक्ष्य भाषा – जिसमें अनुवाद किया जाना है) का गहन ज्ञान होना आवश्यक है।

अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद करते समय अंग्रेजी के शब्दों के किसी भी अर्थ को लेकर हिंदी में लिख लेना मात्र अनुवाद नहीं है। अनुवाद करते समय अनुवादक को उस पाठ के संबंधित वाक्य में उचित एवं सटीक शब्दों का चयन करना होता है। यह तभी संभव है जब उसे दोनों भाषाओं का उचित ज्ञान होगा। मात्र पर्याय/समानार्थक शब्द लिखकर हिंदी अनुवाद कार्य संपन्न नहीं हो जाता है। अनूदित सामग्री को पढ़ते समय यह महसूस नहीं होना चाहिए कि अनुवाद को पढ़ रहे हैं वरन् वह सामग्री मूल पाठ की तरह ही लगनी चाहिए। यदि अनुवाद करते समय अनुवादक इन बातों का ध्यान नहीं रखेगा तो अर्थ का अनर्थ हो जाएगा।

अनुवादक दो भाषाओं के बीच की एक कड़ी है । वह दो भिन्न भाषाओं/भाषियों को एक–दूसरे से जोड़ता है। उन्हें आपस में समझने/जानने में सहायता प्रदान करता है। उनके आपसी सम्वाद को एक–दूसरे तक पहुँचाने में एक बहुत बड़ी भूमिका निभाता है। अनुवादक की अनुपस्थिति में दो भिन्न भाषा–भाषी एक दूसरे के लिए मात्र अपरिचित हो जाते हैं।

केंद्र सरकार के सरकारी कार्यालयों में हिंदी अनुवादकों की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। हिंदी अनुवादक न केवल अंग्रेजी पत्रादि के अनुवाद कार्य को सम्पन्न करता है बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रयोग को भी बढ़ाने/प्रोत्साहित करने में अपना कार्य बखूबी निर्वाह करता है। वह अनुवाद कार्य करने/इसमें सहायता पहुँचाने का कर्त्तव्य पालन तो करता ही है, साथ ही वह राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए राजभाषा अधिनियम 1963 तथा राजभाषा नियम 1976 यथा संशोधित और इसके अधीन बनाए गए उप नियमों के अनुसार कार्यालय में हिंदी का कार्य करवाने में बड़ी भूमिका निर्वाह करता है। राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में कार्यालयों के लिए राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी की तिमाही, अर्धवार्षिक तथा वार्षिक विवरणियां निर्धारित की गई हैं जिनका संबंधित तिमाही, छमाही एवं वित्त वर्ष की समाप्ति पर निर्धारित समयावधि के भीतर उच्चतर कार्यालयों को अपेक्षित विवरण के साथ प्रस्तुत किया जाना आवश्यक है। इसके साथ ही राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए प्रत्येक तिमाही में एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन, प्रत्येक वर्ष सितम्बर में 'हिंदी दिवस' के अवसर पर 'हिंदी दिवस' या 'हिंदी सप्ताह' या 'हिंदी पखवाड़ा/माह' का आयोजन भी आवश्यक है। सभी अधिकारी एवं कर्मचारी हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित हों, इसके लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा चलाई गई प्रोत्साहन योजनाएं केंद्र सरकार के सभी मंत्रालयों/कार्यालयों में लागू की गई हैं। इसके लिए कार्यालय में योजना को लागू करने के साथ–साथ, प्रोत्साहन योजनाओं की अवधि समाप्त होने पर हिंदी में किए गए कार्य का मूल्यांकन तथा विजेताओं को नियमानुसार पुरस्कृत करना भी अनुवादक के कार्य में शामिल है।

कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी का अपेक्षित ज्ञान हो, इसके लिए आवश्यक है कि उन्हें हिंदी का प्रशिक्षण प्रदान करवाया जाए। साथ ही लिपिक वर्ग को हिंदी टाइपिंग एवं आशुलिपि का प्रशिक्षण भी प्रदान करना अपेक्षित है। हिंदी अनुवादक इसके लिए संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी भाषा/आशुलिपि/टाइपिंग के प्रशिक्षण के लिए हिंदी शिक्षण योजना के तहत प्रशिक्षण प्रदान करवाता/सहायता प्रदान करता है ।

केंद्र सरकार के कार्यालयों में भारत सरकार द्वारा बनाए गए अधिनियम एवं नियमों का पालन किस सीमा तक किया जा रहा है, इसका जायजा लेने के लिए समय–समय पर उच्चतर कार्यालयों/मंत्रालयों द्वारा एक निरीक्षण दल गठित कर राजभाषा निरीक्षण किया जाता है। हिंदी अनुवादक इसमें भी आवश्यक सहायता प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, संसदीय राजभाषा समिति जिसमें लोक सभा एवं राज्य सभा के माननीय सांसद एवं समिति कार्यालय के अधिकारी होते हैं, द्वारा भी समय–समय पर केंद्र सरकार के कार्यालयों का निरीक्षण किया जाता है। समिति द्वारा हिंदी के काम के संबंध में पाई गई कमियों को दूर करने के लिए, कार्यालय अध्यक्ष द्वारा दिए गए आश्वासनों पर अनुपालन रिपोर्ट निर्धारित समय पर मंत्रालय के माध्यम से समिति कार्यालय को प्रस्तुत की जाती है। इसमें भी अनुवादक अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है ।

इस प्रकार, उपर्युक्त के संदर्भ में हम देखते हैं कि राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में हिंदी अनुवादक की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है। सही अर्थों में कहा जाए तो हिंदी अनुवादक केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी में किए जा रहे कार्यों की रीढ़ की हड्डी है।

इस विशाल प्रदेश के हर भाग में शिक्षित–अशिक्षित, नागरिक और ग्रामीण सभी हिंदी को समझते हैं।

– राहुल सांकृत्यायन

सफल जीवन के लिए व्यक्तित्व विकास का महत्व

राकेश कुमार ओझा

हम प्रतिदिन बहुत से लोगों से मिलते हैं परंतु उनमें से कुछ लोग ही ऐसे होते हैं जो हमें प्रभावित कर जाते हैं। ऐसे लोगों के बारे में हम कहते हैं कि इस व्यक्ति के पास एक आकर्षक व्यक्तित्व है। ऐसे व्यक्तित्व वाले लोग अक्सर खुशहाल होते हैं और उन्हें हरेक जगह सम्मान मिलता है।

व्यक्तित्व सिर्फ शारीरिक गुणों से ही नहीं बल्कि विचारों और व्यवहार से भी मिल कर बनता है जो हमारे व्यवहार और समाज में हमारे समायोजन को भी निर्धारित करता है। कोई भी व्यक्ति जन्मजात अच्छा व्यक्तित्व ले कर पैदा नहीं होता है बल्कि सफल होने लिए अपने अंदर गुणों को विकसित करना पड़ता है। ऐसे गुणों को जो दूसरों को प्रभावित करे साथ ही साथ स्वयं को भी करे। आइए देखते हैं कि व्यक्तित्व विकास हेतु किस प्रकार के गुणों को विकसित करने की आवश्यकता है।

जब हम किसी व्यक्ति से मिलते हैं तो हमें उसके अंदर अच्छाई खोजने की कोशिश करनी चाहिए। इसके लिए हमें अपने मस्तिष्क को प्रशिक्षित करना होगा। यदि हम मस्तिष्क को अच्छाई खोजने के लिए निर्देश देंगे तो वह खोज ही लेगा।

कई बार ऐसा होता है कि हम सामने वाले कि छोटी–मोटी गलतियों या व्यवहार से उदिग्न व क्रोधित हो जाते हैं। ऐसे में हमें थोड़ा धैर्य से काम लेना चाहिए। मन को शांत रखकर थोड़ी देर के लिए स्वयं को उनके स्थान पर रखकर देखना चाहिए। हो सकता है कि उनकी परिस्थितियों ने उन्हें ऐसा करने के लिए विवश कर दिया हो और वो उस पर नियंत्रण न कर पाये हों।

कई बार हम लोगों पर जल्दी विश्वास नहीं करना चाहते हैं और इसी वजह से नए लोगों के साथ काम करने में हिचकिचाहट होती है। हाँ यह सही है कि आँख मूंदकर लोगों पर विश्वास करना सही नहीं है परंतु आँख मूंदकर अविश्वास करना भी सही नहीं है। ज्यादातर लोग अच्छे होते हैं।

जब हम अपने खास मित्र से मिलते हैं तो क्या होता है? हम एक–दूसरे को देखकर मुस्कुरा देते हैं। मुस्कुराना जाहिर करता है कि हम सामने वाले को पसंद करते हैं।

यही बात हर तरह के रिश्ते में लागू होनी चाहिए चाहे वो व्यक्तिगत हो या व्यावसायिक। इसलिए कोशिश होनी चाहिए कि जब भी किसी से मिलें तो चेहरे पर एक मुस्कान होनी चाहिए। इससे लोग हमसे मिलकर खुश होंगे।

लोगों से बात करते समय बीच–बीच में उनका नाम लेते रहने से सामने वाले को अच्छा लगता है। इससे सामने वाला अपनी महत्ता महसूस करता है और साथ ही हमारी तरफ अधिक ध्यान देता है।

हमें वार्तालाप के दौरान सामने वाले की बात को ईमानदारी से सुनने का प्रयास करना चाहिए। ईमानदारी से तात्पर्य यह है कि ऐसा नहीं होना चाहिए कि किसी तरह जल्दी से वह अपनी बात खत्म करे और हम अपनी रामकथा शुरू कर दें। हम जो बोलते हैं उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है कि हम कैसे बोलते हैं। इसलिए बोलते समय विनम्र एवं सभ्य तरीका अपनाना चाहिए।

कई बार हम ऐसी स्थिति में होते हैं कि दूसरों की मदद कर सके परंतु आलस या फिर यह सोचकर कि इसमें हमारा कोई फायदा नहीं है हम मदद नहीं करते। एक आकर्षक व्यक्तित्व वाला व्यक्ति लोगों की मदद के लिए तैयार रहता है। हाँ इसका मतलब यह भी नहीं है कि हम अपना जरूरी काम छोड़कर लोगों की मदद करते फिरें, लेकिन अगर थोड़ा समय देने से हम किसी के काम आ सकते हैं तो हमें जरूर मदद करनी चाहिए।

तारीफ सुनना सबको पसंद है। लोगों का दिल जितना और उन्हें अपना मित्र बनाने का यह एक शानदार मंत्र है। हमारे अंदर दुसरों की प्रशंसा करने की आदत होनी चाहिए। हालांकि, प्रशंसा बनावटी न होकर सच्ची होनी चाहिए। प्रशंसा के लिए सामने वाले के अंदर भारी भरकम गुणों या प्रदर्शन का होना जरूरी नहीं है वरन् उसका कोई भी काम या बात आपको अच्छी लगती है तो प्रशंसा जरूर करनी चाहिए।

हमें हर उस इंसान से जो हमारे संपर्क में आता है, कुछ न कुछ सीखने की कोशिश करनी चाहिए। चाहे वह हमारा सहकर्मी हो, बॉस हो या अधीनस्थ। हर व्यक्ति के अंदर कुछ न कुछ खास होता है।

आजकल सोशल मीडिया का उपयोग दिनों–दिन बढ़ता ही जा रहा है। लोग सोशल मीडिया की गिरफ्त में इस कदर कैद हो गए हैं कि अपना कीमती समय बर्बाद करने के साथ ही रिश्तों को भी खोते जा रहे हैं। सोशल मीडिया एक सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने संबंधों को बेहतर बना सकते हैं, अपने व्यवसाय में ज्यादा से ज्यादा कुशल एवं दक्ष हो सकते हैं, अपना ज्ञान बढ़ा एवं बाँट सकते हैं। तो क्यों न हम सोशल मीडिया का उपयोग अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिए करें। फालतू की एवं नकारात्मक पोस्टों को शेयर करने से अच्छा है कि हम उपयोगी एवं काम की चीजों को अधिकाधिक शेयर करें। इससे प्राप्तकर्ता को हमारे बारे में अच्छी राय बनाने में मदद मिलती है।

आखिर में, व्यक्तित्व का विकास कोई विधा नहीं है, कोई पाठ्यक्रम नहीं है जिसे सीमित समय में पूरा करके डिग्री प्राप्त कर ली जाए वरन् यह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। यह एक यात्रा है जिसके हर पड़ाव पर हम कुछ न कुछ पाते हैं एवं दूसरों को भी देते हैं। वास्तव में, निरंतर व्यक्तित्व विकास सफल जीवन जीने का एक मंत्र है।

सकारात्मक बनाम नकारात्मक

रामसिंह मीना

दोस्तों! आजकल आपने सकारात्मकता की बात करते बहुत से तथाकथित विद्वानों को सुना होगा। लेकिन मैं नहीं जानता कि सकारात्मकता के नाम पर उनके दिमाग में कुछ धार्मिक आदर्श वाक्यों के अलावा कोई और उपदेश होगा। सकारात्मकता कोई नैतिक, धार्मिक या आदर्श वाक्यों का संगम नहीं है। सकारात्मकता एक पूरी दार्शनिक धारा है, एक सोच का मार्ग है, जो कि तर्क–विज्ञान पर आधारित है।

उपदेशात्मक सकारात्मकता विपरीत परिस्थितियों में भी सकारात्मक बने रहने का उपदेश देती है। अच्छा सोचने का अप्राकृतिक उपदेशों से उद्‌गम एव अंत है जो कि असंभव है। बाढ़ से मकान घिर जाने पर भी कैसे सकारात्मक रह सकते हैं। स्वाभाविक है कि मृत्यु का भय हमें नकारात्मक सोचने के लिए शत–प्रतिशत विवश करेगा ही। इसलिए सकारात्मकता केवल अनुकूल परिस्थितियों में ही संभव है।

अगर हम वैज्ञानिक दृष्टि से विचार करें तो प्रत्येक परिस्थिति में सकारात्मकता विकास कर रही होती है। आप जानते ही हैं कि विकासशील परिस्थितियाँ, वस्तु तथा व्यक्ति, विकास की चरम सीमा के बाद निश्चित रूप से अवनति की ओर स्वतः ही चले जाते हैं। सही अर्थ में अवनति की ओर ले जाने वाली शक्ति को ही नकारात्मकता कहते हैं। लेकिन एक समय के बाद पुरानी परिस्थिति (जो कभी सकारात्मक थी) पूर्णतया समाप्त हो जाती है। नकारात्मक परिस्थिति ही सकारात्मक हो जाती है और विकास के अगले क्रम के रूप में विकसित होने लगती है। अर्थात ना तो सकारात्मकता और ना ही नकारात्मकता निरपेक्ष है। ये दोनों ''है'' और ''होने वाला है'' के अनुगामी एवं पश्चगामी ही हैं। ''कोण पहले और कोण बाद में'' के क्रम में चलता रहता है। इसलिए सकारात्मकता का अस्तित्व निरपेक्ष न हो कर नकारात्मकता के अस्तित्व पर निर्भर करता है। धर्म उपदेशों के अनुसार सकारात्मकता केवल मानसिक प्रक्रिया है, अर्थात हम सकारात्मक सोचेंगे तो भौतिक परिस्थिति अपने आप बदल जाएगी। शायद, जो असंभव है।

मनोदशा परिवर्तनशील है, क्षणों के हिसाब से बदलती है। सकारात्मकता के तुरंत बाद मनोदशा में नकारात्मकता प्रवेश कर जाती है। और इसके विपरीत भी होता है। इसलिए मनोदशा में कोण पहले निश्चित नहीं है। जबकि भौतिक जगत में बिलकुल निश्चित है। बृहत् स्तर पर भी निश्चित है। मगर व्यक्तिगत स्तर पर क्षणिक है। हाँ, सकारात्मकता आपके साहस, उत्साह, हिम्मत एवं दृष्टिकोण को मजबूती देती है। लेकिन जोखिम तत्व आपका अपना है। नदी पार करते वक्त आप सकारात्मक हो सकते हैं कि नदी पार होगी। मगर जोखिम आपका है। डूबे या पार हो जाएं। सोचो, परिस्थितियों का जायजा लो, फिर करो। और जीत दर्ज करो। सकारात्मकता एवं नकारात्मकता हकीकत से दूर केवल मानसिक फिनोमिना है ।

इतिश्री।

खुशहाल गृहस्थी के नियम

राकेश जोशी

अपनी गृहस्थी को कुछ इस तरह बचा लिया करो।
कभी आँखें दिखा दी कभी सर झुका लिया करो।।

आपसी नाराजगी को लम्बा चलने ही ना दिया करो।
वो ना भी हँसे तो तुम मुस्कुरा दिया करो।।

रूठ कर बैठे रहने से घर भला कहाँ चलते हैं।
कभी उन्होंने गुदगुदा दिया कभी तुम मना लिया करो।।

खाने–पीने पे विवाद कभी होने ही ना दिया करो।
कभी गरम खा ली कभी बासी से काम चला लिया करो।।

मियाँ हो या बीबी महत्व में कोई भी कम नहीं।
कभी खुद डॉन बन गए तो कभी उन्हें बॉस बना दिया करो।।

अपनी गृहस्थी को कुछ इस तरह बचा लिया करो.....

विमुद्रीकरण

श्वेता झा

क्या है विमुद्रीकरण? जब सरकार पुरानी मुद्रा (करेंसी) को कानूनी तौर पर बंद कर देती है और नई मुद्रा लाने की घोषणा करती है तो इसे विमुद्रीकरण (डिमोनटाईजेशन) कहते हैं। इसके बाद पुरानी मुद्रा अथवा नोटों की कोई कीमत नहीं रह जाती है। हालांकि सरकार द्वारा पुराने नोटों को बैंकों से बदलने के लिए लोगों को समय दिया जाता है, ताकि वे अमान्य हो चुके अपने पुराने नोटों को बदल सकें।

8 नवंबर 2016 को माननीय प्रधानमंत्रीजी ने एक ऐतिहासिक फैसला लेकर देश में 1000 और 500 रुपए के नोट बंद करने की घोषणा की अर्थात विमुद्रीकरण की घोषणा की। भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर श्री उर्जित पटेल ने भी सरकार की इस घोषणा का समर्थन किया। इसके बाद, सरकार 500 और 2000 रुपए के नए नोट भी बाजार में लेकर आई।

भारतीय रिजर्व बैंक के अनुसार 31 मार्च 2016 तक भारत में 16.42 लाख करोड़ रुपए मूल्य के नोट बाजार में थे, जिसमें से करीब 14.18 लाख रुपए 500 और 1000 के नोटों के रूप में थे। भारतीय रिजर्व बैंक का गठन सन् 1938 में किया गया था। तब से उसने अभी तक 10 हजार रुपए से अधिक का नोट जारी नहीं किया है।

विमुद्रीकरण क्यों? कालाधन, भ्रष्टाचार, नकली नोट और आतंकवादी गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए सरकारें विमुद्रीकरण का फैसला लेती हैं। अवैध गतिविधियों में संलग्न लोग नोटों को अपने पास ही रखते हैं। ऐसे में विमुद्रीकरण से सीधे उन पर चोट होती है। कई बार नकद लेन–देन को हतोत्साहित करने के लिए भी नोटबंदी की जाती है। केन्द्र की मोदी सरकार को भी उम्मीद है कि नोटबंदी से कालाधन, नकली नोट और आतंकवाद पर अंकुश लगेगा।

हालांकि नोटबंदी के कारण आम आदमी को भी काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। केन्द्र सरकार अपने इस फैसले से नकद लेन–देन को भी हतोत्साहित करने की कोशिश कर रही है। कई देशों में विमुद्रीकरण बेहद आम प्रक्रिया मानी जाती है।

भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर 2016 जून (नवीनतम उपलब्ध है) के लिए अप्रैल से तिमाही में ठोस बनी रही। भारत में, एक वित्तीय वर्ष अप्रैल में शुरू होता है और अगले वर्ष के मार्च में समाप्त होता

है। जैसा कि पहले उल्लेख तिमाही वित्त वर्ष 2016–2017 की पहली तिमाही है। उस अवधि के दौरान सकल घरेलू उत्पाद (सकल घरेलू उत्पाद) में 7.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि जीवीए (सकल मूल्य संवर्धित) में 7.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई। सकल घरेलू उत्पाद और जीवीए के बीच संबंध है:

सकल घरेलू उत्पाद में =
जीवीए उत्पादों पर कर – उत्पादों पर सब्सिडी

जीवीए की गणना के लिए आधार वर्ष 2011–2012 है।

नोटबंदी का शेयर बाजार पर भी प्रभाव हुआ है। नोटबंदी के एक महीने में शेयर बाजार सुस्त हो गया। नोटबंदी के ऐलान से 7 दिसंबर तक शेयर बाजार में बड़ी गिरावट दर्ज की गई। बीएसई 8 नवंबर को जहाँ 27,591 पर था वहीं 7 दिसंबर को 26,237 तक नीचे आ गया। नोटबंदी से खरीदार सोने से दूर रहे वहीं रियल एस्टेट, सेवा और कृषि क्षेत्र पर असर पड़ा।

विमुद्रीकरण के मुख्य प्रभाव:

1. विमुद्रीकरण 2007 की वैश्विक बैंकिंग क्षेत्र संकट की तरह एक बड़ी आपदा नहीं है, लेकिन एक ही समय में, यह एक झटका है जो कि तरलता व आर्थिक गतिविधियों को परेशान करने के रूप में कार्य करेगा।

2. नकदी की कमी (लघु अवधि के प्रभाव): तरलता के झटके का मतलब है लोगों को पर्याप्त मात्रा में नकदी प्राप्त कराने में बैंक सक्षम नहीं होगा, विशेष रूप से 500 रुपये की मुद्रा इकाई का दैनिक जीवन में अनुकूल प्रभाव होगा। वर्तमान रिपोर्टों से संकेत मिलता है कि सभी सुरक्षा प्रिंटिंग प्रेस में इस साल के अंत तक 500 रुपये के नोटों की केवल 2000 लाख यूनिट मुद्रित कर सकते हैं। मार्च के अंत तक लगभग 10000 लाख इकाइयों को मुद्रित और प्रतिस्थापित किया जाएगा। इन सभी से संकेत मिलता है कि मुद्रा की कमी अगले चार महीनों के लिए हमारी अर्थव्यवस्था में रहेगी।

3. मुद्रा आबादी प्रयोग करने के लिए कल्याण नुकसान: जनसंख्या जो 'पिरामिड के आधार' का गठन के सर्वाधिक सक्रिय खंडों में उनके लेन–देन को पूरा करने के लिए मुद्रा का उपयोग करता है। दिहाड़ी मजदूर, दूसरे मजदूरों, छोटे व्यापारियों आदि जो औपचारिक अर्थव्यवस्था से बाहर रहते हैं, नकद अक्सर उपयोग करते हैं। ये वर्ग तरल नकदी के अभाव में आय खो देंगे। इसमें समय के साथ उच्च आय वाले लोगों के लिए तरलता अराजकता के मिलने तक असर नहीं होगा।

4. विकास की हानि : भारत सबसे तेजी से बढ़ रहा है सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने की अपनी स्थिति जोखिम: कम खपत, आय, निवेश आदि भारत की तरलता प्रभाव के रूप में सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर को कम कर सकते हैं।

5. बैंक में जमा राशि और ब्याज दर पर प्रभाव: अल्पावधि में जमा में वृद्धि हो सकती है, लेकिन लंबे समय में, उसके प्रभाव से नीचे आ जाएगा। बचत बैंकों के साथ वास्तव में तरल नकदी संग्रहीत हैं। इसका मतलब यह है कि बैंकों के साथ नए बचत केवल अस्थायी या अल्पकालिक जमा है। यह उचित समय पर सेवर्स से भुनाया जा सकता है। यह आवश्यक नहीं है कि विमुद्रीकरण से मध्यम अवधि में बैंकिंग प्रणाली में बड़ी बचत का उत्पादन होगा।

6. काले धन पर प्रभाव: केवल काले धन का एक छोटा सा हिस्सा वास्तव में नकदी के रूप में संग्रहीत है। आमतौर पर, काली कमाई सोना, भूमि, भवन आदि जैसी भौतिक संपत्ति के रूप में रखी जाती है। अत: काले धन की राशि विमुद्रीकरण से मुकाबला नकदी के रूप में आयोजित काले धन की मात्रा पर निर्भर करती है और यह उम्मीद की तुलना में छोटा होगा। लोगों को अब काली कमाई से लड़ने के लिए जरूरत के बारे में ज्यादा आश्वस्त किया जा सकेगा। इस तरह के एक राष्ट्रव्यापी जागरूकता मजबूत उपायों के साथ बाहर आने के लिए सरकार को प्रोत्साहित करेंगे।

7. नकली मुद्रा पर प्रभाव: वास्तविक प्रभाव नकली/जाली मुद्रा पर होगा।

कब–कब हुई नोटबंदी: भारत में पहली बार साल 1946 में 500, 1000 और 10 हजार के नोटों को बंद करने का फैसला लिया गया था। सन् 1970 के दशक में भी प्रत्यक्ष कर की जांच से जुड़ी वांचू कमेटी ने विमुद्रीकरण का सुझाव दिया था, लेकिन सुझाव सार्वजनिक हो गया, जिसके चलते नोटबंदी नहीं हो पाई।

जनवरी 1978 में मोरारजी देसाई की जनता पार्टी सरकार ने एक कानून बनाकर 1000, 5000 और 10 हजार के नोट बंद कर दिए। हालांकि तत्कालीन आरबीआई गवर्नर श्री आईजी पटेल ने इस नोटबंदी का विरोध किया था।

कई बार सरकार पुराने नोटों को एकदम बंद करने के बजाय धीरे–धीरे बंद कर देती है। सन् 2005 में श्री मनमोहन सिंह की कांग्रेस सरकार ने 2005 से पहले के 500 रू. के नोटों का विमुद्रीकरण कर दिया था।

दैनिक जीवन में डिजिटल इंडिया की भूमिका

(वर्ष 2016 हिंदी सप्ताह का पुरस्कृत निबंध)

अतुल कुमार

डिजिटल युग का मानव, डिजिटल जीवन, डिजिटल कार्यशैली किंतु ऐसा बिलकुल भी नहीं कि डिजिटल का मतलब है मशीनीकरण अथवा यांत्रिकरण। डिजिटल का वास्तविक अर्थ है तीव्र, सशक्त और प्रभावी। आज की पीढ़ी इस दृष्टिकोण से ही सब चीजों को देखती है। समय भी डिजिटल सा हो गया लगता है और पूरे विश्व में इस डिजिटलीकरण का प्रभाव होते हुए हमारे देश पर भी पड़ा।

गत वर्ष जुलाई में भारत सरकार की पहल आई 'डिजिटल इंडिया'। प्रथम बार देश में ऐसा हुआ कि सरकार ने 1,13,000 करोड़ रूपयों का निवेश किया जिससे यांत्रिकी, मोबाइल टेक्नालॉजी एवं सूचना प्रौद्योगिकी को आधार रूप में सक्षम बनाते हुए उसी की सहायता से भारत के आधारभूत समाज यानि मुख्यतः ग्रामीण समाज को डिजिटली सशक्त किया जा सके।

इस पहल के अंतर्गत विभिन्न योजनाओं का प्रस्ताव, प्रचार तथा प्रसार किया गया। भारत जो सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र को लगभग पचास प्रतिशत लोग मुहैया करवाता है वही इस क्षेत्र में काफी पीछे है। इसी दशा को सुधारने हेतु तथा प्रगति एवं सशक्तिकरण की गति को तीव्र करने हेतु सरकार ने ये कदम उठाने की सोची।

डिपार्टमेंट आफ इलैक्ट्रानिक्स एंड इंफ्रास्ट्राक्चर टेक्नालॉजी ने ये आकलन किया कि 'डिजिटल इंडिया' का सीधा प्रभाव सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय पर तीव्रगामी रूप से होगा।

डिजिटल इंडियाः दृष्टिकोण

1. **आधारभूत व्यवस्था (इंफ्रास्ट्राक्चर)**
   आधारभूत ढांचा किसी भी देश की कार्यशैली का मूलभूत स्तंभ होता है। आज हर सरकारी कार्यालय में इसकी स्थिति दयनीय तो नहीं कही जा सकती किंतु समर्थ नहीं है। डिजिटल इंडिया के अंतर्गत इस ढ़ांचे को मजबूती देने के अलावा इसके नवीनीकरण पर भी कार्य चल रहा है जैसे कि कार्यालय में एक आईटी विभाग बनाना, नई टेक्नालॉजी का प्रयोग इत्यादि।
2. **सरकारी तंत्र एवं सुविधाएं**
   सरकारी तंत्र सामाजिक स्तर पर मूलभत सुविधाएं हो चाहे उच्चकोटि की, देने में प्रयासरत है किंतु सही रूप से परिचालन करने में समर्थ नहीं है। 'डिजिटल इंडिया' के तहत नई सुविधाएं चलाई जा रही हैं जिसे आम ग्रामीण तक बैंकों का खुद पहुँचना अथवा कृषि हेतु ऑनलाइन परामर्श।
3. **समाज को डिजिटली सशक्त बनानाः**
   ऐसा नहीं है कि सरकारी दफ्तरों में, बैंकों में, मंत्रालयों में नई तकनीकों का प्रयोग नहीं होता किंतु जन साधारण इसका लाभ नहीं उठा रहे हैं। डिजिटल इंडिया के माध्यम से बैकों को नई तकनीक जैसे एटीएम, ड्राफ्ट मशीन, एकाउन्ट प्रिंटिंग मशीन आदि से लैस किया जा रहा है। सरकारी दफ्तरों में ई–फाईलिंग तथा आरटीआई इसके सशक्त उदाहरण हैं।

डिजिटल ई इंडिया के प्रमुख प्रोजेक्टः

1. **इलैक्ट्रॉनिक इंडस्ट्रीः** डिजिटल इंडिया के उपक्रम में 'मेक इन इंडिया' एक बड़ा अध्याय है। इसके तहत लगभग सभी इलैक्ट्रॉनिक के सामान चाहे वो पेंसिल सेल हो या मिसाइल के लॉचिंग व्हीकल, धीरे–धीरे सब स्वदेशी तकनीकीकरण की राह पर हैं। यह अभी और व्यापक रूप लेगा क्योंकि जल्दी ही सरकार 'डिजाइन इन इंडिया' नामक मुहिम चलाने वाली है जिससे हमारे देश की मुद्रा के निर्यात पर रोक लगेगी अपितु बहुत सारा राजस्व हमारे देश में आएगा वो भी विदेशी मुद्रा में।
2. **हाई स्पीड इंटरनेटः** आज कल इंटरनेट के बिना कोई काम नहीं हो पाता और सूचना प्रौद्योगिकी के प्रचार और प्रसार के लिए तो यह परम आवश्यक है। 'डिजिटल इंडिया' की पहल को आगे बढ़ाने के लिए 'रिलायंस' कंपनी ने जिओ नाम की सर्विस शुरू की। जो हाईस्पीड इंटरनेट के साथ–साथ अन्य आयामों में भी सरकार की पहल को समर्थ बनाएगा।

3. **ई–गवर्नेंसः** डिजिटल इंडिया के अंतर्गत सारे मंत्रालयों को एक सेंट्रल सिस्टम से जोड़ा जा रहा है। कृषि मंत्रालय, सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय और एचआरडी मंत्रालय प्रधान भूमिका में हैं। आरटीआई की सुविधा को ऑनलाइन बनाना इस दिशा में एक सुदृढ़ कदम है।
4. **ई–क्रांतिः** मूलभूत कार्यों का बड़ा हिस्सा है डिजिटल इंडिया की ग्रामीण जनता को ज्यादा से ज्यादा जागरूक बनाना। ई–क्रांति के तहत अब बैंकिंग में 'जन धन योजना' और सरकार की 'आधार' योजना को सराहनीय कार्य कहना गलत न होगा।
5. **सूचना प्रौद्योगिकी की ट्रेनिंगः** डिजिटल इंडिया को व्यापक रूप देने के लिए सरकार ने एक और उपक्रम आरंभ किया हैः स्किल इंडिया या 'कुशल भारत'। इसके तहत युवाओं को खासकर अनियोजित युवाओं को आईटी की ट्रेनिंग मुफ्त देकर रोजगार के अवसर भी दिए जा रहे हैं। सरकारी कर्मचारियों को भी इसके लिए प्रेरित किया जा रहा है। ग्रामीण इलाकों में हर वर्ग के नागरिकों को मुफ्त में कंप्यूटर चलाने की ट्रेनिंग दी जा रही है।
6. **मोबाइल सशक्तिकरणः** आजकल हर वर्ग का नागरिक और कुछ प्रयोग में लाए ना लाए मोबाइल तो प्रयोग करता ही है। इस सोच को समझते हुए भारत सरकार ने 'एनआईसी' को अलग से राजस्व देकर मोबाइलाइजेशन को बढ़ावा देने के लिए कहा है।
7. **डिजिटल डाक्युमेंटेशनः** भारत सरकार ने डिजिटल इंडिया के तहत 'ई–फाईलिंग नामक सुविधा को जल्द ही हर कार्यालय में अनिवार्य करने का प्रावधान बनाया है। बायोमैट्रिक अटेंडेंस सिस्टम का केंद्रीकरण करने पर भी काम चल रहा है।

डिजिटल इंडिया पर विश्व की प्रतिक्रियाः

डिजिटल इंडिया का आरंभ हुए अभी एक वर्ष ही पूरा हुआ पर इसका प्रभाव सीधे भारत की अर्थव्यवस्था पर दिखने लगा है। एफडीआई के द्वारा विदेशी मुद्रा का निवेश करके 'अमेजन' और 'वालमार्ट' जैसी विश्व स्तर की कंपनियां तो सामने आई ही हैं अपितु तकनीकी क्षेत्र के दिग्गज बुद्धिजीवी और माईक्रोसाफ्ट, आईबीएम, टेस्ला जैसे कंपनियों के मालिकों ने इसमें अभूतपूर्व प्रतिक्रिया दी है। सत्य नडेला, इनॉन मस्क, सैली पीयानी जैसे लोगों ने इससे जुड़ने की इच्छा जताई।

अभी जल्द ही माईक्रोसाफ्ट के सीईओ सत्य नडेला ने डिजिटल इंडिया का समर्थन करने के लिए हजारों करोड़ डॉलर की पेशकश की है।

डिजिटल इंडिया पर भारतीय समाज की प्रतिक्रिया

न केवल भारतीय नागरिक जागरूक हुए, बल्कि सुविधाएं प्राप्त कर आगे बढ़े अपितु सशक्त होने की भावना का भी अनुभव कर रहे हैं। ई–एफआईआर, ई–वोटर आईडी आदि सुविधाएं उल्लेखनीय हैं।

भारतीय जनता ने भारत सरकार की पहल का सम्मान करते हुए साथ–साथ चलने के संकेत स्पष्ट दिए हैं। पिछले एक साल में चार करोड़ से ऊपर 'आधार कार्ड', दो करोड़ से ऊपर 'जन धन' एकाउंट्स इसका प्रमाण हैं।

डिजिटल इंडिया की संस्थान में भूमिका

1. ई–फीस पेमेंटः छात्रों के लिए : ई–फीस पेमेंट का प्रावधान किया गया।
2. निर्यात बंधु प्रोग्रामः डिजिटल इंडिया के तहत 'स्किल इंडिया' के अंतर्गत डिजीएफटी की सहायता से निर्यात बंधु प्रोग्राम की शुरूआत की गई।
3. एन के एनः कंप्यूटर विभाग द्वारा संस्थान को नेशनल नॉलेज नेटवर्क से जोड़ा गया।
4. डिजिटल सर्टिफिकेट/सिग्नेचरःई–फाईलिंग के लिए डिजिटल सिग्नेचर का प्रयोग फाईनेंस सेक्शन द्वारा।

लिम्फ इडीमा – एक छोटा सा परिचय

नेहा विनायक

लिम्फ इडीमा – एक बीमारी जो विश्व में अरबों लोगों को प्रभावित करती है पर जिसका अभी तक कोई इलाज नहीं पाया गया है। बहुत कम लोग इसके बारे में जानते हैं और अधिकतम पीड़ित भी इस बीमारी से अनजान हैं। डाक्टर भी इसमें ज्यादा रुचि नहीं रखते क्योंकि इस बीमारी का अब तक कोई इलाज नहीं है। इसके कारण वे मरीजों को संतुष्ट नहीं कर पाते हैं।

जिस तरह हमारे घर में साफ और गंदा पानी होता है, उसी तरह हमारे शरीर में भी दो प्रकार के द्रव होते हैं – एक जो साफ खून के साथ दिल से शरीर की ओर बहता है और दूसरा जो शरीर के टोक्सिक पदार्थों को लेकर शरीर के विभिन्न भागों से दिल की ओर बहता है। इस द्रव के टोक्सिन को हटाकर दिल उसे स्वच्छ खून में मिला देता है। इस टोक्सिक द्रव को लिम्फ कहते हैं।

यह सोचिए कि आपके घर की नाली का पानी, किसी रुकावट की वजह से, बहकर घर के अन्दर आ गया। इस से घर में गंदगी, बदबू और बीमारी फैलेगी। इसी प्रकार, शरीर की गंदगी भी किसी रुकावट की वजह से, अगर किसी भाग में एकत्रित हो जाए तो वह बीमारी और संक्रमण का कारण बन जाता है। इस बीमारी को ''लिम्फ इडीमा'' कहते हैं।

लिम्फ इडीमा के कारण:

लिम्फ इडीमा के कई कारण हो सकते हैं – प्राथमिक एवं माध्यमिक।

प्राथमिक लिम्फ इडीमा अनुवांशिक है जो जन्म से या कई वर्षों बाद भी आभास हो सकता है। माध्यमिक लिम्फ इडीमा किसी चोट, ब्रेस्ट–कैंसर सर्जरी, रेडिएशन थेरेपी या संक्रमण की वजह से हो सकता है जिसके कारण लिम्फ के बहाव में रुकावट आ सकती है।

लिम्फ इडीमा के लक्षण:

हाथों, पैरों या शरीर के किसी अन्य भाग में सूजन, उस हिस्से में भारीपन या खिंचाव, दर्द और चाल में असुविधा, उस हिस्से में बार–बार संक्रमण, त्वचा का सख्त या कड़ा होना।

लिम्फ इडीमा से होने वाली समस्याएं:

- लिम्फ द्रव के संचय के कारण सूजन।
- सेल्यूलाइटिस संक्रमण – इससे त्वचा लाल, नाजुक और कष्टजनक हो जाती है। हर संक्रमण लिम्फ की रुकावट और तकलीफ को बढ़ाने में सहायक होता है। इससे बचने के लिए बहुत सावधानी बरतनी पड़ती है।
- फाइब्रोसिस संक्रमण – इससे त्वचा सख्त होने लगती है। प्रभावित हिस्से में ट्यूमर की समस्या भी हो सकती है, जितनी जल्दी इस रोग का निदान होगा उतना आसान और कारगर इसका इलाज है। हालांकि अभी तक इसका कोई मुकम्मल इलाज नहीं है जो इसे जड़ से ठीक कर सके, पर इसे बढ़ने से रोकना इलाज की तरफ पहला कदम है। निदान में देरी के कारण लिम्फैटिक प्रणाली को बहुत नुकसान पहुंच सकता है जिसका प्रभाव अपरिवर्तनीय हो सकता है।

परीक्षण:

निदान के लिए सबसे कारगर परीक्षण है लिम्फोसिंटीग्राफी। इस परीक्षण में पैर की उंगलियों के बीच में एक परमाणु आइसोटोप एक सुई के द्वारा डाला जाता है। यह आइसोटोप लिम्फ द्रव के साथ मिलकर आगे बढ़ता है और स्कैन करने पर उसके मार्ग पर रौशनी डालता है जिससे रुकावट का पता चल सकता है।

इलाज की विधि:

सबसे महत्त्वपूर्ण बात है इलाज की विधि। इलाज सर्जिकल या नॉन–सर्जिकल हो सकता है। सर्जिकल इलाज का निर्णय डाक्टर लेते हैं निदान के आधार पर। नॉन–सर्जिकल इलाज, सूजन को नियंत्रित रखने में मदद करता है। नियंत्रण से लिम्फ को एकत्रित होने से रोका जा सकता है और इससे होने वाली समस्याओं से बचा जा सकता है। इसका मूल लक्ष्य है हानिकारक लिम्फ को शरीर के सिरों से दिल की तरफ भेजना जहां इसके टौक्सिन हटाए जाते हैं।

नॉन–सर्जिकल इलाज की 3–स्टेप विधि है:

1. **मैनुअल लिम्फैटिक ड्रेनेज** – यह एक विशेष तरह का मसाज है जो शरीर में एकत्रित टौक्सिक लिम्फ द्रव को दिल की तरफ भेजने में सहायता करता है।

2. **कम्प्रेशन थेरेपी** – यह एक कम्प्रेशन पम्प की सहायता से होता है जो हवा के दबाव से धीरे–धीरे लिम्फ द्रव को दिल की तरफ भेजता है। इस पम्प में 12 चेम्बर होते हैं जिनमें मशीन एक–एक करके हवा भरती है। इससे ग्रेडिड कम्प्रेशन हासिल हो सकता है।

3. **कम्प्रेशन बैंडेज–स्टौकिंग:** कम्प्रेशन पम्प की सहायता से सूजन कम करने के बाद सूजन को बढ़ने से रोकने के लिए विशेष बैंडेज स्टौकिंग का प्रयोग करना पड़ता है।

6 मार्च 2016 को विश्व भर में पहला ''विश्व लिम्फ इडीमा दिवस'' मनाया गया था। जागरुकता और इलाज की खोज के लिए सब मिलकर आवाज उठा रहे हैं।

आइए, हम सब अपनी तरफ से एक छोटा सा प्रयास करें– लिम्फ इडीमा की जागरूकता बढ़ाने के लिए। अधिक जानकारी के लिए:

https://www.facebook.com/groups/1084543521566108/

6

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।

– (जस्टिस) कृष्णस्वामी अय्यर

पितृ दिवस

सतपाल सिंह

पितृ दिवस क्यों मनाया जाता है?

''पितृ दिवस'' की शुरुआत, बीसवीं सदी के प्रारंभ में पिता, धर्म तथा पुरुषों द्वारा परवरिश का सम्मान करने के रूप में हुई। यह हमारे पूर्वजों की स्मृति और उनके सम्मान में भी मनाया जाता है। ''पितृ दिवस'' को विश्व में विभिन्न तारीखों पर मनाते हैं। जिस में उपहार देना, पिता के लिए विशेष भोज, पारिवारिक गतिविधियाँ आदि शामिल हैं। पहला ''पितृ दिवस'' 19 जून, 1910 को सोनोरा स्मार्ट डोड ने शुरू किया था। उन्होंने अपने पिता विलियम जैक्सन स्मार्ट की याद में पादरी से अपील की थी कि पिता के लिए भी एक दिन होना चाहिए। पहले वह ''पितृ दिवस'' अपने पिता के जन्मदिन वाले दिन यानि कि पाँच जून को मनाना चाहती थीं। लेकिन पादरी के पास समय नहीं था। फिर इसे 19 जून, 1910 को मनाया गया और संयोग से उस दिन जून का तीसरा रविवार था। ''पितृ दिवस'' पिता के सम्मान में मनाया जाने वाला पर्व है जिसमें पितृत्व, पितृत्व–बंधन तथा समाज में पिताओं के प्रभाव को समारोह पूर्वक मनाया जाता है। भारत में यह जून के तीसरे रविवार को मनाया जाता है। इस बार यह 18 जून 2017 को मनाया जाएगा। वैसे तो ''पितृ दिवस'' दुनिया के अलग–अलग हिस्सों में अलग–अलग दिन और विभिन्न परंपराओं के कारण से मनाया जाता है। लेकिन विश्व के अधिकतर देशों में इसे जून के तीसरे रविवार को मनाया जाता है। हिंदू परंपरा के अनुसार, ''पितृ दिवस'' भाद्रपद महीने की सर्वपितृ अमावस्या के दिन होता है। सुबह उठते ही अपने पिता को इस दिन की बधाई देनी चाहिए और हो सके तो कुछ उपहार आदि भी देना चाहिए।

मेरा अनुभव

अभी कुछ दिन पहले मुझे एक पिता मिला जिसके बेटे पर उसकी पत्नी (बेटे की पत्नी) ने दहेज के झूठे केस किए हुए थे। वह बड़ा परेशान था। एक पिता से और मिला जिसके बेटे पर उसकी महिला मित्र (बेटे की महिला मित्र) ने बलात्कार का झूठा केस किया हुआ था और वह जेल में बंद था। एक पिता से और मिला जिसे ये तो पता था कि वो पिता है लेकिन ये नहीं पता था कि वो लड़की का पिता है या लड़के का पिता है क्योंकि उसकी पत्नी ने उसे कभी बताया ही नहीं पारिवारिक मुकदमे की वजह से। मुझे उन सब पिताओं का दर्द दिखाई भी दे रहा था और महसूस भी हो रहा था। मैं सोचने पर मजबूर था कि एक पिता अपने बच्चे के लिए क्या कर सकता है और एक बच्चा अपने पिता के लिए क्या कर सकता है? इसमें कोई शक नहीं कि जब–जब बच्चों पर परेशानी आती है तो सबसे पहले परेशान पिता ही होता है। वह अपने बच्चों को परेशानी से निकालने के लिए हर संभव कोशिश करता है। फिर मैंने उन सब पिताओं और उनके बेटों को ''पितृ दिवस'' के बारे में बताया और कहा 'कम से कम हम इस दिन को अपने पिता के लिए समर्पित कर सकते हैं और अपने तरीके से मना सकते हैं।'

पिता कौन है

पिता एक ऐसा व्यक्तित्व है जिसके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। यह एक ऐसा पवित्र रिश्ता है जिसकी तुलना किसी भी रिश्ते से नहीं की जा सकती है। बचपन में जब कोई बच्चा चलना सीखता है तो सबसे पहले अपने पिता की उँगली थामता है। नन्हा सा बच्चा पिता की उँगली थामे और उसकी बाँहों में बहुत सुकून पाता है। बोलने के साथ ही बच्चा जिद करना शुरू कर देता है और पिता उसकी सभी जिदों को पूरा करता है। बचपन से लेकर जवानी तक, जब तक पिता जिंदा रहता है, बच्चे की हर माँग को पूरी करने का प्रयास करता है। जैसे कि चॉकलेट, खिलौने, बाइक, कार, लैपटॉप आदि। उच्च शिक्षा के लिए विदेश भेजने तक पिता सभी माँगों को पूरी करता है। लेकिन कभी–कभी ऐसा भी समय आता है जब भाग–दौड़ भरी इस ज़िंदगी में बच्चों के पास अपने पिता के लिए समय नहीं होता है। भारतीय समाज में माता, पिता, गुरु आदि को भगवान माना जाता है। हमारे ग्रंथों में भी ऐसा ही लिखा है। इसमें कोई शक नहीं कि हमारा असली भगवान हमारा पिता ही होता है जिसके कारण हम इस दुनिया में आए हैं। पिता जिंदगी भर हमारे लिए कमाता है तो हमें भी चाहिए कि हम भी उनके सम्मान में कुछ करें जैसे कि श्रवण कुमार ने किया था। संतान में

अपने पिता के प्रति हमेशा श्रद्धा और विनम्रता का भाव होना चाहिए। चाहे कोई भी देश हो, संस्कृति हो, पिता का रिश्ता सबसे बड़ा माना गया है। भारत में तो पिता को ईश्वर का रूप माना गया है। यदि हम हिंदी कविता जगत की कविताएं देखें तो पिता पर काफी–कुछ लिखा गया है। पिता, पापा, अब्बा, बाबा, बाबूजी, बाऊजी, डैडी, आदि कितने ही नाम हैं इस रिश्ते के, पर भाव एक, प्यार एक, समर्पण एक है।

भारत में ''पितृ दिवस'' कैसे मनाया जाता है

''पितृ दिवस'' के लिए भारत में छुट्टी नहीं मिलती है। पिछले कुछ समय से कुछ कंपनियाँ ''पितृ दिवस'' के अवसर पर ग्रीटिंग कार्ड, गिफ्ट्स आदि को मार्केट में बेच रही हैं। कोई शक नहीं कि वे मुनाफा चाहती हैं लेकिन कहीं–न–कहीं उनके द्वारा ''पितृ दिवस'' को बढ़ावा भी मिल रहा है। कुछ बड़े शहरों (महानगरों) में इसे बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। कुछ स्कूलों में ''पितृ दिवस'' को मनाया जाता है और इस दिवस से संबंधित उपहार तैयार किए जाते हैं। एक पिता हर बच्चे के लिए पहला आदर्श व्यक्ति होता है। इसलिए एक बच्चे के लिए एक पिता की छवि शुरू से ही बहुत सम्मानीय होती है। ''पितृ दिवस'' जून के तीसरे रविवार को मनाया जाता है। यह एक संघीय अवकाश नहीं है। ''पितृ दिवस'' से मेरा तात्पर्य है कि जिसने पिता बनकर हमारे जीवन को प्रभावित किया है, जिसने हमें पहचान दी है, जिसने हमें नाम दिया है, उसको सम्मानित करने के लिए है। यह कार्ड, उपहार आदि के माध्यम से मनाया जाता है। घर पर या बाहर, लंच पर या डिनर पर भी मनाया जाता है। इस दिन पितृत्व और पिता परिवार की पहचान भी होती है।

एक छोटी सी कविता पिता के सम्मान में

पिता ने हमको योग्य बनाया,
कमा–कमा कर अन्न खिलाया।
पढ़ा–लिखा गुणवान बनाया,
जीवन पथ पर चलना सिखाया।
जोड़–जोड़ अपनी सम्पत्ति का,
बना दिया हक़दार...
हम पर किया बड़ा उपकार....
दंडवत बारम्बार...

वैसे तो आज मेरे पिताजी इस दुनिया में नहीं हैं और मेरा बेटा भी इस दुनिया में नहीं है लेकिन फिर भी उनकी याद में, मैं ''पितृ दिवस'' को अपने तरीके से मनाऊँगा। एक बेटा होने के नाते पिता के लिए और एक पिता होने के नाते बेटे के लिए मैं पूजा करूँगा और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करूँगा।

ज़ानें, क्या है घरेलू हिंसा अधिनियम?

सुशील रानी

'महिला दिवस' तभी सार्थक होगा, जब हम महिलाओं को सुरक्षित रख पाएं, उन्हें वह सम्मान दे पाएं जिसकी वे हकदार हैं और सबसे ज्यादा तब, जब वह अत्याचार सहने के लिए नहीं बल्कि अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाने की हिम्मत रख पाए। इसके लिए उन्हें जानना जरूरी है, घरेलू हिंसा अधिनियम के बारे में ।

महिलाओं पर घर की चार–दीवारी के अंदर कई अत्याचार होते हैं। कभी मायके के आंगन में तो कभी ससुराल की दहलीज पर, वह घरेलू हिंसा से जूझती नजर आती है, लेकिन इससे बचने का रास्ता उसे नजर नहीं आता। ऐसी ही महिलाओं के लिए जानना जरूरी है, घरेलू हिंसा अधिनियम को।

ससुराल वाले मुझसे इतना काम करवाते थे कि मेरे हाथों की अंगुलियों के नाखून सड़कर गिर गए, पति ने पैसे के लालच में मेरे सिर के बाल उखाड़ लिए या फिर क्योंकि मैं लड़की थी इसीलिए मेरे घरवालों ने मुझे चलती ट्रेन से नीचे फेंक दिया। ये कुछ उदाहरण हैं समाज में स्त्री जाति पर होने वाले अत्याचारों के, जिन्हें आए दिन टीवी चैनलों से लेकर अखबारों तक में हम देखते–पढ़ते रहते हैं।

कुछ दिनों तक महिलाओं की खौफनाक खबरें चर्चा में रहती हैं, फिर आप भी भूल जाते हैं और हम भी। इन सबके खिलाफ घरेलू हिंसा अधिनियम बनाया गया है लेकिन जानकारी के अभाव में पीड़िताएं इनका फायदा नहीं उठा पाती।

घरेलू हिंसा अधिनियम

घरेलू हिंसा अधिनियम का निर्माण 2005 में किया गया और 26 अक्टूबर 2006 से इसे लागू किया गया। यह अधिनियम महिला बाल विकास द्वारा ही संचालित किया जाता है। जोन के अनुसार आठ संरक्षण अधिकारी नियुक्त किए गए हैं जो घरेलू हिंसा से पीड़ित महिलाओं की शिकायत सुनते हैं और पूरी जांच–पड़ताल करने के बाद प्रकरण को न्यायालय भेजा जाता है।

यह कानून ऐसी महिलाओं के लिए है जो कुटुंब के भीतर होने वाली किसी किस्म की हिंसा से पीड़ित हैं। इसमें अपशब्द कहे जाने, किसी प्रकार की रोक–टोक करने और मारपीट करना आदि प्रताड़ना के प्रकार शामिल हैं। इस अधिनियम के अंतर्गत महिलाओं के हर रूप और किशोरियों से संबंधित प्रकरणों को शामिल किया जाता है। घरेलू हिंसा अधिनियम के अंतर्गत प्रताड़ित महिला किसी भी वयस्क पुरुष को अभियोजित कर सकती है अर्थात उसके विरुद्ध प्रकरण दर्ज करा सकती है।

परिस्थितियां बदली, पर नजरिया वही है...

स्त्री...युगों से बहती आ रही धारा सी, हर युग में उसकी स्थिति, परिस्थति बदली है। लेकिन उसे बेहतर शब्द के दायरे में रखना शायद न्याय नहीं। बीते सालों में वक्त के साथ–साथ बदलते जमाने में बहुत बदलाव आया। पुरानी दकियानूसी सोच को त्यागकर समाज ने नारी को घर की चार–दीवारी से बाहर निकलकर अपने सपनों को पूरा करने की आजादी दे दी है। पहले महिलाओं का दायरा सिर्फ घर और परिवार तक ही सीमित था, लेकिन आज वह दायरा काफी बढ़ गया है। हां यह बात सच है कि आज हर स्त्री, पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही है, परंतु आपको शायद अजीब लगे कि यह एक अधूरा सत्य है।

वास्तव में स्त्री को मिली आजादी आज भी अधूरी ही है, क्योंकि उसकी परिस्थितियां जरूर बदली हैं लेकिन स्थिति और उसके प्रति सोच नहीं। आजादी और आत्मनिर्भरता के नाम पर उसने बाहर निकलकर सिर्फ अतिरिक्त भार ग्रहण किया है। ऑफिस या काम से वापस घर लौटते स्त्री और पुरुष के प्रति अलग–अलग सोच और उनकी स्थितियों को देखकर यह कहना उचित लगता है।

बाहर भले ही महिलाएं अपना ओहदा और सम्मान बढ़ा पाई हों, लेकिन जरूरी नहीं कि परिवार की सोच और नजरिया भी उनके प्रति वैसा ही हो जैसा कि बाहरी दुनिया में। घर में उसके प्रति सोच और उसकी स्थिति में आज भी ज्यादा कोई अंतर नहीं आया है। एक ही काम को करने वाले स्त्री पुरुष जब अपने घर पहुंचते हैं, तो पुरुषों के प्रति विशेष भाव होता है, जैसे – ऑफिस से आए हैं, थक गए होंगे। गर्म चाय–नाश्ता और अलग–अलग तरह से उन्हें राहत देने का प्रयास किया जाता है। होना भी चाहिए।

लेकिन महिला कामकाजी हो तब भी और न हो तब भी, उसकी जिम्मेदारियां जस की तस हैं। महिलाओं के लिए देखभाल या चिंता का भाव कम ही दिखाई देता है, जो कि अनिवार्य है। उसे घर आते ही गर्म चाय या नाश्ता परोसना नहीं बल्कि बनाना होता है, जो उसकी जिम्मेदारी है। किसी और का सोचना तो दूर, अपनी जिम्मेदारियों और व्यस्तताओं के बीच वह खुद यह नहीं सोच पाती कि शायद वह भी थक गई होगी। कार्यस्थल से लौटते ही बच्चे, भोजन, बड़ों की देखभाल जैसी जिम्मेदारियों के अलावा कई छोटी–छोटी चीजों की उसे तुरंत चिंता करनी होती है।

यहां बात यह नहीं है कि महिलाओं को यह नहीं करना चाहिए। एक बहू, पत्नी और माँ के रूप में यह उसका कर्तव्य है, जिसके प्रति वह समर्पित है। परंतु बात उस सोच की है जो स्त्रियों को आज बाहर निकलने की छूट तो देती है लेकिन उसकी जिम्मेदारियों को साझा करना नहीं चाहती।

आज के युग में जब महिलाएं पुरुषों की हर मायने में बराबरी कर रही हैं, हमें समझने की जरुरत है कि जैसे स्त्रियों ने पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर उनके कार्यक्षेत्र को संभाला है वैसे ही पुरुष भी घर परिवार की छोटी–छोटी जिम्मेदारियों में स्त्री का साथ निभाए। वे उन्हें उनकी मशीनी जिंदगी से बाहर निकाले क्योंकि तभी एक स्वस्थ और खुशहाल समाज का निर्माण हो सकता है। अब वक्त है उसे देवी से ज्यादा इंसान के रूप में समझने का...

मूर्ति पूजा सही या गलत?

बरूण भट्टाचार्जी

हमारा सामान्य ज्ञान सूचनाओं पर आधारित होता है जो कि हम किसी तीसरे व्यक्ति या दोषपूर्ण साहित्य द्वारा प्राप्त करते हैं। यही जानकारी जो हम किसी तीसरे व्यक्ति या दोषपूर्ण साहित्य द्वारा प्राप्त करते हैं, इन्हीं आधी–अधूरी जानकारियों को अपने आप में समाहित किए हुए कभी–कभी हम हर विषय पर तर्क करते हुए पाए जाते हैं। कभी–कभी हमारा यह ज्ञान हमें समाज और देश को वास्तविकता से दूर ले जाता है। आज अगर हम अपने आसपास नजर दौड़ाएं तो पाएंगे कि हम में से हर किसी का विशेषकर धर्म को लेकर लिया गया निर्णय प्रायः एक झुकाव लिए हुए होता है। जो कि स्वाभाविक है क्योंकि हमारा निर्माण इसी परिवेश में होता है। इस स्वाभाविकता को मैं तब तक ही सही मानता हूँ जब तक व्यक्ति अशिक्षित है। परंतु जब व्यक्ति शिक्षा पाने के बाद भी उसी विचारधारा को लिए रहता है, तब उसकी शिक्षा पर थोड़ा संशय पैदा होता है। किसी भी संदर्भ में झुकाव कभी भी देश तथा जन हित या धर्म अनुकूल नहीं होता है।

यह सत्य है कि समाज और संसार की हर वस्तु, विचार के सदैव से ही दो पहलू रहे हैं। यह आपके दृष्टिकोण पर निर्भर करता है कि आप क्या देखना चाहते हैं। कागज और समाज के दृष्टिकोण से मैं हिंदू हूँ । परंतु मेरे लिए मस्जिद, मंदिर, गिरजाघर और गुरूद्वारा में रहने वाला एक ही है और जो जगह मेरे पास होती है, मै वहां उससे मिलने चला जाता हूँ।

वह एक ही है। यह आप पर निर्भर करता है कि आप किस भाषा का उपयोग करते हैं– हिंदी, इंगलिश, उर्दू या कोई और। हर धर्म ने ईश्वर को पाने के अलग–अलग रास्ते बताएं हैं, जिनकी मंजिल एक ही होती है, परंतु समय के साथ हर धर्म में कुरीतियां समाहित होती जाती हैं। धीरे–धीरे उसकी वास्तविक विचारधारा बिखरती जाती है, जोकि एक प्राकृतिक प्रक्रिया है। इन्हीं कुरीतियों को आधार मानकर कुछ अनुयायी मंजिल को भूलकर रास्तों की तुलना करने लगते हैं और समाज को बांटने का प्रयास करते हैं।

हर धर्म ने ईश्वर को मानने या अराधना करने के दो रास्ते या रूप बताए हैं– साकार और निराकार। साकार को हम मूर्ति पूजा भी कहते हैं। मूर्ति पूजा को लेकर हर विद्वान के अपने अलग–अलग विचार हैं। कोई इस बात से सहमत है तो कोई नहीं है। मेरे विचार में इस सहमति या असहमति पर प्रस्तुत तर्क आधारहीन और अत्यंत अतार्किक लगते हैं। वास्तविकता में साकार और निराकार दोनों एक ही हैं। यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम भगवान को किस रूप में देखते हैं। वास्तव में वह हमारे अंदर ही है। आपकी आस्था ही आपको भगवान के साकार या निराकार होने का अहसास कराती है। आप भगवान को जिस रूप में मानें, वह आपको उसी रूप में ही मिलेंगे।

भगवान 'श्री कृष्ण' ने ''गीता'' में कहा है कि ''जो भक्त मुझे जिस प्रकार मानते हैं मैं भी उनको उसी प्रकार मानता हूँ क्योंकि सभी मनुष्य सब प्रकार से मेरे ही मार्ग का अनुसरण करते हैं। भगवान को साकार या निराकार रूप में देखना हमारी आस्था पर निर्भर करता है। जो सकाम भक्त जिस–जिस देवता के स्वरूप को श्रद्धा से पूजना चाहते हैं उस भक्त की श्रद्धा को मैं उसी देवता के प्रति स्थिर करता हूँ। वह पुरूष उस श्रद्धा से युक्त होकर उस देवता का पूजन करता है और उस देवता से मेरे द्वारा ही विधान किए हुए उन इच्छित भोगों को निःसंदेह प्राप्त करता है।''

इन सब बातों से मेरा इतना ही तात्पर्य है कि आप जिस भी धर्म या सम्प्रदाय को मानें, परमात्मा के किसी भी रूप – साकार या निराकार को मानें, आप मूर्ति पूजा करते हैं या नहीं करते हैं, इससे कोई फर्क नही पड़ता है। दोनों ही रूपों में परमपिता परमेश्वर की अराधना सही एवं उपयुक्त है। लेकिन फर्क तब पड़ता है जब इन बातों को लेकर एक धर्म या सम्प्रदाय के लोग दूसरे धर्म या सम्प्रदाय के लोगों की बुराई करते हैं या आपस में लड़ते हैं और एक–दूसरे के विरोधी बन जाते हैं। इस प्रकार के कृत्य, ना तो धर्म हित में हैं और ना ही मानव हित में हैं। मानव का पहला धर्म, दूसरे मानव का और उसकी आस्था और भावना का सम्मान करना है।

माँ का बच्चों के नाम पत्र

अमिता आनंद

प्रिय बच्चों,

आज अपनी शिक्षा समाप्त कर तुम जीवन के एक अध्याय को समाप्त कर दूसरे चरण (कार्यक्षेत्र) में प्रवेश कर रहे हो। ऐसे में शुभकामनाओं के साथ तुम्हें मैं कुछ और भी कहना चाहती हूँ। आशा और विश्वास है कि इसे अपने जीवन व कार्यक्षेत्र में हमेशा याद रखोगे।

कॉलेज की मौजमस्ती और जिंदगी के प्रति गैर–जिम्मेदाराना रवैया छोड़, जिंदगी के प्रति संजीदगीपूर्ण नज़रिया रखने पर प्रत्येक क्षेत्र में सफलता तुम्हारे कदम चूमेगी। तात्पर्य यह नहीं कि तुम हँसना, मुस्कुराना या मस्ती करना छोड़ दो बल्कि यह है कि मौजमस्ती के साथ जीवन को संजीदगी से जियो।

आज प्रातः ही भ्रमण करते समय मैंने कुछ बच्चों को खेलते–खेलते गंदी भाषा में लड़ते– झगड़ते देखा। फिर देखा, उनमें से एक बच्चा दृढ़ता से अपनी बात रख रहा है। शुरु में झगड़ते हुए बच्चे यद्यपि उसकी बात को अनसुना कर रहे थे और दादागिरी न करने की नसीहत भी दे रहे थे, लेकिन थोड़ी देर बाद वे सभी उसकी बात को ध्यान से सुन उस पर अमल करते हुए दिखाई दिए। उसी समय अहसास हुआ कि किसी भी बात को कहने–सुनने का तरीका, शब्द, यहाँ तक कि लहजा अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण होता है। भाषा व शब्दों का चयन आपके व्यक्तित्व, परिवार व परवरिश को इंगित करता है। वैसे भी संत कबीर ने कहा है– 'ऐसी वाणी बोलिये मन का आपा खोये। औरन को शीतल करे आपहुं सीतल होय।' अर्थात किसी से भी ऐसे बात करिए कि सामने वाला प्रभावित हो जाए और सुनने में औरों को तो अच्छा लगे ही अपने आप को भी अच्छा लगे। ऐसे ही बचपन में पढ़ी एक कहानी याद आ गई। चलो बताती हूँ–

एक बार एक कवि हलवाई की दुकान में गया और जलेबी ले वहीं बैठ कर खाने लगे। ऐसे में एक कौआ कहीं से आया और दही के बरतन में चोंच मार कर उड़ गया। हलवाई को बहुत गुस्सा आया और उसने एक पत्थर उठाकर उसे दे मारा। कौए की किस्मत खराब थी। पत्थर सीधा उसे लगा और वह मर गया। यह घटना देख कवि मन जागा और उसने कोयले के टुकड़े से दीवार पर एक पंक्ति लिख दी 'काग दही पर जान गँवायो'। अर्थ स्पष्ट है– कौए ने दही के लिए अपनी जान गँवा दी।

तभी वहाँ पर एक लेखपाल महोदय (एकाउन्टेंट) आए जो कागजों में हेराफेरी के कारण निलम्बित हो गये थे। कवि की पंक्ति पर उनकी नजर पड़ी तो अनायास उनके मुँह से निकला 'कागद ही पर जान गँवायो' अर्थात कागज़ पर ही जान गँवा दी।

कुछ देर बाद एक मजनूँ टाइप लड़का, पिटा–पिटाया सा वहाँ पहुँचा। उसे भी लगा कि कहने वाले ने कितनी सही बात कही है 'का गदही पर जान गँवायो'। मतलब था क्या गधी पर जान गँवाई।

कहने का तात्पर्य है कि शब्द वही रहते हैं कभी–कभी उनको कहने, सुनने, समझने, परखने व देखने का नजरिया अर्थ का अनर्थ कर देता है अथवा अपने मन के अनुरुप ही अर्थ लगाए जाते हैं। इसलिए बात करते समय अथवा गुस्से में शब्दों का चयन सोच–समझ कर ही करना चाहिए। बात चाहे कड़वी हो लेकिन तरीके से कही गई हो तो सामने वाले को प्रभावित अवश्य करेगी। लखनवी अंदाज में कहा गया जुमला 'आप तो गधे हैं' अलग प्रभाव डालेगा और 'गधा है तू' अलग। तभी तो कुनैन की गोली को चाशनी में घोल कर देने से उसकी कड़वाहट तो खो जाती है लेकिन असर बरकरार रहता है।

भाषा पर आपका नियन्त्रण ही किसी भी क्षेत्र में आपके विश्वास एवं आत्मविश्वास को दर्शाता है और आपके व्यक्तित्व को उजागर करता है। ज्ञान के साथ आपका आत्मविश्वास ही सफलता का मूल है। आत्मविश्वास से तात्पर्य है कि जिस किसी क्षेत्र में कार्य करो उस पर अपनी पकड़ अवश्य ही बनाओ। शिक्षा अनवरत है इसे कभी भी, कहीं भी, किसी से भी प्राप्त करने में अपने को छोटा नहीं समझना। जीवन के किसी भी मोड़ पर, उम्र के किसी भी पड़ाव पर इसे लेने में नहीं झिझकना। ये आपके व्यक्तित्व को निखारती है और आत्मविश्वास को उपजाती व बढ़ाती है। चलो इसी से संबंधित एक कहानी और बताती हूँ। 'ज्ञान, धन और विश्वास तीनों बहुत अच्छे मित्र थे। तीनों में बहुत प्यार भी था। एक समय आया कि तीनों को जुदा होना पड़ा। तीनों ने एक दूसरे से प्रश्न किया कि अब वह कहाँ मिलेंगें? ज्ञान ने कहा, मैं मंदिर और विद्यालय में मिलूंगा। धन ने

कहा मैं अमीरों के पास मिलूंगा। विश्वास चुप था। दोनों ने उससे चुप होने का कारण पूछा तो विश्वास ने रोते हुए कहा कि मैं एक बार चला गया तो फिर कभी नहीं मिलूंगा।'

तात्पर्य है कि जिस किसी क्षेत्र में भी कार्य करो, कहीं पर भी रहो, किसी भी हाल में रहो अपने आत्मविश्वास को हमेशा बनाए रखना। शिक्षा जीवन की किसी भी परिस्थिति, स्थान व अवस्था में प्राप्त कर सकते हो। शिक्षा व आत्मविश्वास है तो धन कमाना मुश्किल नहीं। लेकिन अगर आत्मविश्वास चला गया तो शिक्षा व धन दोनों से दूर हो जाओगे।

असली सफलता तो वही है जब आसमान भी छू लो और पाँव भी जमीन पर रहें। तभी तो ज्ञानी कह गए हैं– 'मंजिल उन्हीं को मिलती है जिनके सपनों में जान होती है। पंखों से कुछ नहीं होता हौसलों से उड़ान होती है।'

बहुत कुछ कह दिया। ज़्यादा विस्तार में न जाते हुए इस विश्वास के साथ पत्र समाप्त करती हूँ कि ईश्वर जीवन में तुम्हें ढेर सारी सफलता और उन्नति दे।

तुम्हारी माँ

जीवन क्या है?

सपना आहूजा

मनुष्य का जीवन एक प्रकार का खेल है और मनुष्य इस खेल का मुख्य खिलाड़ी। यह खेल मनुष्य को हर पल खेलना पड़ता है। इस खेल का नाम है– ''विचारों का खेल''। इस खेल में मनुष्य को दुश्मनों से बचकर रहना पड़ता है। मनुष्य अपने दुश्मनों से तब तक नहीं बच सकता जब तक मनुष्य के मित्र उसके साथ नहीं है।

मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र "विचार" है और उसका सबसे बड़ा दुश्मन भी विचार ही है। मनुष्य के मित्रों को सकारात्मक विचार कहते हैं और मनुष्य के दुश्मनों को नकारात्मक विचार कहा जाता है। मनुष्य दिन में 60,000 से 90,000 विचारों के साथ रहता है। यानि हर पल मनुष्य एक नए दोस्त या दुश्मन का सामना करता है।

मनुष्य का जीवन विचारों के चयन का एक खेल है। इस खेल में मनुष्य को यह पहचानना होता है कि कौन सा विचार उसका दुश्मन है और कौन सा उसका दोस्त, और फिर मनुष्य को अपने दोस्त को चुनना होता है। हर एक दोस्त अपने साथ कई अन्य दोस्तों को लाता है और हर एक दुश्मन अपने साथ अनेक दुश्मनों को लाता है। इस खेल का मूल मंत्र यही है कि मनुष्य जब निरंतर दुश्मनों को चुनता है तो उसे इसकी आदत पड़ जाती है। अगर वह निरंतर दोस्तों को चुनता है, तो उसे इसकी आदत पड़ जाती है। जब भी मनुष्य कोई गलती करता है और कुछ दुश्मनों को चुन लेता है तो वे दुश्मन, मनुष्य को भ्रमित कर देते हैं और फिर मनुष्य का स्वयं पर नियंत्रण नहीं रहता और मनुष्य निरंतर अपने दुश्मनों को चुनता रहता है।

मनुष्य के पास जब ज्यादा मित्र रहते हैं और उसके दुश्मनों की संख्या कम रहती है तो मनुष्य निरंतर, इस खेल को जीतता जाता है। मनुष्य जब जीतता है तो वह अच्छे कार्य करने लगता है, सभी उसकी तारीफ करते हैं और वह खुश रहता है। लेकिन जब मनुष्य के दुश्मन, मनुष्य के मित्रों से मजबूत हो जाते हैं, तो मनुष्य हर पल इस खेल को हारता जाता है और निराश एवं क्रोधित रहने लगता है।

मनुष्य को विचारों के चयन में बड़ी सावधानी बरतनी पड़ती है क्योंकि मनुष्य के दुश्मन, मनुष्य को ललचाते हैं और मनुष्य को लगता है कि वही उसके दोस्त हैं। जो लोग इस खेल को खेलना सीख जाते हैं वे सफल हो जाते हैं। जो लोग इस खेल को समझ नहीं पाते वे जिन्दगी में पदार्थ तो बहुत पा लेते हैं पर जिन्दगी का असली आनंद खो देते हैं। जिन्दगी का असली आनंद खुश रहने में है और यह खुशी तब मिलती है जब हम दिल और दिमाग दोनों से स्वस्थ रहते हैं।

इस खेल में ज्यादातर लोगों की समस्या यह नहीं है कि वे अपने दोस्तों और दुश्मनों को पहचानते नहीं बल्कि समस्या यह है कि वे दुश्मनों को पहचानते हुए भी उन्हें चुन लेते हैं। ईश्वर (या सकारात्मक शक्तियाँ) मनुष्य को समय–समय पर कई तरीकों से यह समझाते रहते हैं कि इस खेल को कैसे खेलना है। लेकिन यह खेल मनुष्य को ही खेलना पड़ता है। यही है जीवन।

जिन्दगी

शकुन्तला अरोड़ा

अपना भविष्य सँवारने के खेल में,
वर्तमान दाँव पर लगा रहे हम ।
दो पल की खुशी की खातिर,
हर पल का चैन गंवा रहे हम ।।

सुकून से मिले दो वक्त की रोटी,
इसलिए परोस कर रखी थाली ठुकरा रहे हम ।
बच्ची को मिले हर वो सुकून,
जिसकी चाहत थी मुझको,
इसलिए उसके संग बच्चा बन,
वो मासूम बचपन नहीं जी पा रहे हम ।।

खुद को आशीर्वाद देने लायक,
सामर्थ्यवान बनाने की कोशिश में,
मातृ–पितृ व श्रेष्ठ जनों के आशीष को,
प्राप्त नहीं कर पा रहे हम ।

स्नेह की बारिश करने की जुगत में,
अनुजों प्रियजनों को स्नेह नहीं दे पा रहे हम ।।
जीवन संगिनी को हर खुशी देने और
उनके साथ भविष्य में सुख लहरियां लेने के प्रयास में,
उनके वर्तमान को नजर अंदाज कर रहे हम ।।

तुझे बेहतर बनाने की कोशिश में,
तुझे ही वक्त नहीं दे पा रहे हम ।
हाँ माफ करना मुझे ऐ जिन्दगी,
तुझे जी नहीं पा रहे हम ।।

सोशल मीडिया एवं हिंदी साहित्य

राजेन्द्र प्रसाद

आज के समय में तकनीक इतनी तेजी से बदल रही है कि हम जब तक किसी तकनीक को समझते हैं, उससे पहले नई तकनीक सामने आ जाती है। जो आज 'अप–टु–डेट' है, वह कल 'आउट डेटड' हो रहा है। ऐसे समय में सोशल मीडिया ने न केवल हिंदी साहित्य को प्रभावित किया है बल्कि भाषा को भी बदला है तथा साहित्य और भाषा की दुनिया में विस्फोट किया है। अब एक जगह बैठकर पढ़ना या टी.वी. देखना बाध्यकारी नहीं रहा। सोशल मीडिया के कारण ही हिंदी का दायरा व्यापक हो रहा है, वह इंजीनियरिंग, मैनेजमेंट आदि विभिन्न क्षेत्रों के लोगों से सीधे जुड़ रही है। इसलिए हिंदी की परिधि इतनी बढ़ रही है कि उससे समाज के दबे–कुचले तथा वंचित समूहों को सोशल मीडिया से वाणी मिल रही है। इतना ही नहीं, स्त्री–लेखन को भी अभिव्यक्ति का समर्थ माध्यम इसी ने उपलब्ध कराया है।

ऐसे में यह देखना तर्कसंगत होगा कि सोशल मीडिया के आने के बाद साहित्य और भाषा की स्तरीयता में कितना परिवर्तन आया है, संपादक जैसे गेटकीपर के हट जाने से साहित्य में लोगों की रूचि कितनी बढ़ी है, इस माध्यम पर प्रकाशित साहित्य का स्थायित्व कितना है और इसमें संभावनाएँ कितनी हैं। यह बात बिल्कुल सच है कि जो काम प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया मिलकर भी नहीं कर पाए उसे सोशल मीडिया के छोटे–छोटे माध्यमों ने कर दिखाया। इंटरनेट के कारण रचनाकार अपनी रचना को पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है और पाठक उसका मूल्यांकन करते हैं। पाठक भी अपने विचार खुलकर व्यक्त करने के लिए स्वतंत्र हैं और रचनाकार को भविष्य में सचेत रहने की सीख भी देते हैं, लेकिन इसकी कुछ कमियाँ भी हैं जैसे–तात्कालिकता, सतहीपन, काल्पनिक भ्रम आदि। फेसबुक जैसे सोशल मीडिया ने तमाम हिंदी जानने वालों को रचनाकार बना दिया है। सब के सब रचनाकार की पंक्ति में खड़े हो गए हैं। कई बार हम बिना पढ़े लाइक कर देते हैं, इससे रचनाकार भ्रमित हो जाता है लेकिन चाहे जो कहें, सोशल मीडिया भाषा के प्रचार–प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इसके लिए लेखकों को अपनी तारीफ सुनने के मोह से बाहर आकर आत्मानुशासन की कठोर डोर से लिखना होगा। इससे साहित्य के साथ–साथ भाषा पाठकों तक बहुत आसानी से पहुँच जाएगी। सब एक ही प्लेटफॉर्म पर एक–दूसरे से संवाद करेंगे। सबसे विशेष बात यह है कि लेखक और पाठक के बीच की दूरी कम हो जाएगी।

हिंदी के एक वर्ग का मानना है कि सोशल मीडिया अपने आपको उद्घाटित करने का एक बेहतर मंच हैं। निस्संदेह इससे हिंदी फैल रही है। आज इंटरनेट और फेसबुक के माध्यम से कबीर–सूर से लेकर एकदम नए रचनाकारों की कृतियाँ एक साथ पढ़ने के लिए उपलब्ध हैं। यह एक तथ्य है कि इंटरनेट के कारण ही विश्व पुस्तक मेलों में हिंदी के स्टॉलों पर भीड़ पहले से अधिक बढ़ने लगी है। फेसबुक जैसे सोशल मीडिया के कारण लोग लेखकों से सीधे जुड़ते हैं। सोशल मीडिया के आने से पहले, एक प्रकार की संवादहीनता का माहौल बना हुआ था। स्मार्टफोन की इस कनेक्टिविटी ने हिंदी साहित्य की लोकप्रियता बढ़ाने में निश्चित रूप से सहयोग दिया है। अब समय की कमी के बावजूद लोग आपस में जुड़े रह पा रहे हैं। अपने सुख–दुख आपस में साझा कर रहे हैं।

हिंदी फेसबुक और इंटरनेट के कारण ही केवल भारत की सीमाओं में कैद नहीं रही बल्कि वह बड़े स्तर पर संवाद और संपर्क की कड़ी बनी। लेकिन इसके इंटरनेट प्रयोग के लिए सबसे बड़ी बाधा हिंदी के मानकीकृत सॉफ्टवेयर्स की अनुपलब्धता है। इस संबंध में डॉ. अर्जुन चव्हाण जी का सुझाव है–

एक ऐसा सॉफ्टवेयर हो जिसमें अब तक के बनाए गए सभी सॉफ्टवेयर पैकेज की जानकारी और उसमें निहित सुविधाओं का परिचय दिया गया हो। इससे हिंदी में कार्य करनेवालों को सुविधा होगी तथा संगणक के हिंदीकरण में वृद्धि होगी, इसमें संदेह नहीं। सोशल मीडिया की व्यापकता अगर देखनी है तो इंटरनेट का इस्तेमाल करनेवालों की संख्या देखना उचित होगा। मोबाइल पर इंटरनेट का इस्तेमाल करने वालों की संख्या भी दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है। इस प्रकार निश्चित रूप से सोशल मीडिया कितनी तेजी से फैल रहा है, इसका अंदाजा लगाया जा सकता है। निश्चित रूप से सोशल मीडिया की सर्व सुलभता ने हिंदी को भी प्रभावित किया है। गूगल इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार 2018 तक लगभग आधा देश इंटरनेट के माध्यम से जुड़ जाएगा। भारत में बढ़ते इंटरनेट उपभोक्ताओं के कारण सोशल मीडिया का वर्चस्व भी मजबूत हो रहा है। इसी वजह से हिंदी जानने वालों की तादाद में वृद्धि हुई है और शायद बहुत सारे लोगों के हिंदी ज्ञान में भी बढ़ोतरी हुई है।

अलहड़ बचपन

मोनिका सैनी

अलहड़ बचपन कहाँ गया वो अलहड़ बचपन,
खेल–खेल में बीत गया वो अलहड़ बचपन।
साथ–साथ जो खेला करते घंटों बचपन में
वो अब थकने लगे हैं, बाल उनके पकने लगे हैं।।

साथ–साथ रहते थे जो दोस्त,
उनके पास अब समय नहीं है।
सब पर भारी जिम्मेदारी है,
सबको कोई न कोई बीमारी है।।

उफ! कहाँ गया वो अलहड़ बचपन,
जो कल खुद बच्चे थे आज उनके भी बच्चे हैं।
फुरसत के लम्हों की सब के पास कमी है,
किसी को घर की तो किसी को लोन की टेंशन है,
दोस्तों के लिए तो टाइम नहीं है।।

जिन चेहरों से हँसी नहीं रूकती थी,
आज हँसी उनकी रूक सी गई है।
संसार की इस भाग–दौड़ में,
हँसी कहीं खो सी गई है।।

समय बस गुजर रहा है,
मेरा जवान दोस्त अधेड़ लग रहा है।
जो मजाक कर ठहाके मारते नहीं रूकता था,
वो आज जिंदगी की टेंशन से रोते नहीं रूकता है।।
कहाँ गया वो अलहड़ बचपन?
कहाँ गया वो अलहड़ बचपन?

असमानता को दूर भगाएं

सत्ते सिंह

वर्तमान में असमानता ही देश में सबसे बड़ी समस्या है। हमें इसे ख़त्म करना होगा। सामाजिक असमानता, आर्थिक असमानता, शैक्षिक असमानता, क्षेत्रीय असमानता और औद्योगिक असमानता ही देश को विकसित बनाने में सबसे बड़ी बाधा बनी हुई है।

सामाजिक असमानता के कारण ही आज समाज में आपसी प्रेम, भाईचारा, मानवता और नैतिकता खत्म होती जा रही है। व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए समाज को जाति और धर्म में बाँटना उचित नहीं है।

आर्थिक असमानता के कारण ही आज समाज में अमीरों और अरबपतियों की संख्या तो बढ़ रही है परन्तु समाज के गरीब लोग जिस हाल में थे वे आज भी वहीं पर खड़े हैं या और गरीब होते जा रहे हैं। आर्थिक न्याय ही सामाजिक न्याय की नींव है। आर्थिक न्याय के बिना हम सामाजिक न्याय की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। यदि वास्तव में हम सामाजिक न्याय के पक्षधर हैं तो हमें आर्थिक न्याय को मजबूत बनाना ही होगा।

शैक्षिक असमानता के कारण ही हम समाज में वंचित वर्गों को अच्छी शिक्षा दे पाने में असफल साबित हो रहे हैं। हम जानते हैं कि शिक्षा के बिना किसी व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का विकास हो ही नहीं सकता है। शिक्षा ऐसी हो जो हमें सोचना सिखाए, कर्त्तव्य और अधिकार का बोध कराए, हमें हमारा हक़ दिलाए और हमें समाज और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदार बनाए। क्या हम ऐसी शिक्षा, समाज के सभी वर्गों को दे पाने में सफल साबित हो रहे हैं?

क्षेत्रीय असमानता के कारण ही आज हम देश के सभी भागों विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों को विकास की मुख्य धारा से जोड़ने में विफल साबित हो रहे हैं। भारत को विकसित देशों की श्रेणी में लाने के लिए हमें सुदूरवर्ती गाँवों में विकास की किरणों को पहुँचाना होगा। आखिर हम दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता, चेन्नै, बेंगलुरु, अहमदाबाद, पुणे और हैदराबाद की तुलना में अन्य शहरों और गाँवों का विकास करने में असफल क्यों साबित हो रहे हैं? हमें इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना होगा। यदि हम इन्हीं शहरों जैसे और शहर बनाने में कामयाब होते हैं तो न सिर्फ इन शहरों पर से लोगों का दबाव कम करने में कामयाब होंगे बल्कि हमें इस तरह के कई और शहर भी विकसित करने में सफलता मिलेगी जो क्षेत्रीय असफलता को ख़त्म करने में मील का पत्थर साबित होगा।

औद्योगिक असमानता के कारण ही आज हमें कई गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। ऐसा देखा जा रहा है कि जिस शहर में पहले से ही बहुत सारे उद्योग–धंधे लगे हुए हैं आज भी उन्हीं जगहों पर नए–नए उद्योग और कल–कारखाने लगते जा रहे हैं। हमें नए–नए औद्योगिक शहर बसाने की जरुरत है। इसके दो फायदे होंगे। पहला, पुराने औद्योगिक शहरों पर लोगों का जो बोझ बढ़ता जा रहा है वह कम होगा और दूसरा, हम नए औद्योगिक शहर बसाने में भी कामयाब होंगे।

इसी तरह बिजली, पानी, सड़क, स्वास्थ्य, रेल और कृषि आदि अनेक क्षेत्रों में असमानताओं से आम जनों को जूझना पड़ रहा है। कहीं चौबीसों घंटे बिजली तो कहीं आज भी लोग लालटेन और ढिबरी युग में जीने को विवश हैं। कहीं पानी ही पानी तो कहीं पानी के लिए हाहाकार। कहीं पक्की सड़कों की भरमार तो कहीं कच्ची सड़क भी नहीं। कहीं बड़े–बड़े अस्पताल तो कहीं प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र भी नहीं। कहीं रेलवे लाइनों का जाल तो कहीं रेलवे का घोर अभाव। कहीं किसानों के लिए आधुनिक संसाधनों की भरमार तो कहीं किसान बेहाल। यह असमानता उस घुन की तरह है जो अंदर ही अंदर समाज को खोखला बनाती जा रही है। हमें हर हाल में इस असमानता को मिटाना ही होगा।

आम जनों को जगाना होगा, असमानता को मिटाना होगा।

कंवर सिंह

गलती का अहसास

उन दिनों ईश्वरचंद्र विद्यासागर एक संस्कृत कॉलेज के आचार्य थे। एक बार उन्हें किसी काम से प्रेसीडेंसी कॉलेज के अंग्रेज कैर से मिलने जाना पड़ा। कैर भारतीयों से घृणा करते थे। जिस समय ईश्वरचंद्र उनके पास पहुँचे, वह मेज पर जूते रख, पैर फैलाकर बैठे हुए थे। ईश्वरचंद्र को देखकर भी न तो वह उनके सम्मान में खड़े हुए और न ही उनके अभिवादन का जवाब दिया। ईश्वरचंद्र ने उस समय तो कुछ नहीं कहा, लेकिन तय कर लिया कि कैर को उसकी गलती का अहसास अवश्य कराएंगे।

संयोगवश, कुछ ही समय बाद कैर को ईश्वरचंद्र विद्यासागर से एक काम पड़ गया। कैर उनके पास पहुँचे। कैर को अपने पास आते देख, उन्होंने चप्पलें पहनीं और मेज पर पैर फैलाकर बैठ गए। कैर एकदम सामने आ खड़े हुए, फिर भी उन्होंने बैठने के लिए नहीं कहा। यह देखकर कैर गुस्से से तिलमिला गए और उन्होंने इस दुर्व्यवहार की शिकायत लिखित में शिक्षा परिषद के सचिव डॉ. मुआट से कर दी। डॉ. मुआट ईश्वरचंद्र विद्यासागर को भली–भांति जानते थे। फिर भी उन्होंने इस सिलसिले में ईश्वरचंद्र विद्यासागर को पूछताछ के लिए बुलाया और कैर की शिकायत का जिक्र किया। कैर वहीं सामने गर्व से सीना तान कर खड़े थे। डॉ. मुआट की बात सुनकर ईश्वरचंद्र बोले, हम भारतीय लोग तो अंग्रेजों से ही शिष्टाचार सीखते हैं। जब मैं कैर से मिलने गया तो ये जूते पहनकर आराम से मेज पर पैर फैलाकर बैठे थे और इन्होंने इसी अंदाज में मेरा स्वागत किया था। मुझे लगा कि शायद यूरोपीय शिष्टाचार ऐसा ही होता है। यह सुनकर कैर बहुत शर्मिन्दा हुए और उन्हें अपनी गलती का अहसास हो गया।

शायरी

मत मुस्कुराओ इतना कि फूलों को खबर लग जाए,
हम करें आपकी तारीफ और आपको नजर लग जाए।
खुदा करे बहुत लम्बी हो आपकी जिंदगी,
और उस पर भी हमारी उम्र लग जाए।

हमने भी कभी प्यार किया था,
थोड़ा नही बेशुमार किया था।
दिल टूट कर रह गया,
जब उसने कहा, अरे मैंने तो मजाक किया था।

हकीकत कहो तो उनको ख्वाब लगता है,
शिकायत करो तो उनको मजाक लगता है।
कितने शिद्दत से उन्हें याद करते हैं हम,
और एक वो हैं, जिन्हें ये सब इत्तेफाक लगता है।

जिंदगी में अभी तो बहुत चलना बाकी है,
अभी तो कई इम्तिहानों से गुजरना बाकी है।
हमें लड़ना है जिंदगी की सभी मुश्किलों से,
हमने तो सिर्फ मुट्ठी भर जमीन नापी है,
अभी तो सारा जहाँ नापना बाकी है।

लौट पीछे की तरफ ए इंसान

राज रानी

भोगवादी प्रवृत्तियों से उत्प्रेरित आज का मानव समाज भौतिकवाद के जिस क्षेत्र में लगातार पूरी शक्ति एवं क्षमता से दौड़ रहा है उस का लक्ष्य क्या है? इस दौड़ में भाग ले रहे व्यक्तियों की अंतिम मंजिल कहाँ है? औद्योगिक क्षेत्र के मगरमच्छ एवं छल–कपट तथा स्वार्थपूर्ण राजनीतिज्ञों के गठबंधन ने आज मानवीय मूल्यों का जितना ह्रास किया है, सम्भवतः इससे पहले ऐसा कभी था नहीं। इंसान की आधारभूत इच्छाओं की पूर्ति के नाम पर, योजनाबद्ध ढंग से वस्तुओं के प्रचार के माध्यम से इच्छाओं में असीम वृद्धि कर दी गई है। परिणामतः हर वस्तु की कीमत बढ़ गई है, मूल्य किसी का नहीं रहा अर्थात Price' बढ़ गई है Value कम हो गई है।

पारस्परिक संबंधों में माधुर्य, भौतिक दृष्टिकोण ने समाप्त कर दिया है। आज हम उस शाश्वत सत्य को भूल गए हैं जिसकी घोषणा हजारों वर्ष पूर्व उपनिषदों के ऋषियों ने की थी। कठोपनिषद के ऋषि यमराज, नचिकेता उपाख्यान के माध्यम से बताते हैं कि आज का इंसान जिन चीजों को चाहता है उन्हें और उन सब से भी कई गुणा अधिक आकर्षक प्रलोभन यमराज ने नचिकेता को दिए। धन–जमीन, हाथी–घोड़े, अप्सरा, लम्बी आयु, भोग की क्षमता, सब कुछ यमराज नचिकेता को देते हैं। किन्तु उत्तर में नचिकेता कहता है– 'न वितेन तर्पणीयो मनुष्यों' अर्थात कोई भौतिक उपलब्धि मनुष्य के परितोष का कारण नहीं बन सकती।

मनुष्य जीवन की सार्थकता पारस्परिक स्नेह संबंधों को भावपूर्ण ढंग से निभाने में ही है। निकटतम हैं कौटुम्बिक – पारिवारिक संबंध। माता–पिता, भाई–बहन, पति–पत्नी एवं इन से संबंधित अन्य सब रिश्ते। यदि इन सब में परस्पर प्रेम कर पाए यह संभव नहीं।

आज के इस तनावपूर्ण एवं अभावग्रस्त युग में भी जो लोग इन भावपूर्ण संबंधों को सस्नेह निभा रहे हैं, वे पूर्णतः संतुष्ट एवं प्रसन्नतापूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं। कई लोग अपने माता–पिता की स्मृति में पूरी ईमानदारी से कहते हैं:–

मेरी साँसों में घुली है जो
दुआ, भूला नहीं।

मेरी मसजिद में जो रहता है
खुदा, भूला नहीं।।

आप चलते हैं मेरी आँखों की,
उंगली थाम कर।

मैं अंधेरों में भी अपना रास्ता,
भूला नहीं।।

(यह लेख मैंने मशहूर 'आलम जन्त्री पत्रिका' में "स्वामी अखण्डानन्द गिरि जी" द्वारा लिखा–पढ़ा था जो जीवन की सार्थकता को दर्शाता है।)

संस्थान में राजभाषा हिंदी

संस्थान अपने मूल उद्देश्य शिक्षण, प्रशिक्षण एवं अनुसंधान की ही भांति संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के प्रति पूरी तरह सचेत और जागरूक है। संस्थान में कार्यालयीन कामकाज में राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग किया जाता है।

हाल ही में 14 सितम्बर 2016 को हिंदी दिवस के अवसर पर संस्थान को 'क' क्षेत्र में राजभाषा के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए माननीय राष्ट्रपति महोदय श्री प्रणब मुखर्जी द्वारा वर्ष 2015–16 का ''राजभाषा कीर्ति पुरस्कार'' द्वितीय प्रदान किया गया है।

संस्थान में वर्ष 2016–17 के दौरान हिंदी के प्रगामी–प्रयोग से संबंधित किए गए कार्यों का विवरण निम्न प्रकार है :–

1. **धारा 3(3) का अनुपालन** – संस्थान में सभी कार्यालय आदेश, परिपत्र, कार्यालय ज्ञापन, अधिसूचनाएं, संविदाएं, करार, टेंडर के फार्म और नोटिस, नियम, दोनों सदनों में प्रस्तुत किए जाने वाले सभी सरकारी कागज व प्रशासनिक रिपोर्ट आदि द्विभाषी रूप में जारी की गई।

2. **राजभाषा नियम, 1976 के नियम 11 का अनुपालन** – संस्थान के कोड, भर्ती नियम, संविधान, पुस्तकालय नियम व विनियम, अंशदायी भविष्य निधि नियम, सेवाओं की हस्तपुस्तिका, नागरिक प्राधिकार, परामर्श नियम, पुस्तकालय नियम व विनियम आदि द्विभाषी रूप से संस्थान की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं।

   (क) सभी साइनेज, रबड़ की मोहरें, नामपट्ट, लोगो, सीलें, पत्र शीर्ष, विजिटिंग कार्ड आदि द्विभाषी रूप में उपयोग में लाए गए।

   (ख) संस्थान में कर्मचारियों द्वारा सभी प्रपत्र जैसे अवकाश आवेदन, चिकित्सा प्रतिपूर्ति बिल, यात्रा रियायत बिल, वाहन व्यय, ट्यूशन फीस प्रतिपूर्ति इत्यादि पूरी तरह द्विभाषी रूप में उपयोग में लाए गए।

   (ग) संस्थान में आयोजित होने वाले सभी प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रवेश पत्रों का द्विभाषी रूप में उपयोग किया गया।

3. **राजभाषा नियम, 1976 के नियम 5 का अनुपालन** – संस्थान के सभी अनुभागों/विभागों में प्राप्त हिंदी पत्रों का उत्तर हिंदी में ही दिया गया।

4. **पत्राचार की स्थिति** – संस्थान ''क'' क्षेत्र में स्थित है, इस प्रकार "क" और "ख" क्षेत्र में अधिक से अधिक पत्राचार हिंदी/द्विभाषी रूप में किया गया। इस प्रकार संस्थान में हिंदी पत्राचार की स्थिति संतुष्टिपूर्ण रही।

5. **संस्थान की द्विभाषी वेबसाइट** – संस्थान की वेबसाइट हिंदी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में है तथा अंग्रेजी वेबसाइट के साथ–साथ हिंदी वेबसाइट को समय–समय पर अद्यतन किया गया।

6. **प्रशिक्षण कार्य** – राजभाषा नियमों के अंतर्गत सेवाकालीन प्रशिक्षण के लक्ष्य को शत प्रतिशत पूरा करने हेतु हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण के लिए शेष कर्मचारियों को नामित किया गया। दो कर्मचारियों ने सफलतापूर्वक प्रशिक्षण पूरा किया तथा सफल प्रशिक्षणार्थियों को सरकार की ओर से मिलने वाले वित्तीय लाभ दिए गए। प्रशिक्षित सभी कर्मचारियों से संस्थान में अधिक से अधिक हिंदी में काम लिया जा रहा है।

7. **शिक्षण कार्यक्रम** – संस्थान में प्रबंधन विकास कार्यक्रमों के अंतर्गत देश के विभिन्न स्थानों से आए अधिकारियों को हिंदी माध्यम से प्रबंधन व अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय पर सघन शिक्षण/प्रशिक्षण दिया गया।

8. **छमाही प्रोत्साहन योजना** – राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए प्रोत्साहन योजनाओं का प्रावधान किया गया है। वाणिज्य मंत्रालय के निर्देशानुसार संस्थान में छमाही प्रोत्सहान योजना लागू की गई है जिसके अंतर्गत हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने वाले कर्मचारियों को नकद पुरस्कार के रूप में राशि ₹ 1000 प्रदान की गई।

9. **वार्षिक प्रोत्साहन योजना** – राजकीय कार्यों के लिए हिंदी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से चालू वर्ष के दौरान वार्षिक प्रोत्साहन योजना चलाई गई है जिसके अंतर्गत पूर्ण रूप से हिंदी में कार्य करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को नकद पुरस्कार के रूप में राशि ₹ 5000 का प्रावधान किया गया है।

10. **नराकास की बैठक** – संस्थान 'क' क्षेत्र में स्थित होने के कारण माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा गठित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) का सदस्य कार्यालय है। संस्थान ने वर्ष के दौरान नराकास द्वारा समय–समय पर आयोजित सभी बैठकों में अपनी भागीदारी दर्ज की। इसके अतिरिक्त, नराकास द्वारा संस्थान के हिंदी अधिकारी को दिए गए सात सदस्य कार्यालयों की छमाही रिपोर्ट की समीक्षा व इन कार्यालयों में राजभाषा के कार्यान्वयन के दायित्व का निर्बाध रूप से निर्वहन किया गया। वर्ष के दौरान नराकास सदस्य कार्यालयों द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में संस्थान के कर्मचारियों ने अपनी सहभागिता दर्ज की।

11. **तिमाही बैठक** – वर्ष 2016–17 के दौरान राजभाषा नियमों के अनुपालनार्थ प्रत्येक तिमाही में निदेशक महोदय की अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया गया। इन बैठकों के दौरान संस्थान में राजभाषा कार्यों की समीक्षा व प्रगामी प्रयोग संबंधी निर्णय लिए गए। बैठकों की तिथि निम्न प्रकार है :–

तिमाही	आयोजन की तिथि
जनवरी–मार्च 2017	20 अप्रैल 2017
अक्टूबर–दिसम्बर 2016	17 जनवरी 2017
जुलाई–सितम्बर 2016	30 सितम्बर 2016
अप्रैल–जून 2016	28 जून 2016

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान

विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

17 जनवरी 2017

श्री अजय कुमार भल्ला, निदेशक महोदय की अध्यक्षता में आयोजित तिमाही हिंदी बैठक

12. हिंदी कार्यशाला – संस्थान में हिंदी कार्यशालाओं का नियमित आयोजन किया गया। ये कार्यशालाएं अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने हेतु प्रेरित एवं प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से आयोजित की गई। वर्ष 2016–17 में हिंदी कार्यशालाओं की तिथि इस प्रकार है:–

तिमाही	आयोजन की तिथि
जनवरी–मार्च 2017	22 मार्च 2017
अक्टूबर–दिसम्बर 2016	28 दिसम्बर 2016
जुलाई–सितम्बर 2016	28 सितम्बर 2016
अप्रैल–जून 2016	30 जून 2016

28 दिसम्बर 2016 को संस्थान में हिंदी कार्यशाला का आयोजन

13. हिंदी में प्रकाशन – संस्थान की वार्षिक रिपोर्ट वर्ष 2015–16 का हिंदी में प्रकाशन किया गया। हर वर्ष की भांति, हिंदी कक्ष द्वारा गृह–पत्रिका 'यज्ञ' अंक–9 वर्ष 2016 का प्रकाशन किया गया। पत्रिका में संस्थान की मुख्य गतिविधियां तथा राजभाषा के नियमों के अतिरिक्त, आईआईएफटी परिवार अपने मन की बात कविता, कहानी, नाटक, निबंध, आदि के माध्यम से व्यक्त करता रहा है। इससे सृजनात्मकता को बढ़ावा मिलता है एवं विचारों का आदान–प्रदान होता है।

14. निरीक्षण : 04 नवम्बर 2016 को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय–1 (दिल्ली) से आए उप–निदेशक (कार्यान्वयन) श्री प्रमोद कुमार शर्मा ने राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित मानकों के आधार पर संस्थान का निरीक्षण किया तथा राजभाषा के कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियों की प्रशंसा की। इसके अंतर्गत संस्थान की अद्यतन द्विभाषी वेबसाइट व हिंदी गृह–पत्रिका "यज्ञ" की विशेष रूप से सराहना की गई। इसके अतिरिक्त, सक्षम अधिकारी द्वारा संस्थान में राजभाषा के कार्यान्वयन की उत्तरोत्तर वृद्धि के लिए दिए गए सुझावों पर सकारात्मक कार्रवाई की गई।

19 अक्तूबर 2016 को संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप–समिति द्वारा संस्थान के संदर्भ में किए गए राजभाषायी निरीक्षण का दृश्य।

15. 19 अक्तूबर 2016 को संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप–समिति द्वारा संस्थान के संदर्भ में राजभाषा कार्यों का निरीक्षण किया गया। इस दौरान समिति द्वारा बताई गई ध्यान देने योग्य बातों का अनुपालन किया गया।

19 अक्तूबर 2016 को संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप–समिति द्वारा संस्थान के संदर्भ में किए गए राजभाषायी निरीक्षण का दृश्य।

16. 5–6 अप्रैल 2017 के दौरान संस्थान दिल्ली परिसर से हिंदी अधिकारी द्वारा कोलकाता परिसर पर राजभाषायी निरीक्षण दौरा किया गया। इस दौरान कोलकाता परिसर पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसके अंतर्गत राजभाषा नियमों की जानकारी दी गई तथा हिंदी कार्यों के लिए कंप्यूटर की उपयोगिता संबंधी व्यावहारिक पक्ष का प्रदर्शन किया गया।

कोलकाता परिसर पर हिंदी कार्यशाला के सहभागी

भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 में देवनागरी को भारत की राजभाषा हिंदी की आधिकारिक लिपि स्वीकार किया गया है। देवनागरी मात्र हिंदी की ही लिपि नहीं है संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल संस्कृत, मराठी, डोगरी, बोडो, नेपाली, मैथिली आदि भाषाओं की आधिकारिक लिपि भी है। संथाली, कोंकणी तथा सिंधी के अतिरिक्त अपभ्रंश और प्राकृत भी नागरी में ही लिखी जाती हैं। भारत के संविधान निर्माता इतने नासमझ नहीं थे कि वे बिना सोचे–समझे नागरी लिपि को राज भाषा हिंदी की अधिकृत लिपि स्वीकार करते। जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

– डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

संस्थान में हिंदी सप्ताह

संस्थान संविधान के नियम व विनियमों के अनुपालन में संघ की राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए कटिबद्ध है। प्रमाण के रूप में 14 सितम्बर 2016 को हिंदी दिवस के अवसर पर माननीय राष्ट्रपति महोदय श्री प्रणब मुखर्जी द्वारा संस्थान को ''क'' क्षेत्र में राजभाषा के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए ''राजभाषा कीर्ति पुरस्कार'' द्वितीय प्रदान किया गया। संस्थान में 07–14 सितम्बर 2016 के दौरान हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया। संस्थान के कुलसचिव डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता ने हिंदी सप्ताह का उद्घाटन किया। इस दौरान निबंध प्रतियोगिता, टिप्पण एवं प्रारूपण प्रतियोगिता तथा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई। संस्थान के अधिकांश अधिकारियों व कर्मचारियों ने इन प्रतियोगिताओं में अपनी सहभागिता दर्ज की। इसी श्रृंखला में, दिनांक 14 सितम्बर 2016 को हिंदी सप्ताह के समापन के अवसर पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया ताकि मनोरंजन के माध्यम से हिंदी का संदेश प्रत्येक कर्मचारी तक पहुंचाया जा सके। इस अवसर पर हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न इनामी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को संस्थान के तत्कालीन निदेशक डॉ. सुरजित मित्रा ने पुरस्कृत किया। पुरस्कार विजेता कर्मचारी निम्न प्रकार हैं:–

क) निबंध प्रतियोगिता के प्रथम चार पुरस्कार विजेता कर्मचारी		
श्री अतुल कुमार	प्रथम पुरस्कार	₹1500
श्रीमती दीपा पी.जी.	प्रथम पुरस्कार (हिंदीतर)	₹1500
श्रीमती करिश्मा खान	द्वितीय पुरस्कार	₹1300
श्री सत्ते सिंह	द्वितीय पुरस्कार	₹1300
ख) प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेता कर्मचारी		
श्री राकेश कुमार ओझा	प्रथम पुरस्कार	₹1500
श्री संजीव कुमार	द्वितीय पुरस्कार	₹1300
कु. मोनिका	तृतीय पुरस्कार	₹1200
ग) हिंदी टिप्पण एवं प्रारूपण प्रतियोगिता के प्रथम चार पुरस्कार विजेता कर्मचारी		
श्री संजय वर्मा	प्रथम पुरस्कार	₹1500
श्री बरूण भट्टाचार्जी	प्रथम पुरस्कार (हिंदीतर)	₹1500
श्रीमती सीमा शर्मा	द्वितीय पुरस्कार	₹1300
श्रीमती दीपा पी.जी.	द्वितीय पुरस्कार (हिंदीतर)	₹1300

समापन समारोह – संस्थान के तत्कालीन निदेशक डॉ. सुरजित मित्रा ने हिंदी सप्ताह के समापन समारोह पर आए सभी मेहमानों का स्वागत किया तथा प्रतियोगिताओं के सहभागी विजेताओं को नकद पुरस्कार व प्रमाण–पत्र प्रदान किए। हर वर्ष की भांति रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया।

कोलकाता परिसर पर हिंदी सप्ताह

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान कोलकाता परिसर में 14–21 सितम्बर 2016 के दौरान हिंदी सप्ताह मनाया गया। 14 सितम्बर को हिंदी दिवस के अवसर पर अध्यक्ष कोलकाता परिसर डॉ. के. रंगराजन की उपस्थिति में हिंदी सप्ताह का विधिवत प्रारंभ करते हुए तत्क्षणिक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार को ध्यान में रखते हुए हिंदी प्रतियोगिताओं की श्रृंखला में निबंध लेखन, प्रश्नोत्तरी व कविता पाठ का आयोजन किया गया। कोलकाता परिसर से इन सभी प्रतियोगिताओं में कर्मचारियों, अधिकारियों, संकाय सदस्यों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया और हिंदी सप्ताह कार्यक्रम को रोचक बनाया। 21 सितम्बर 2016 को हिंदी सप्ताह के समापन समारोह पर कोलकाता परिसर अध्यक्ष डॉ. के. रंगराजन ने अपने संबोधन में प्रशासनिक कार्य अधिकाधिक हिंदी में करने पर बल दिया तथा हिंदी प्रतियोगिताओं के सहभागियों को नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया। पुरस्कार विजेता कर्मचारी निम्न प्रकार हैं:–

क) तत्क्षणिक भाषण प्रतियोगिता के प्रथम तीन पुरस्कार विजेता कर्मचारी।		
श्री द्वैपायन आश	प्रथम पुरस्कार	₹1200
प्रो. रंजॉय भट्टाचार्या	द्वितीय पुरस्कार	₹1000
कु. संजुक्ता दास	तृतीय पुरस्कार	₹800
ख) निबंध प्रतियोगिता के प्रथम तीन पुरस्कार विजेता कर्मचारी।		
श्रीमती नीलम शाह	प्रथम पुरस्कार	₹1200
कु. रिद्धि चैटर्जी	द्वितीय पुरस्कार	₹1000
कु. संजुक्ता दास	तृतीय पुरस्कार	₹800
ग) प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेता कर्मचारी।		
श्रीमती नीलम शाह व श्री ब्रतीन सरकार	प्रथम पुरस्कार	₹1200
श्रीमती नबमिता दास व श्री अविजित दास	द्वितीय पुरस्कार	₹1000
श्री अमित कुमार घोषाल व श्री राम दास	तृतीय पुरस्कार	₹500
घ) कविता पाठ प्रतियोगिता के प्रथम तीन पुरस्कार विजेता कर्मचारी।		
श्रीमती नबमिता दास	प्रथम पुरस्कार	₹1200
श्री शिबू मोंदूल	द्वितीय पुरस्कार	₹1000
श्रीमती नीलम शाह	तृतीय पुरस्कार	₹800

समापन समारोह– 21 सितम्बर 2016 को कोलकाता परिसर अध्यक्ष डॉ. के. रंगराजन ने प्रतियोगिता विजेताओं को प्रोत्साहित करते हुए प्रमाण–पत्र व नकद पुरस्कार प्रदान किए तथा उन्होंने अपने भाषण में संस्थान के प्रशासनिक कार्यों में अधिकाधिक राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन पर बल दिया।

सेवानिवृत्ति पर संस्थान से विदाई

किसी भी परिवार के निर्माण व उन्नति में उस परिवार के सदस्यों की मुख्य भूमिका रहती है। आज आईआईएफटी अग्रणी बिजनेस स्कूलों में से एक है जिसका श्रेय इसके परिवार के पूर्व एवं वर्तमान सदस्यों अर्थात छात्र, संकाय सदस्य, अधिकारियों व कर्मचारियों को जाता है। वर्ष 2016–17 के दौरान इस परिवार के कुछ सदस्य अपना सेवाकाल पूरा करते हुए सेवानिवृत्त हुए हैं जिन्होंने अपने जीवन का अमूल्य समय देकर संस्थान के उत्थान में अपना योगदान दिया है। हम सभी इन सदस्यों के समृद्ध व मंगलमय जीवन की कामना करते हुए अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

सेवानिवृत्त संस्थान सदस्य

श्रीमती मरियम्मा मथाई
वरिष्ठ लिपिक
03.06.1996 – 31.08.2016

श्रीमती बी. पंक्ति
उप–पुस्तकालयाध्यक्षा
27.04.1979 – 30.11.2016

श्रीमती नीलम खुल्लड़
सहायक
07.06.1982 – 28.02.2017

श्रद्धांजलि

स्वर्गीय श्री बनवारी लाल जी
सेवानिवृत्त सहायक

अत्यंत दुख के साथ सूचित किया जाता है कि भारतीय विदेश व्यापार संस्थान के सेवानिवृत्त सदस्य श्री बनवारी लाल जी का दिनांक 09 दिसम्बर 2016 को आकस्मिक निधन हो गया। श्री बनवारी लाल जी के बिछुड़ने से हमारा समस्त आईआईएफटी परिवार बेहद आहत हुआ है। दुख की इस घड़ी में हम सब उनके परिवारजनों के साथ हैं। संस्थान के सदस्यों ने उनके शोकसंतप्त परिवार के प्रति अपनी संवेदनाएं व्यक्त की हैं।

हमारी ईश्वर से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें तथा उनके समस्त शोकाकुल परिवार जनों को यह असीम दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

– आईआईएफटी परिवार

भारत सरकार
गृह मंत्रालय

राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976 (यथा संशोधित, 1987)

सा.का.नि.1052 – राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19) की धारा 3 की उपधारा (4) के साथ पठित धारा 8 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केंद्रीय सरकार निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थातः–

1. केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में टिप्पणों का लिखा जाना –

(1) कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पण या कार्यवृत्त हिंदी या अंग्रेजी में लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करे।

(2) केंद्रीय सरकार का कोई भी कर्मचारी, जो हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखता है, हिंदी में किसी दस्तावेज के अंग्रेजी अनुवाद की मांग तभी कर सकता है, जब वह दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है, अन्यथा नहीं।

(3) यदि यह प्रश्न उठता है कि कोई विशिष्ट दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है या नहीं तो विभाग या कार्यालय का प्रधान उसका विनिश्चय करेगा।

(4) उपनियम (1) में किसी बात के होते हुए भी, केंद्रीय सरकार, आदेश द्वारा ऐसे अधिसूचित कार्यालयों को विनिर्दिष्ट कर सकती है जहां ऐसे कर्मचारियों द्वारा, जिन्हें हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है, टिप्पण, प्रारूपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएं, केवल हिंदी का प्रयोग किया जाएगा ।

2. हिंदी में प्रवीणता–यदि किसी कर्मचारी ने –

(क) मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिंदी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है; या

(ख) स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिंदी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया था; या

(ग) यदि वह इन नियमों के उपाबद्ध प्रारूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है, तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है।

3. हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान – (1)

(क) यदि किसी कर्मचारी ने –

(i) मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिंदी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है; या

(ii) केंद्रीय सरकार की हिंदी प्रशिक्षण योजना के अंतर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के संबंध में उस योजना के अंतर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या

(iii) केंद्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है ;

(ख) यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्रारूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है, तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

(1) यदि केंद्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों में से अस्सी प्रतिशत ने हिंदी का ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्यतया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।
(2) केंद्रीय सरकार या केंद्रीय सरकार द्वारा इस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अधिकारी यह अवधारित कर सकता है कि केंद्रीय सरकार के किसी कार्यालय के कर्मचारियों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है या नहीं।
(3) केंद्रीय सरकार के जिन कार्यालयों में कर्मचारियों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उन कार्यालयों के नाम

राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे:
परन्तु यदि केंद्रीय सरकार की राय है कि किसी अधिसूचित कार्यालय में काम करने वाले और हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों का प्रतिशत किसी तारीख से उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट प्रतिशत से कम हो गया है, तो वह राजपत्र में अधिसूचना द्वारा घोषित कर सकती है कि उक्त कार्यालय उस तारीख से अधिसूचित कार्यालय नहीं रह जाएगा ।

4. मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदि –

(1) केंद्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिंदी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।
(2) केंद्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्रारूप और शीर्षक हिंदी और अंग्रेजी में होंगे।
(3) केंद्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिंदी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी;
परन्तु यदि केंद्रीय सरकार ऐसा करना आवश्यक समझती है तो वह, साधारण या विशेष आदेश द्वारा, केंद्रीय सरकार के किसी कार्यालय को इस नियम के सभी या किन्हीं उपबन्धों से छूट दे सकती है।

राजभाषा नियम के मुख्य अंश

निम्नलिखित प्रयोजनों के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं का प्रयोग सुनिश्चित किया जाना चाहिए:

क) संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक व अन्य प्रतिवेदन तथा प्रेस विज्ञप्तियां।
ख) संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे जाने वाले प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदन और राजकीय कागजपत्र।
ग) संविदा, करार, अनुज्ञप्तियां, अनुज्ञापत्र, निविदा सूचना तथा निविदा प्रारूप।

सामान्य आदेश की परिभाषा में शामिल किए गए पत्र:

क) ऐसे सभी आदेश, निर्णय या अनुदेश जो विभागीय प्रयोग के लिए और स्थायी प्रकार के हों।
ख) सरकारी कर्मचारियों के समूह पर लागू होने वाले सभी आदेश, अनुदेश, अनुज्ञापत्र, पत्र ज्ञापन, नोटिस, आदि।
ग) विभागीय प्रयोग अथवा सरकारी कर्मचारियों के लिए जारी किए जाने वाले सभी परिपत्र।

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान

विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति सदस्य

1	श्री अजय कुमार भल्ला, निदेशक एवं अध्यक्ष, वि.रा.भा.का. समिति	अध्यक्ष
2	डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता, कुलसचिव	सदस्य
3	श्री गौरव गुलाटी, उप–कुलसचिव	सदस्य
4	डॉ. नितिन सेठ, सहआचार्य	सदस्य
5	श्री बिमल पंडा, प्रणाली प्रबंधक	सदस्य
6	डॉ. आर.पी. शर्मा, सहआचार्य – कोलकाता सेंटर	सदस्य
7	श्री संजय वर्मा, संयुक्त कॉरपोरेट नियोजन सलाहकार	सदस्य
8	श्री पीताम्बर बेहेरा, वरिष्ठ वित्त अधिकारी	सदस्य
9	श्री भुवन चन्द्र, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी	सदस्य
10	श्री देशराज, प्रशासनिक अधिकारी	सदस्य
11	श्रीमती दीपा पी.जी., वित्त अधिकारी	सदस्य
12	श्रीमती नलिनी मेशराम, प्रशासनिक अधिकारी	सदस्य
13	प्रतिनिधि, वाणिज्य मंत्रालय	सदस्य
14	प्रतिनिधि, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय	सदस्य
15	श्री रामसिंह मीना, सहायक पुस्तकालाध्यक्ष	सदस्य
16	श्री बी. प्रसन्नाकुमार, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
17	श्रीमती मीनाक्षी सक्सेना, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
18	श्रीमती कविता शर्मा, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
19	श्रीमती सुमीता मारवाह, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
20	श्री अनिल कुमार मीणा, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
21	श्रीमती ललिता गुप्ता, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
22	श्री प्रदीप कुमार खन्ना, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
23	श्री द्वैपायन आश, अनुभाग अधिकारी – कोलकाता सेंटर	सदस्य
24	श्री चिरंजी लाल, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
25	श्रीमती मोहनी मदान, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
26	श्री राजेन्द्र प्रसाद, हिंदी अधिकारी	सदस्य सचिव

झलकियाँ

2016-17

www.iift.edu

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान

(मानित विश्वविद्यालय)
बी–21, कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली–110016
फोन : 26965124, 26966563, 26965051

कोलकाता परिसर :
1583 मदुराहा, चौबघा रोड, वार्ड नंबर 108, बरो XII कोलकाता - 700 107
फोन : 033-24195700, 24195900, 24432453
वेबसाइट : www.iift.edu